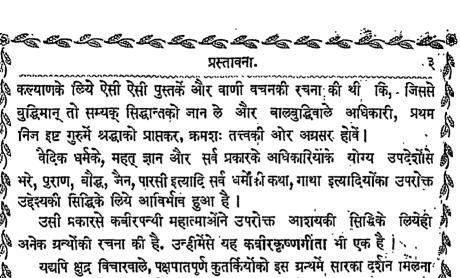
होनेपरभी, भिन्न अधिकारियोंके भेदसे, अलग अलग रूपमें देख पडता है. इसी कारणसे महात्मा आस पुरुषोंने, ऐसे उपदेशमय वचनोंको प्रगट किया है कि, जिससे सर्व श्रेणींके अधिकारियोंकी निज २ योग्यता और भावनाके अनुसार लाभ प्राप्त हो सके. इसी कारणसे एक ही वचन भिन्न २ टीकाकारों द्वारा भिन्न भिन्न विचारोंका बोधक जान पडता है यद्यपि इस भेदमें न तो मूल वक्ताओंकाहि दोष है, न टीकाकारोंकाही; किन्तु विचारके यथार्थ स्वरूपको न जाननेवाले अल्पज्ञ विचारहीन पुरुषोंको उसमें यथार्थकी झलक नहीं देख पडती. इसीसे, वे उसके यथार्थ लामसे वंचित रहकर अपना अमूल्य जीवन भिथ्या निन्दा और कुतकेमें नाश कर देते है।

इस बातके जाननेवाले प्रत्येक धर्म और पंथोंके विचारवानोंको इसका पूर्ण निश्चय हैं धर्मा इसीलिये उन्होंने निज्ञ निज इष्ट गुरुऑके बताये मार्गकी वृद्धि तथा जीवोंके हैं कि स्व



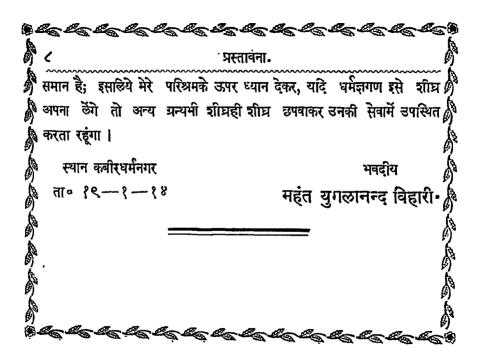
कठिनही—नहीं असम्भवभी—है, तथापि जो सत्यके खोजी हैं, निज आत्मांके कंल्याण-की जिनको तीन्नं इच्छा है, जो सार्ग्राही और पक्षपातशून्य हैं, उन्हें इस ग्रन्थके प्रत्येक शर्ट्यों, वाक्यों चौपाइयोंमें यथार्थतत्त्वका दर्शन हुए विना कदापि नहीं रहेगा। इस प्रन्थकी एकिह प्रति मेरे पास रहनेसे मुझे स्वतंत्रतासे इसकी शुद्धि अशुद्धि- पर विचार करनेका अवकाश न मिलनेसे, निज नियमानुसार इस आवृत्तिमें हस्त- विशिक्त प्रतिको ज्योंका त्यों छपवा दिया है. यदि इसकी और प्रतियाँ मिल जायं- गी अथवा जो कोई इस प्रन्थकी हस्त लिखित प्रति मेरे पास भेज देंगे, दूसरी आवृत्तिमें उन सब प्रन्थोंद्वारा इसको शुद्ध करके छपवानेका प्रवन्ध किया जायगा-

साथही उन प्रन्थ भेजनेवालोंका नाम प्रस्तावनामें दे दिया जायगा और प्रन्थ छप जा-नेपर छपी हुई एकप्रतिभी उन्हें दी जायगी. यह प्रन्थ जिस प्रतिसे छापा गया है, वह प्रति छत्तीसगढके एक पनिका महंत दरवनदासकी दी हुई प्रतिके उपरसे लिखी गयी थी।

कितने छोगोंको, जिन्हें यह ज्ञान है कि—शुभस्थान कबीरधर्मनगरमेंभी छापाखा- 🎊 ना खुल चुका है और वहांभी ग्रन्थ छपते हैं, तब निजके प्रेसको छोडकर वम्बईमें यह ग्रन्थ क्यों छपवाया गया है, ऐसे लोगोंको जानना चाहिये कि—शुभस्थान "कवीरघर्म नगर " दिहातमें होनेके कारण वहां एक तो प्रेसके लिये उपयुक्त कम्पोजिटर, कागज, स्याही इत्यादि कुल वस्तुऑपर अन्त्यत खर्च पडता है. दूसरे हैण्ड प्रेस होनेके कारण उस प्रेससे कामभी वहुत कम निकलता है, इस हेतु प्रन्थोंका शीघ्र शीघ्र यहांके प्रेस (कवीरधर्मप्रकाश) से छपना दुस्तर समझकर, और लोगोंकी, प्रन्थोंके लिये मांग अधिक वढ जानेके कारण सिद्धि श्री १०८ पं० श्री उप्रनामसाहव प्रधान आवार्य, कवीरपन्यकी आज्ञासे, पुनः मुझे प्रन्थोंके छपवानेका प्रवन्ध वर्म्बईमेंही कराना पडा है ।

यह ग्रन्थ पण्डित व्ही० के० छोंढे एण्ड कम्पनीके "भारतिहतैषी पुस्तकालय " हारा प्रकाशित हुआ है, और "कबीरमन्शूर," "ब्रह्मनिरूपणस्टीक," "स्टी-के क हंसमुक्तावालि" आदि अनेक बड़े छोटे ग्रंन्य, तथा प्रथमसे मेरे नामसे छपे और

आवर्यकता जान पडती है, तो प्राप्त प्रतिके अनुसार ज्योंकी त्यों उस प्रन्थकों 🔊 छपवा देता हूं. इसालिये हस्तालिखित प्रतियोंके समान यदि मेरे छपाये हुए प्रथम 🖓 आवृत्तिके किसी ग्रन्थमें अशुद्धियां जान पडे अथवा किसीकी प्रातिके साथ उसका 🔉 मिलान न हो तो, क्रोध न कर उस अशुद्धिकी सूचना और हस्तलिखित प्रति भेज देवें, जिससे आगेकी आवृत्तियोंमें शुद्ध करनेमें सहायता मिले । इस '' कवीरकुष्णगीता '' की यद्यपि एकही प्रति मेरे पास थी जिससे यह छपवायी गयी है, तथापि यह प्रति छत्तीसगढकी अनेक प्रतियोंसे मिली हुई है और 🕅 छत्तीसगढमें इसका इतना मान और इसकी इतनी चाहना है कि-छोगोंके बारम्बार 🕅 🔊 अनुरोघ करनेसे मुझे इसके शीघ्रही छपवानेकी आवश्यकता हुई है। इसकी छपाई, 🔊 🏿 बंधाईकी सुन्दता तथा सफाईके विषयमें कुछ कहना हाथ कंकनको आरसी दिखानेके



भे अनुक्रमणिका. श

्री नारद-कृष्णसंवाद-कवीरके भक्तकी महिमा वर्णन १६ यमदूतका कृष्णसे कवीरके भक्तके विषयमें वार्तालाप १८ कवीरकी महिमा कृष्ण मुख २३ (सत्यलोक, जीव, निरञ्जन आदिका वर्णन) काल्लीला वर्णन ३२ काल्से वचनेका मार्ग ३३ सुपंथ कुपंथका वर्णन ७३	P D	अनुक्रमणिका. *********						
independent in the factor of t	in a a a a a a a a a a a a a a a a a a a	धर्मराजकी समा १ सत्थनामकी महिमा ७ राजा छत्रजीतकी कथा ८ नारद-कृष्णस्वाद-कवीरके मक्तकी महिमा वर्णन १६ यमदूतका कृष्णसे कवीरके मक्तके विषयमें वार्तालाप १८ कवीरकी महिमा कृष्ण मुख २३ (सत्यलोक, जीव, निरञ्जन आदिका वर्णन) काटलीला वर्णन ३२ कालसे वचनेका मार्ग ३३	निरञ्जन और विष्णुका संवाद ३५ चौरासीका वर्णन—विष्णु मुख १४१ शुकदेव मुनिका अपने अनेक ज- नमोंका वृत्तान्त कहना ४९ राजा निर्मोहकी कथा ५९ मुक्की महिमा ६४ सचे गुरुकी पहिचान ६५ नारदके गरु करने और चौरासी भोगसे छुटनेकी कथा ६५ सवीरकी महिमा ७२ सुपंथ कुपंथका वर्णन					

विषय. पृष्ठ. कलियुगमें तरनेका मार्ग--सगुण-निर्गुण भक्तिका वर्णन सहुर और गुरुके लक्षण और चिन्ह११३ सकलदेववचन कुवेरका गुरु उपदेश लेना क्रष्णका दीक्षा लेनेके लिये प्रार्थ-ना करना ... १२१ मनका वर्णन--मनकी ४० प्रकृति.१२५ गुरु और गुरुवाका वर्णन चौरासीका वर्णन ... मीन मक्षककी गतिका वर्णन ... १३२

अनुक्रमाणिका.

विषय. जीव बधनेका पाप · · · क्वीरसाहबसे दर्शन देनेके छिये सबदेवताओंका प्रार्थना करना.१३९ कपिलमुनिका पान परवाना लेना १४१ रावणका वृत्तान्त ... कालियुगके धम्भेका वर्णन पतिवता और व्यभिचारिणीके ल-क्षण और कर्तव्य ... १४५ राजा हगपालके पुत्रोंको कथा (पतिवता और व्यभिचारीके दृष्टान्त)

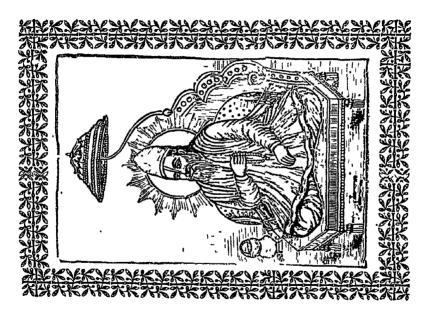
विषय. वृष्ठ. कथाका सार दृष्टान्तका अध्यातिम-क अर्थ ... १६७ निर्भुण मक्तिकी महिमा अर्जन और कृष्ण संवाद ... १६९ याधिष्ठर और कबीर संवाद ... १७० 🔉 युधिष्ठिरका आरती चौका करना. १७२ 🎉 कबीर साहबका देवतों तथा युधिष्ठिर-को परवाना देकर लोकको जाना. १७६ ानेरञ्जन और त्रिदेवका सम्बाद-शिवादिदेवका कोप करना... १७७ 🖓

सम्वाद

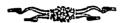
विषय. वृष्ठ. कृष्ण गरुड सम्बाद शुकदेवकबीरसम्बाद ... २४४ कृष्ण कवीर सम्वाद ... ২১৫ कबीरका अपने पन्थकी बात क्रष्णसे कहनः... अवतारोंमें सर्वश्रेष्ठ औतारका नाम २७३ 🦓 तीनों गुण तथा त्रिगुणात्मक भक्तिका वर्णन... व्यास और कृष्ण सम्वाद ... २८० साधुके लक्षण रमता और वैठाका

विषय. पृष्ठ• ज्ञान दशा और मनकी दशाका वर्णन अर्थात् गुरुमुखी और मनमुखीका वर्णन कलियुगमें कबीर साहब क्यों प्र-कट हुए ? ... २०३ 🎗 सब देवतोंका कबीरसाहबका शिष्य हहमी आदि देवियोंके गुरुमुख होनेका वृत्तान्त सत्यलोकके हंसोंके सपका वर्णन--३२७ ब्रह्मा और कबीर सम्बाद, लोक द्वीपका वर्णन ...

विषय. gg. महादेव और कबीर सम्वाद, योग-का वर्णन योनियोंके तत्त्वोंका वर्णन ... ३५० 🛭 मुक्तिका मार्ग, त्रिदेव और कबीर सम्बद त्रिगुणका प्रभाववर्णन सत्य माक्त तथा योग भोगका वर्णन... ... ३५९ विराद्का स्वरूप कथन चौदह यमका वर्णन समाप्ति ...



सत्यनाम.



सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणा-मय, कबीर, सुरितयोगसंतायन, धनीधम्भेदास, चूरामणिनाम, सुदर्शननाम, कुलपितनाम, प्रमोधगुरुबालापीर, कवलनाम, अमोलनाम, सुरितसनेहीनाम, हक्कनाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, उग्रनामसाहब की दया वंश बयालीस की दया।

とないい。



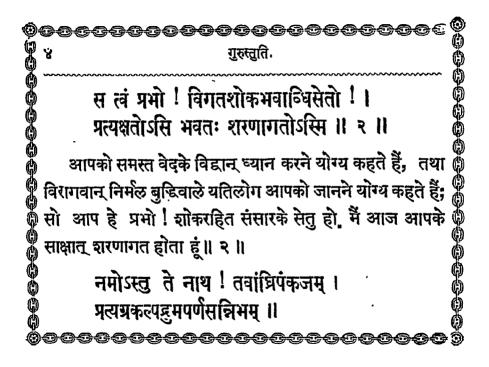


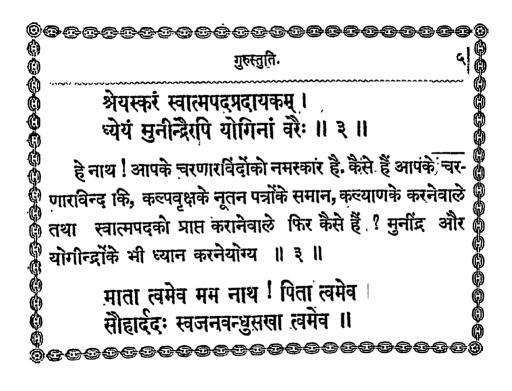
श्लोकाः .

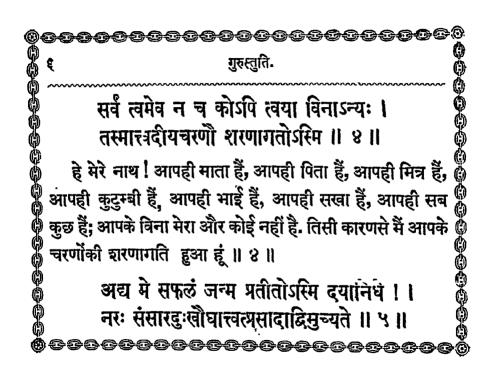
हे ! लोकेश दयानिधे! त्रिभुवने देवोऽस्ति कस्त्वत्परः । ब्रह्माविष्णुमहेश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानः सदा ॥

. \$\displays = \displays = \di

गुरुस्तुति. संसाराख्यदवानलेन विकलः संतप्यमानोऽसम्यहम् । त्वत्पादौ शरणं गतोऽचदिवसे भोः सद्भरो ! पाहि माम् ॥१॥ अर्थ-हे विश्वपति द्यासागर! त्रिलोकमें आपसे कौन देवता श्रेष्ठ है ? अर्थात् कोई नहीं. ब्रह्मा, विष्णु, महादेव इत्यादि देवता-ओंके समूहकरके आप सदाकाल सेवन करने योग्य हो। संसाररूपी दावाझिसे व्याकुल हुआ तपायमान मैं आज आपकी शरणागतिको प्राप्त होता हूं सो हे सद्गुरु!मेरी रक्षा कीजिये ॥ १॥ ध्येयं सदा निखिलवेदविदो वदन्ति । न्नेयं च शुद्धमतयो यतयो विरक्ताः ॥







हे द्यानिधे ! मुझे प्रतीत होता है कि—आज मेरा जन्म सफल हुआ है. क्योंकि, मनुष्य दुःखके समूहसे आपहीकी कृपासे मुक्त होते हैं ॥ ५॥

। श्लोकपंचकमाहातम्य ।

यः श्लोकपञ्चकिमदं पठते समक्तया । शिष्यो जहाति कुगतिं परितः सदा तम् ॥ संपद्यते विविधमंगलहर्षलामम् । सर्वार्थिसिद्धिरिप मोक्षप्ररोः प्रसादात् ॥ ६॥



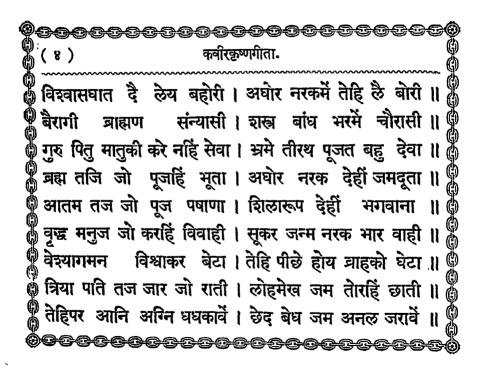
॥ अथ कबीरकृष्णगीताप्रारम्भः॥

उक्ति विष्णुव्यासवाणी—चौपाई ।

00000000000000 सुमिरो सत्तनाम गुरु नामा । साधुस्वरूप गुरू बिसरामा ॥ वक्ता विष्णु व्यास श्रुति वाणी । गुरुप्रताप सकलो गम जानी ॥ ब्रह्मा विष्णु महेरा देवादी । तैंतिस कोट देव संवादी ॥

क्वीरकृष्णगीता. नारद इंद्रादि अहीशा । सरस्वती गणपति जगदीशा ॥ बैठे सबै विष्णु मुख हेरा। पापपुण्यका करहिं निबेरा॥ चित्रगुप्त तहां कागज लिखहीं । जेहिपर जेते वाकी अहहीं ॥ कितहूं निरति भजन गुरुनामा। कितहूं तो माया मनकामा॥ पाप पुण्य बंधन जमफांसी। नाम विना भरमें चौरासी॥ पकड़े जीव चोरकी नाईं। मारत मुगद्र रोर कराई॥ सासत खाय जीव अपराघी । यम लावे साकट कहँ बांधी ॥ करे पुकार सुने नहिं कोई। गुरुविन साकट परले होई॥ 👰 जीवघात आमिष भख जेते । अभिकुंडमें झरकें

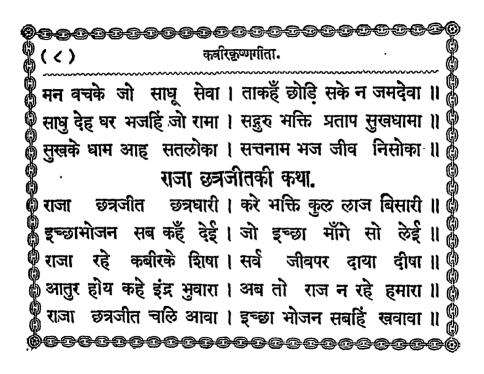
कशीरक्रणगीता. अमि जारके नरक बुड़ावे। नरकभर सिर निकसन आवे॥ जब जिव सीस काढ़ दम लेहीं । तबहीं जम सिर मुगदर देहीं ॥ लोहा सखा सिखेधके गाड़े। पिबहिं नरक जिव परवश पाड़े॥ त्रिगुण भक्त जिव तजे न काला । त्रिगुणभक्त काल भगजाला ॥ परद्रव्य तलासी । तेहिते डारि देंय गरव फांसी ॥ ओझा डाइन चोर वटपारा। परे नरक जो खेले शिकारा॥ साधु देख जिन बदन छिपावा । जम सिर मुगदर ताहि ढहावा ॥ मिथ्या वाद चुगल हंकारी। मित्र द्रोह लै नरकहिं डारी॥ ऋणबंधन निज आतमघाती । बंधुघात जम तोरैं छाती ॥



कवीरकृष्णगीता. मात पिता तज त्रिय प्रतिपालें । ताहि काल आवामें डालें ॥ बापको कुल तज जो.सासुर वसें। ताके सिर मसान चढ़ हसें ॥ बहिनी गांव वसे जो प्राणी । पितुपछ त्याग संग्रह अधखानी ॥ अजिया सुत जिन बंधो रे भाई। अजिया फिर तेहि खाय चवाई॥ दिन दस भक्त करें अज्ञानी । बहुर मलेक्ष दशा लपटानी ॥ ताहि दिये भिष्टाके कुंडा। उड़ बुड़के अब काटें मुंडा॥ निकसत सिर जम मार गजारा । छोहदंत कृम क़रहिं अहारा ॥ देह पराया भषें जो मासू। भषहीं कृम दंतन घट तासू॥ बरबस व्याह छोर धन छेहीं। ताहि सेज कांटाको देहीं॥

कवीरकृष्णगीता. जिन भिखारिको भीख न दीन्हा । ताकहँ भीख भँगाय छीन्हा ॥ मांगत भीख देय जो गारी । कहाह ते भीख न देय अनारी ॥ अभ्यागतको नेवति जेवावे । तेहिते पाय चला अघ जावे ॥ पारिह वाट टाट दें मारी । मार शिकार कोरटिया अघ डारी ॥ करे मजूर मजूरी भूखा। पेट भरे लघु जेठके सूखा॥ जो हरे मज़्रनकेर मज़्री। ताकहँ काल देत हैं मूरी गऊ बधन जो द्विज बध कीन्हा । विष्णुद्रोह खान अघ दीन्हा ॥ दुरबल सबल सबल नर चांपै । जम बेधे तब थरथर कांपै ॥ जौलो पोखर पार बनावै । जड आगे हत जीव चढावे ॥

कवीरक्रणगीता. देव नाम ले जीव हतावे। भोथे सस्त्रसे गला रितावे॥ ब्राह्मण करे शुद्रसो भोगा । परे नरक व्यापे बहु सोगा ॥ कन्या बेंच बेंच करे व्याजा । औ जो महँग मनावे अनाजा ॥ इन सबको दीन्हा अघ खानी । औं जो प्यासे देय न पानी ॥ राजा होय अन्याई होई। परजहिं दुख दे अघ भुगते सोई॥ दोहा--जन्म २ का लेखा, वासिल बाकी होय। पापी दुख सिर बूडही, प्रनिहि पहुँचे सोय ॥ जाहि जीव जत पुन्नके दासा । सो वैकुंठ पुन्न भर बासा ॥ पुन्न घटा फिर पर चौरासी । सत्तनाम बिन कटे न फांसी ॥



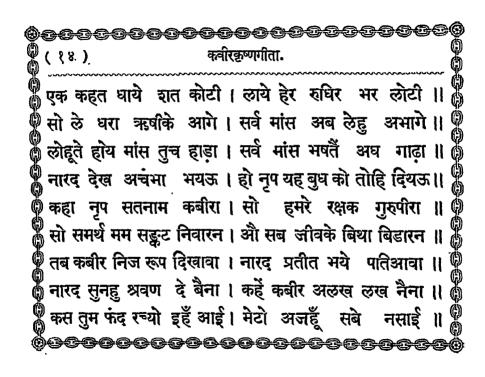
क्वीरकृष्णगीता. कृष्ण इंद्रसन आई। कबीर भजेते प्राण बसाई॥ । इंद्रजवाच । कहें इंद्र अव केहिपर जाऊं। हम आये राखहु मम भाऊ॥ । कृष्ण उवाच । जो अब तुव आवनमें राखो । निर्गुण मक्त द्रोह किम भाषो ॥ जो हम निर्गुण भक्त दुखावें । निराकार मोहि नरक डुबावे ॥ और सबनपर मैं सरदारा । कबीरके संतसे जम सब हारा ॥ कबीरको मनुष जानो मत कोई । कारण करण कबीर है सोई ॥ निराकार निरंजन देवा। तिन कह सत्तकबीरको भेवा॥

कवीरकृष्णगीता. पिता निरंजन हम सो कहेऊ । जब कबीर तब कोइ नहिं रहेऊ ॥ कहें निरंजन राज जो मोरा । सो दीन्ह कबीर वंदीछोरा ॥ कबीरके दिये करें हम राजू । कबीर सेवक मम सिरताजू ॥ और सबे हैं जमके चेरा। भर्जे कवीर तेहि सतपुर डेरा॥ कहें कृष्ण जानहु सो करहू । कबीर वालकके पाछ न परहू ॥ कृष्णवचन लख सबहिं उदासा । कहें अजहुँ चल देखहु दासा ॥ ब्रह्मा रुद्र भारद सब देवा । रज तम संग जीव सबे चलेवा ॥ इंद्र आद नारद सो भाषी। चलो जाय देखहुं मैं आंखी॥ 👸 सबे अघर घर प्रगटे गोपा । नारद घार नृप गये कोपा ॥

कबारकृष्णगीता. सात दिवस निंशिके हम भूखे । इच्छाभोजन बिन हम रूखे ॥ जाय सेवटिया नृप सो कहई । क्षुधावंत द्वारे नृप अहई ॥ राजा कहा पूछह तुम जाई। इच्छा भोजन कौन गोसांई॥ जाय सेवटिया ऋषिसो पुछा । भोजन कौन आय तुव इच्छा ॥ तब नारद कहे तोहि कह कहहीं। कहीं ताहि राजा जो अहई।। जाय सेवटिया नृपसो भाषी। द्विज नृपसो कहवे चित राखी॥ राजा आय कीन्ह परणामा । कछु ऋषि कहु इच्छा भच्छकामा॥ नारद कहें इच्छा चित मोरा । सर्व मांस खाऊं भर थोरा ॥ सर्व मांस सुन राजा डरेऊ । सर्व जीव हत को डर भरेऊ ॥

(17) क्वीरकृणगीता. नृप ऋषिकहँ बैठक दीन्हा । आप गमन भवन निज कीन्हा ॥ मंदिर जाय ध्यान गुरु कीन्हा । तुरत कबीर दरश नृप दीन्हा ॥ राजा चरण पखार सो पान कराये। नारद्मुनिके कथा सुनाये॥ सर्व मांस चाहे अन्याई । सहुरु आप दया उर लाई ॥ । कवीर वचन । कहें कबीर सोच कछु नाहीं । देहु भीन ले तिनके पाहीं ॥ सर्व मांस है भीनशरीरा। गउ सूकर नर सकल समीरा ॥ भिष्टा पटार अौर खरवारा । भषे मीन सो मृतक झारा ॥ मीन कीरा सो तुरत मगाये । शूद्र हाथ दे राय पठाये ॥

क्वीरकृष्णगीता. नारद देख कोप होय ऊठे । लेहिं न मीन जाय तब रूठे ॥ जाय दास नृप सो अर्थाई । वाह्मण रुठा जाय गोसांई ॥ उठे कबीर राय तेहि बारा। आय ठाढ़ में सिंह दुवारा॥ आपन रूप छिपाय कबीरा । साधुरूप होय मुनिसो भीरा ॥ कहें साधु सुन जमके अंसा । सर्व मांस तैं भष निहसंसा ॥ नारद कहें जीवत जिव मारी । सबकर मांस मैं भषत अहारी ॥ कहें कबीर राजासों बाणी। कलिके विप्र जांय अघखानी।। अब नृप मानुष बहुत बोलावहु । तिनते सब तर रुधिर मंगावहु ॥ 🖁 जीवन मरे रुधिर सब चाही । सप सरीय अब सबके लाही ॥



क्वीरक्रणगीता. डोप तोहे नरक छै नारद । राख सके को गनपत शारद ॥ नारद बेग नृपके पग धारे। राजा बक्सहु चूक तब राजा कबीर मुख जोवा । कहें कबीर बक्सहु द्विज रोवा ॥ राजा कहे वक्सा हम तोही । तुमहु दया कर बक्सहू मोही ॥ तब नारद बहु स्तुति कीन्हा। सबे रुधिर सरवरमह दीन्हा॥ जेहि २ तनके श्रोनित गहेऊ । भयउ सो झकतन मीन होय रहेऊ॥ स्ताति करत नारद चाले गयऊ । अति लिज्जित होय हरिपद गहेऊ॥ हरिसन्मुख नारद सिर नाये। पूछा हरि ऋषि कहँते आये॥

(१६) कवीरक्रणगीता. । नारद उवाच । कहें ऋषि नारद सुन जदुराई। विन तुव आज्ञा गयउ गोसांई ॥ इंद्रकाज श्रह्मा शिव भेजा । भयऊं पतित अब यह तन तेजा ॥ छत्रजीतके गुरू कबीरा । रोसेड तिन पुनि नृपत गॅभीरा ॥ भसम होत चाहूं वहां आजू । होत भला तब इंद्रके काजू ॥ सत कबीर मोहि कोप सुनावा । मम सेवक किमि आन दुखावा ॥ अमित कला कलु वराणि न जाई। कही न सके अज हारी देव नसाई।। ो कृष्ण उवाच । कहें कृष्ण तुम हमरी निहं माना । मानसके तुम सद्गुरु

कवीरकृष्णगीता. सतकवीर करता अविनाशी । निराकारके मूल कबीर सुखराशी ।। राजा रहें कबीरके दासा। तिनसे हम आज्ञा प्रगासा।। कबीरके संतसे काल डेराना । जरे गात तब पेल पराना ॥ क्वीरके संत रहे सतलोका । इंद्रहि कौन भार भौ सोका ॥ जब इंद्र तब इंद्र कह पूजहु । इंद्र परिह अघ दूसर भूजहु ॥ वैकुंठ विलासा । यह सब ऋतिम ठौर बिनासा ॥ 🖟 सत्तलोक अम्मरपुर देशा । तहां रहे सतकबीर सुखभेषा ॥ 👸 सब्हिं जीव सतकबीरके आहीं। बिन परचे कोइ चीन्हत नाहीं॥ 🚇 भें चीन्हा मोहि पिता चिन्हावा । निराकार मोहि भेद बतावा ॥

() () कवीरकृष्णगीता. तुम सब कहँ हम भाष सुनाई । पेल वचन तुम गये गोसांई ॥ कबीरके त्रास निरंजन कंपे। हम तेहि दास गने निज आपे॥ धर्मराय चौदह तेहि हारे। जो सतनाम कबीर पुकारे॥ सुन नारद सीस तर कीन्हा । कबीरके स्तुति करवे छीन्हा ॥ पुनि एक जम दौरा तहँ आवा । विष्णुहिं सीस नाय गोहरावा ॥ जीव एक बरबस चिल जाई । सत्त कबीर कहें इतराई ॥ तेहि देखत मम बल भो थोरा । जैसे साहु देखत हो चोरा ॥ तुम हरि सब ईश गोसांई। ताते आप कहीं गोहराई॥ 🖁 कहा़ विष्णु तुम घर चिल जाहू । जो कबीर बे मुख तेहि खाहू ॥

कबीरकृष्णगीता. हम सब हैं कबीरके दासा। निराकारकों जाकी सतनाम कबीरा। दास कबीरके सो मतधीरा॥ कहें कृष्ण सुन जम जिवजाला । तजहु जाहि तेहि तुलसीमाला ॥ तुलसीमाला तिलक लिलारा। कहें कबीर जिन राम पुकारा॥ तासु निकट जिन जायहु भाई । साकट बांध नरक देवनाई ॥ भये शिष्य गुरु शब्द न माने । गुरुसाधनकी भक्ति न ठाने ॥ साकटके तेहि लागे चांपी। साकट तो भये कालसमीपी॥ बिन गुरु शरणको साकट किहये । बिन गुरु शरण वश अघ लहिये।।

कवीरकृष्णगीता. दोहा-सत्त कबीरके सेवक, तेहि मत वोलह वात राम गहे तेहि छांड़हु, राम कवीर एक साथ ॥ राम भजे जो तजे दुचिताई। एक आस गुरु सब बिसराई॥ पूजा भ्रम बिसारे । जीवदया गुरु साध सुधारे ॥ आतम सतकी चाल राम जप लाई । आगे ताहि कबीरपंथ मिलाई ॥ राम वैकुंठ कबीर सतलोका । कबीर शरण मिटे जिव घोखा ॥ सुनके दूत फिर सुन्य समाये । जोतसरूपी कहँ गोहराये ॥ कहे दूत आतुर कह तोरा । जिव सब जाय कबीरकी जोरा।। ना जानो कहँ जाय समाई। जम बलहीन साधके ठाई॥

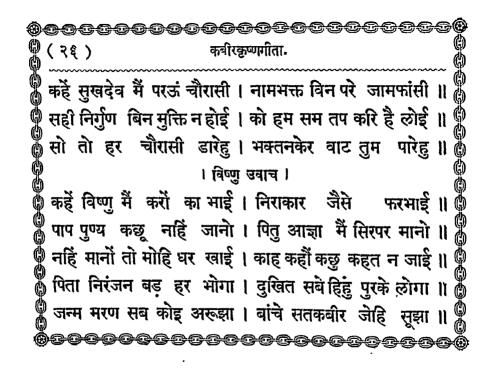
कवीरक्रणगीता. तब हम कहा विष्णु सो जाई । विष्णु कहा घर जाहू रेभाई ॥ जब हर जीवके किये न खोजा । तब हम आये तुम्हारे सोजा ॥ को कबीर कहवाते आये। जीवहिं लेकर कहां सिघाये॥ सुना तेसोई । कबीरके दास छुवह जिन कोई।। जिनके दिये राज हम करहीं । सो कबीर जिवलोक संचरही ॥ धर्मरायसे हम कहि राखा। औषुन विष्णुसे महिमा भाषा। 🖣 विष्णु तो तोहि कहा समुझाई । धर्मराय तोहि नाहिं लखाई॥ अत्र सुन राखहु सब जमदूता । कबीरके दास छूवे अजग्ता ॥ कबहुं तोर बलहानी । हम हारे तोहि कौन बलानी ॥

कवीरकृष्णगीता. 23) सुनके दत विष्णु ढिग आये । विष्णुहिं कहा जमन सिर नाये ॥ अहो विष्णु देवनके ईशा। तुमहि कहा सो नैन न दीसा ॥ हम जो गये निरंजन दरबारा । शून्य अंधियार भय कीन्ह पुकारा। उठी अवाज सुन्यते जबहिं । कबीरके दास छुयउ मत कबहीं ॥ दोहा-कहा निरंजन राय अस, संत द्रोह जम नास । राम कवरिहिं छोड़के, औरिहं घालो फांस ॥ रामके भक्तन हरगण लावहिं। कबीरके दास नाम बल धावहिं॥ रामके दास पूछे कहू केह बाता । जन कबीर सद्भुर रंगराता ॥ चढ़े विमान चले सब जाहीं । जागृत सतकबीर कहाहीं

क्वीरकृष्णगीता. त्रिगुण जीव औ भूत पिशाची । पाप पुण्य आश्रित जमफांसी ॥ सतकबीरके जो हैं दासा । जेहि नहिं पापं पुण्यके आसा ।। एकहि नाम कबीरिहं गाविहें। गुरूसाधुके सेवा लाविहें॥ एकाहि दूत गये जम धामा । साधु संत हिषत लख रामा ॥ से देव औ सुखदेव व्यासा। को कबीर जेहि डर जमत्रासा।। कहें कृष्ण कबीरके लीला । सतमाम कबीर गहीला ॥ किबीर हैं अमरलोकके वासी । सो नीहें देह धरे चौरासी ॥ अमरलोक तिहु लोकते न्यारा । जहँते यहां आये निरंकारा ॥ सो घर आदु सबनके मूला । सत्तलोक अमर अस्थूला ॥

कबीरक्रणगीता. ે ૨૪) जीव अमर सतलोक्ते आये । पूंजी सो अलस निरंजन पाये ॥ दोहा-अादु पिता सो सब, सो हैं सत्तकवीर । कीतम पिता सो बहुत, भये निरंजन नीर शरीर ।। सत्तकबीरके अंस सोहंगा । आय रहे सो सबके संगा ॥ सोहंग नाम ब्रह्मके दल । पांच पचीस त्रिगुण अहंकल ॥ तत ओंकार सोहंगम जीऊ । सत्तकबीर सब जिवके पीऊ ॥ जीव न चीन्हें सत्तकबीरा । पांच तीनके घरे शरीरा अमर लोक हिरंमर काया । तहं सब हंसा केल कराया ॥ 🖁 हम सब कहा सेवक बड्मागी। जो कबीरके शरण नलागी॥

कवीरकप्णगीता. अव निज इच्छा भये है भोरा। सतगुरु करों कबीर बंदीछोरा ॥ केहि कारण हमहू दुख पावा । निरंजन मोहि भग जठर रमावा ॥ जन्म मरण औ गर्भ बसेश । कोटिन बार घरों तन फेरा ॥ जब कबीर को लेउं प्रवाना । तब मैं कारहीं लोक प्याना ॥ जन्म मरण तब छूटे भाई । सतकबीर जब हृदय समाई ॥ । व्यास सुखदेव गरुड उवाच । कहें ज्यास सुखदेव गरूड़ आदी । हम सब तुम्हरे सेवक आदी ॥ आप तार हमहूं कहँ तारो । जन्म मरण हर मोर निरवारे ॥ तुम थोरे घर दस चौवीसा । इतन दुख हर धूनहु सीसा (।



कशरकणगीता. सतकबीर जेहि होय सहाई। ताके वारन बंके रामचंद्र में रहऊं। पितु आज्ञा ते जन्म जग लियऊं॥ धन मम तिरीता निरंजन काला । सबहिं खाय सुतकरे विहाला ॥ कर व्याह बन पठइन मोही । पुन बन बिपत दीन्ह बहु द्रोही ॥ कोटिन जीवन हतन करावा । सब फल दे मोहि नरक भोगावा॥ लोहड रूप घर मोहिं चेताऊं। केते रामचंद्र लख तव रघुनाथ देह बन तेजा। देह गुप्त घरनीमह भेजा॥ हैगौ दुतन निजपतिधामा । भक्ष कीन्ह तब राखेउ नामा ॥ कृष्ण नाम घर कथेठं बामा । देह घरे व्यापे अघ कामा ॥

कवीरक्रणगीता. राजा मनु तब कीन्ह बहुता। करता होहु हमारे तब मोहिं कहा निरंजन राई । दशरथके घर जन्मो जाई ॥ तब जन्मेउं कौसल्या पोटा । गरजत कहायेउं दशरथ बेटा ॥ तहँ बहु दुख सुख चिंता परऊ । अब ऋष्ण देउ मजुरी दियऊ ॥ द्यापर केलि करह तुम भाई । देवकी वसुदेव घर जोई ॥ जो मनु भये सो दशरथ राजा । जो दशरथ सो नंद बिर्राजा ॥ केकई देवकीके घर जाये। प्रेम भक्तवसा नंद घर आये।। नंदके घर कृष्ण अनंदा। पै कचा सुख तन यह गंदा॥ , कछु दिन सुख बहुते दुख दीन्हा । लडत बधत जिव घात बहु कीन्हा

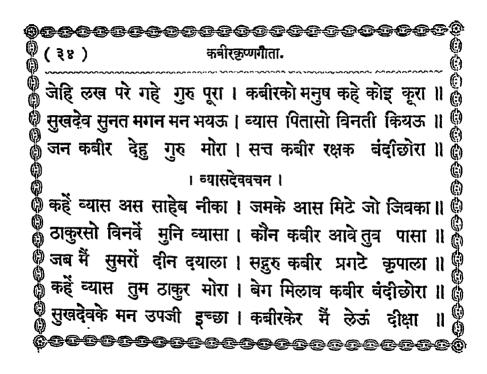
कवीरकृष्णगीता. पुरे यदुवंश मरात्रा । गोपी सब मार जाट लुटावा ॥ तब मोहि व्याधा हांथ मरावा । बहुर बौध रूप फरमावा ॥ कर ताको आज्ञा सि^र मानी | बौधरूप जग धरायउं आनी॥ जैसे गऊ हत्या काहु लागे । रहै मस्ट तीरथ व्रत भागे ॥ कहिनकी मारेहु व्राह्मन भांटा । और अनेक जीव तुम काटा ॥ परनारीसे तुम रति कीन्हा। कहा जताय जात जू लीन्हा॥ आप कहायऊ सिरजनहारा । ताते विष्णु चौविस तनधारा ॥ जब हत्या छूटे हरि केरा । निहकलंकऔतार साधु बसचेरा॥ वारो जुग आयेउं कइ बारा। जुग जुग २ आयधरैव औतारा॥

कवीरकप्णगीता. मैं तो बोइल देव पितु पांही । मैं कस न बोइल जीवपै चाही ॥ बोइल न छुटे कोट उपाई । कोट अनेक जिन सांसत पाई ॥ जो मैं करों सो पिताके आज्ञा । तापर श्रेष्ठ सो सहुरुसंगा ।। संग कंपे काला । सद्भुरु सत्तकबीर द्याला ॥ कर्म भोग फल सब जिव पावे । क्यौं नहिं सुसकी राह चलावे ॥ वेद शास्त्र सब तनकी वाणी। करनै चले वाट पहिचानी।। चित सोई जो पर उकारी। नार सोई पित्र दरश अघारी ॥ सोई शिष्य गुरु शब्द जो माने । सोई पुत्र पितु सेवा ठाने ॥ सोई बहु जो सास सहेली। खसम सहेली सो बेलि चमेली।।

क्वीरक्रणगीता. मातसे दुतिया वाणी । तम फल बीज जो बोवे प्राणी ॥ औरहिं देय जो भोजन करहीं। सो प्राणी वैकुंठे तरहीं॥ भुखे अञ्च प्यासेको पानी । नागे वस्तर देय सुखखानी ॥ सुखी सोई जो पर तन पोषे । आनिह वंचित पावे सोइ मोषे ॥ कोट जग्य पुण्य फल पावे । कसाई सो जो गाय छोडावे ॥ काहु जीव सो द्रोह न करई | जीवद्रोह कर नर्के परही अन्नजेंवावे । गऊ कोट मुक्त फल पावे ॥ राम सकल विश्रामा ॥ सक्ल देह च्यापे सतनामा । रमता भागते होई । विष्णुपंथबिन तरे न कोई ॥

क्वीरकृष्णगीता. (३२) दृढ बांघो सतभक्त कबीरा । औ जस खेती पान शरीरा ॥ विष्णुके भक्त लावनी होई। खेतंगी माता भक्त बिलोई॥ उसर भक्त आहे शिवकेरा । ब्रह्मा भये अपूज्य सकेरा ॥ भूतनी डंकनी भैरो काली । यह जीव अघखानी जंजाली ॥ सवा लक्ष जिव नित प्रति चाही। निरंकार तर भोजन खाही।। दोहा--क्या पापी क्या पुण्यकर, काह न छांडे काल । सवा लक्ष जिव रात दिन, नित खाहीं निराकार ॥ पापी घींच नरकमें दीन्हा। पुण्यी जीव चूस सो छीन्हा॥ ज्यो नरको भोजन है नीका । खाय जुड़ाय तपन गई जिनका ॥

向即即向向 कवीरक्रणगीता. तैसे काल चत्रावे रस पुन्नका । पुण्य क्षीन तब जीव भये सुन्यका।। थुथक लीन्ह सीठ जब भयऊ । दूतन आन चित्र पंह दियऊ ॥ सुचि बचाय जमावे धाई। पाप पुण्यके लेख चुकाई॥ चित्र गोपित्र कह ले कलु बांचा। सब फांसिक देवन घर जांचा॥
तब जत पुण्य बांच सो दीन्हा। डारेड नरक जन्म संग लीन्हा॥
तोहा—पुण्य करावे छलके, जीवनको निराकार।
पुण्य चूस ले आपनो, जीव नरक ले डार॥
कि क्वीरके शरण कालते बांचा। कबीर शरण बिन जमघर नाचा॥ यह कछु बात कहनकी नाहीं । रही सोच मनही पछताहीं



999	००००००००००००००००००००००००००००००००००००	**************************************									
ののののの	दान पुण्य बहु तीरथ जोगा । सत्तनाम विन भये सब रोगा माया मोह कछु काम न आवे । सहुरु विना नर नरक सिधावे	ıı Ş									
woo oo	धन सहुरु सतनाम कवीरा । जम जालिम को भेटे पीरा ॥ 🖟 । विष्णुवचन ।										
	कहा विष्णु महाविष्णु सो जाई । महाविष्णु निरंजन राई । सुखदेव व्यास औ देव अनेका । कबीरहिं सहुरु किये चहे ठेका ।										
0	🖞 । निरंजन वचन ।										
000	कहें निरंजन गुप्तिहं राखो । कहु काहूके आगे न भाषो ।										
	कवीर जोगजीत औतारा। तिन तो सीस हमारा मारा।										

(३६) कबीरकृष्णगीता. दोहा-में अष्टंगी प्रामेऊं, जोग हने मम शीरा । रूप रेख बिन भयउं तब नाम मोर जगदीश ॥ जेहिते कुर्म बिनै शिर नाई । कोट विनाति के सीस दिवाई ॥ मोर सीस देहौ सत्त कबीरा । तबते डर भरहरे शरीरा ॥ जो कोइ सत्त कबीर पथ चहुई । तेहिमें आपन माथ निरवहुई ॥ सद्गुरु कबीरकेर यह शेती। शरण गहे तेहि नहिं बेप्रीती॥ कोट जनमके पापी होई। अमे तीर्थ अघमल चहे घोई॥ पाप न छूटे कोट उपाई । कछ हिर शरण पाप दुर जाई ॥ 👸 अघनाशक सतनाम कबीरा । जाके निहचल अजर शरीरा ॥

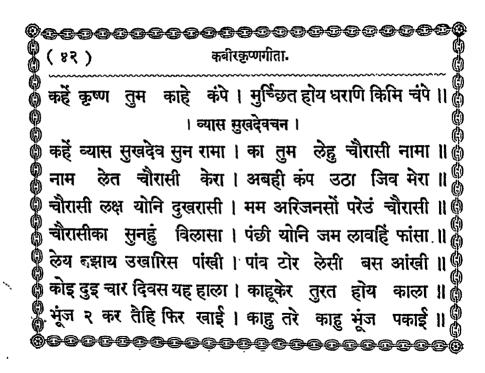
क्वीरक्रणगीता. कबीर शरण जित्र पहुँचा चाहे। पोत चला कछु रहे सो राहे॥ और जहांलग जीव जहाना । सब कबीरके मैं गुरू बखाना ॥ जैसे गऊ गोरिषया राखे। पोसै गऊ कबहुँ रस चाखे॥ गोरस रास गऊ स्वामीके। सांझ सकारे छांछ महीके॥ जैसे मैं कबीरके चेरा । कबीर पुरुष मम पिता सुखेरा ॥ में कप्त सब वंधु सयाना । वे सब निकट मैं दुर समाना ॥ में अपराधी दरश बिहूना। पुरुष दरश विन मांदिर सूना॥ जहँ मैं रहों सुन्य तेहि नाऊ । तुम बिन पुरुष सुन्य सब ठाऊं ॥ धन्य जीव जो सहुरु सेवे । सहुरु सेय परम पद लेवे ॥

000	300	90 9	60 6	100	399		000	6 (
Q (₹ ¿)		कर्वा	रकुणगीत	Τ.			(
*	•	·····			····	***************************************		~~ }
👸 परमप	द सोई	भवते	न्यारा	। भौसा	गर तु	म कष्ट	अपारा	11 6
jr .					_	ों करिहों		الـ
🖔 हमरे	पिता ह	गुणके	आजा	। सतक	बीर सुध	रे जिव	काजा	
do ·		~			~	क्बीरके		
Å			_			कवीर क	-	1
	विष्णु इ	हुण्ण ड	गै रामा	। पुल	केत भये	तब विष्णु	सुजाना	11 6
						सुन गात		
🎳 कहें ।	वेष्णु हम	अति प्	ुलकाने	। हमप	र द्या	कबीर बह	इ ठाने	11 (
						कबीर		
66 6	00 0	99 0) 0 0 (3 96	66 6	-	69 6	0

कवीरक्रणगीता. कहें निरंजन विष्णु सपूता। सवा लक्ष भक्ष दैहो । विष्णुत्रचन । कहें विष्णु सब तुम्हरी दाया । नित्य काट देउं आपन काया ॥ इक आज्ञा प्रभु मोकहँ करहू । मैं सद्गुरू कबीर पग धरहूं ॥ गुरुकी भक्त मात पितु सेवा । साधुसेवा फल बैठे लेवा ॥ । निरंजनवचन । निरंजन मन हर्षाई । सद्गुरु करो कबीरको जाई ॥ सद्भुर प्रगट दुनिया दिखलाई । जाते लोग न जाने भाई ॥ यह सब समुझ बूझ हषीये। जाय सबन सानंद सुनाये॥

कबीरकृष्णगीता. (80) अब तुम सब मिल राघहु ध्याना । हमहूं सत्त कबीरहि जाना ॥ कबीरके ऊपर और निहं कोई । आप कबीर पुरुष है सोई ॥ तीन लोक सबते अधिकारा । जोत स्वरूप निरंजन निराकारा ॥ सेवक सम रुघु आपिहं जाना । एक कहिन कोउ बहुतक जाना ॥ कबीर भजे सो मोहि गुनदाना । सत्त पुरुष निर्भय निर्वाना ॥ प्रगट राम कृष्ण निराकारा । सब मिल गुप्त कबीर अधारा ॥ अमी बुंद सो सत्तकबीरा। विषय निरंजन नीर शरीरा॥ 👸 प्रेम भक्त नहिं छिपत छिपाये । गुरुसो अधिक कौन अस जाये ॥ सरगुणके प्रेमाधिक गूरूवा। जन्मत मरत भये अति हनूवा॥

कशेरकृष्णगीता. सत्त कबीर अखंड सुखदाता । तिनके भक्त दुख जाय निपाता ॥ जो कबीर किहहै सो करई। गुरुकी दया मात पितु तरई । विष्णुवचन । कहें विष्णु तुम धीरज धरहू। सब मिल स्तुति कबीरके करहू॥ कहें कृष्ण सुन सुखदेव व्यासा । कहहूं चौरासी करे विलासा ॥ डारत निरंजन मोकंह चोरासी । सत्त कबीर काटे जमफांसी ॥ दस चौबीस जन्म भी मोरा । दया कीन्ह कबीर बंदी छोरा ॥ तुम सब भ्रम आये चौरासी । चौरासी दुख कहुं संग यासी ॥ चौरासीकर लेतिहैं नामा ।सुखदेव व्यास त्रसितं अति जामा ॥



क्वीरकृष्णगीता. जाहि मार जो करे अहारा । सो तेहि मोर सौ २ बारा ।। हमहु हारिल सुवना भयर । लासा लगाय बझाय जम लयऊ॥ जीवत एक २ पंख उखारेसि । जियतिहं प्राण बाज मुख डारेसि तीसर दिन जिव निकसे भाई । घर २ भिन्न जीवत कट जाई ॥ यह संक्षेप कष्ट बरणाई। सज पंछी तन भरमेउ भाई॥ शीत ऊप्ण सिंह भवन बिहुना । पत्थर मार करे सब चूना ॥ बरसे पानी बहे समीरा। तरुवर डोले अतिहं गंभीरा॥ वरस पाना बह रानापा । तस्त्रर अस्य अताह रानापा ॥ 👸 चरन जाउं डरपों दिन राती । जस मंजर टोरे कोइ छाती ॥ 🐞 🖫 भयउं वृक्ष तब छीले छाला । कोइ जर काट करे बेहाला ॥

कवीरकृष्णगीता. गउ भयेऊं तब दुख कछु थोरा । पुन्नमान गउ वृक्ष अंजोरा ॥ बकरा भया चला बल देने । फांसी लगाय गरा गहि लीन्हे ॥ र्वैचे जाय बेदरद कसाई। भोथा सस्र सो गला कटाई॥ अधमरा काट दिहिस मोहि डारि। छूटे न प्राण महादुख भारी ॥ लेकर विश्व गये घर आपना । काटेसि गर छिन मिटी कल्पना ॥ चील्हर भयेउं वसेउं तेहिमाहीं । टोय निकरेसी रुधिर पियाही ॥ मलत २ मारोसि अध मरके । दीन्हेसि डार हाहृतमह धरके ॥ बड़े कष्ट छूटा तहँ प्राणा । सर्पखान जिव जाय समाना ॥ जेहँलग् सर्पखान जो जितनी । भर्मेंडं सब अजगर अघजोनी ॥

क्वीरक्रणगीता. अजगर तन अतिभये मितभारी। लुक आग तन निशिदिन जारी ॥ भखन मरही त्यासन मरही । तेहिपर अप्ट काल निशि जरही ॥ भारी देह चला निहं जाई। दलमें परे अहार भक्ष खाई॥ दस हजार कोइ बीस हजार । सहस्त्र पांच शत कोइ जियारा ॥ अस जीवनसो मरना भले । पाख बीते कछु भोजन मिले ।। जिया जंतु जो सौहें घावे । स्वास संग खैंचि मुह आवे ।। महाकप्ट दुख अगम अथाहा । धन्य गुरू जिन तंह निखाहा ॥ सरगुणके गुरुको क्या देशा । सोई देय कहूं पास जो जैसा ॥ निर्गुण भक्त विना गत नाहीं । मिला कबीर सब त्रिखा बुझाहीं ॥

(88) क्वीरकृष्णगीता. और सनह चौरासी पीरा । भिष्टा माहि भयऊं तब कीरा ॥ मर भिष्टा मह फिर तन धरई । सत्तनाम विन भर्मत फिरई ॥ नरक भषिहं औ नरक निवासा । भिष्टा सेज भोग कविलासा ॥ भिष्टा कीराते सूकर भयऊं । चमकत फिरों नरक भष रहऊं ॥ भयउं श्वान तब हाड़ टटोरा । भिष्टा भरवी जन्म दुख झोरा ॥ एक दलिदः मोकहँ पाला । सीसलाय पालोसि मोहि काला ॥ पुष्ट भयऊं अहार जब बाढा । पापी भक्ष देन तब छांडा ।। आए खाय भर पेठ अघाई । ग्रास एक मोहि देय ललचाई ॥ खाय पेट भर उठे तब झारी । कबहुँक देय ग्रास एक मारी ॥

कवीरकृष्णगीता. ताते श्वान पाले मत कोई। जो पाले सो भक्ष देय सोई।। भक्ष नहीं देय परे अधखानी । सबमो एके राम बखानी ॥ भयऊं वाघ तब कियेऊं तन घाता। मैं नहि कीन्ह सो कीन्ह विधाता॥ काल करावे आपे। जीव श्राप हे अघ अस्थापे।। कर्ता काल निरंजन स्वामी। गढे भरे तन अंतरजामी। जीवहिं दुख सुख बहुविध देही । सुख किंचित दुख खान भारेही ॥ सतकवीर हैं सबके मूला। तिनके भक्त मिटे दुख शूला।। पुनि में भयुउं गिन्द अघ प्रासी । सरे ढोर प्रासेउं अघरासी ॥

कवीरकृष्णगीता. (84) दोहा--- और कहां लग बरणों, चौरासीदुख मूल ॥ सत्त कबीर मिले जब, मेटे सब दुख शूल ॥ कहें कृष्ण हम नीके जाना । हमहू लेव कबीर प्रवाना हमहु पिता सो विनती कीन्हा । पान लेन कहँ आज्ञा दीन्हा ।। सतकबीर जब दाया करहीं । आपन जान मो देउ धारही ।। यह कह उत्तर दिशि सिर नावा । नारद मुनि तब बात चलावा ।। । नारदवचन । प्रभ तुम कहेउ प्रथम हम ईशा । पुन बूझा तो निरंजन सीसा ॥ सीस जाय अब अंते लागा । सत्तकबीर सीस अब जागा ।।

क्वीरक्रणगीता. बिन कबीर मुक्ति जिव नाहीं । योग यज्ञ बहु जतन कराहीं ।। यह दंडवत तुमकाकंह कीन्हा । ताकर मेाहि बतावो चीन्हा ।। । विष्णुवचन । सुन नारद हरि वहें बुझाई । गुरु पितु मात साधु सिर नाई ॥ सतकबीर कहँ कीन्ह प्रणामा । आय दरश दिजे सुखधामा ॥ कबीरके शिप्य राजा निरमोहा । ताहि प्रणाम कीन्ह बहु छोहा ॥ धन्य राजा निरमोहकी वाणी । हर्ष विशेष कछु लाज न हानी॥ । नारदंखवाच । नारद भें देखों राजा । तिनके दरश होय मम काजा ।।

क्वीरकृष्णगीता. धन्य निरमोह जेहि कृष्ण सराहा। उनके दरश करों चित चाहा ॥ आज्ञा करहु जो श्रीयदुराई । तो निरमोह दरश कर आई ॥ आज्ञा किये दरश गये करहू ।दरश निरमोह जियत जिव तरहू।। । राजा निरमोहकी कथा । चले ऋषी दरश निरमोहा । सभा निरमोह तर गये निरमोहा ॥ नृप निरमोहके एकहिं बारा । गयउं कुटम चार सुत वारा ॥ नारद जाय द्वार होय वैसे । संसै शूल भूप घर जैसे ।। हैं सुंदरी एक अब कहा बुझाई । नृपकर सुत नियते मर जाई ॥ हो 🕛 है संदेश नृप सुतके आयऊं । भये परहे ऋषि रौर करायऊं ॥

क्वीरकृष्णगीता. रोवत नारद सुंदरी उठ नाची । कहे सुंदरी मरना दिन सांची ॥ कहें नारद सुन सुंदरी पापिन । नृपसुत हतन सुन हसस कस पापिन॥ सुन्दरी कहे संगत मम ऐसी । हाटबझारकी सौदा एक दुकान गहकी दस मिला । सौदा लेले चले अकेला ॥ को केहि लाग करत है सोगा। अस हम निरमोही लोगा॥ नारद ज्ञान सुनत मन मूर्च्छा । बहुर नारद सुंदरी कह पूछा ॥ राजिहें केर सुभाव जस तोरा । की घट बढ सिंह कहु रोरा सुंदरी कहे देख ऋषि आंखी | निज चक्षु देखि कस साखी ॥ 🖫 यह कह सुंदरी मंदिल पैठे। सुनि जहँ तहँ जहां जो बैठे॥

(५२) कवीरकृष्णगीता. कहे सुंदरी द्विज आये द्वारे । उन संदेश कहि कुंअरही मरे ॥ सुन राजा रानी सुत नारी | निरत करत आये सब द्वारी || नारदऋषि कंहँ कीन्ह प्रणामा ।कहें ऋषि तुव सुत हरि लिये रामा॥ सुनत वचन ऋषिराय अनंदा । गांवाहें मंगल लाग करंदा ॥ राज़ा कहे लाव निरत काली। गावत कुंअरके खाट निकाली।। राजाकी रानी उठ गावे। कुंअर बधू सेंदूर पायक महाउत आय धाई । मंगल गावहिं गाय बजाई ॥ 🖔 गाविहें मंगल हंस चलावा । महा अचंभो नारद आवा ॥ नारद उठ राजिहं संबोधा । रानी कुंअर बंधिहं प्रमोधा ॥

क्वीरकृष्णगीता. तुव सुत मृत्यु वचन हम बोले । पै तुव सबके वदन न डोले ॥ कैसे तुम सब हृदय कठोरा । पुत्र मृतुक सुनकरहु न रोरा ॥ सही राजा तुम बड़े धर्म धीरा । पुत्र मुये कर राज प्रचीरा ॥ । नुपति चचन । कहे नृप ऋषिसो कहें सो सांचा । राज करनको देही कांचा ॥ हम सबके संगत दिन चारा । मरनो रोर न घन वित धारा ॥ आन मरे तो रोइये भाई। मरन आप अमर रहि जाई ॥ गुरुमुख मरे रोवे नहिं भाई। साकट मरे विकल होय जाई।। गुरुमुख भये काल भौ नासा । साकटके गले जमको फांसा ॥

कवीरकृष्णगीता. बहुरि समुझ ताही नहिं रोई । दाया सतसाहेबके सतसाहेब सतनाम कबीरा । तिनके हम सेवक रणधीरा ॥ हमरे साहेब यह कह दीन्हा । जीव मुये चिंता नाहें कीन्हा ॥ चिंता सोइ सुमिरये नामा । सब चिंता मेटे सतधामा ।। जो आये हमहू तन घारी । रहेन कोइ राम कृष्ण नरहारी ॥ गुरुसेवा सोई शुभ कामा। और सकल जग काम अकामा॥ गुरु जब मिले सद्गुरू पूरा। जीव बचावे जमसो सूरा॥ जालिम काल निरंजन बांका । त्रिय देवा निस लाविहें आसा ॥ सबकहँ खाय निरंजन राई। बांचे सत्तकबीर लौलाई॥

कवीरकृष्णगीता. संगत हमरे स्वामी । कैसे संगत कहु नृप नामी ॥ कहें निरमोह सुनो ऋषिदेवा । उतरें पार लोग एक खेवा ॥ जो जहँके तहँवा चिल जाहीं । कोउ काहूको पूछत नाहीं ॥ आपन २ समर्थ साथा। आदनाम समर्थ सुखदाता।। समर्थ गुरु साधुकी सेवा। तजे आस सब देवी देवा।। तीर्थ वत तप योग यज्ञधर्मा । गुरु विन मरे कालवरवंधा॥ ुं गुरु सोई जो अंतहु मीठा। जन्म मरण गुरु लागिह सीठा॥ () पुन नारद रानीकहँ पूछा। सुत बिन तोर गोद भयो छूछा॥ गुरु विन राम नाम नहिं पात्रा । रामचंद गुरु नाम लखावा ॥

कवीरक्रणगीता. कहें रानी गहुं नृपके पाऊं। छूछा सोईजो गुरु न कराऊ ॥ गुरु बिन राम नाम नहिं पावा । रामचंद्र गुरुनाम लखावा ।। हमरे स्वामी सिरपर आहीं । गुरु साधन बल हर्ष कराहीं ॥ 👸 कहा ऋषीते डाइन आही । तैही पुत्र खाय निज चाही ॥ सही ऋषितें निहचे यह भाषा | ऐसी बोले सहे तुत्र साखा ।। मात पिता जो सुतकहँ खाले । कहु जन्म छटी प्रतिपाले ॥ 👰 जैसे निरंजन पाले घाले। ऐसी चाल तुमहिं कहँ चाले।। रयरे साहेब सत्तकबीरा । अमित भाव तेही अजर शरीरा ॥ 🤾 सो पालक घालक निराकाला । ताहि मिसल तुम तो अस चाला ॥

कवीरक्रणगीता. निरंकार वह तन धर मुवा । पुरुषके वंश निरंजन तवा ॥ दश अवतार महा दगपाला । हिर हर अजधर खाये काला ॥ कबीरके हंससे काल निनारा । सो पहुँचे सतपुरुष दुरबारा ॥ सत्त पुरुष सोइ सत्तकबीरा । कोइ जन मूळे देख शरीरा ॥ ऐसी मम संगत ऋषिराई। कैसी संगत कहह बुझाई॥ जरा पंछी लिये वृक्ष बसेरा । चुगन चले जित कित तव फेरा ॥ 👰 को केहि पूछ कुशल औ क्षेमा। ऐसो पुन िनरमोह व्रत नेमा॥ 👸 पुन नानाविध भावना कीन्हा । एक रती कछु मोह न चीन्हा ॥ की नारद पूंछा कुंअर बियाही। तुव मन बहुर जारके पांही॥

(96) कवीरकप्णगीता. कहैं बहुर नृपके सिर नाहीं । सास वंद गुरु स्वामी मुख चाही ॥ हमरे स्वामी मुवा न मिर हैं। तजके देह अमर तन धरिहें॥ सत्तलोक सुख अमृतखानी । एके संग रहब दोउ प्राणी ॥ तुम्हरे वंश होइहै रांडी। कंथ बेमुख धगड़न सो मांडी॥ मैं पतिव्रता सहुरुके चेली। श्राप दें तो साध मत हेली।। एक कहों सो सब सुन राखो । प्रातिह नारद मुख नामन भाषों ॥ नारद कोप कीन्ह परनामा । मोपर कोप न कीजे वामा ॥ (१) (१) जाकर स्वाभी मर जग जाई । सुनतहीं रोर करे चिल्लाई ॥ कुंअर वधू कहे सुन ऋषि मुर्षा । रोय । जिये तो मरे न पुरुषा ॥

क नेरक्रणगीता. मरे सोइ जो गुरु नहिं कीन्हा । हमरे शिरपर समर्थ चीन्हा ॥ जेते दिना लिखा एक संगा । वोही जोत महँ धसत पतंगा ॥ ऐसी संगत हमरे पाडें । अस सोइ करे ज्ञान जेहि माडे ॥ कैसी संगत तुहारी बाला। जस पनिहारिन कलश भरि चाला।। दस घरकी तब एकहिं ठाई । कलश भरि २ लीन्ह उठाई ॥ घाट पंथ जित तित भइं नारी । ऐसी संगत ऋषी हमारी ॥ ऐसी समय कुंअर चलि आये । नारद देख मुख कारिख आये ॥ कुंअर उत्तर कीन्हे प्रणामा । परम गुरू पितु मात दिज रामा ॥ नारद कुंअरसो बिनती लाई । हम यह दरश एक बात जनाई ॥

कवीरक्रणगीता. ં ६૦) मिथ्या वचन कहा हम आई । तुह्मरे मुयेकी खबर जनाई ॥ कोइ तोह लाग रोवे नहिं भाई । तुत्र मृतु सुन सबगती कराई ॥ कहें कुंअर रोवे किहि काही । जो रोवे मरना पान ताही ॥ मुये कारण नहिं रोइये स्वामी । तब मृत्युका ागाडे प्राणी ॥ मुये चलावा मंगल गाई । गुरू साधुकी सेवा लाई॥ अन्नदान कंचन दिज जाना । मृतुका पहुंचे गुरु निज धामा ॥ अविनाशी राम सोइ सत्त कबीरा । सो मम सतगुरू अजर शरीरा ॥ ऐसी संगत हमरी पांडे । हम सब जीवाहें जाने भांडे ॥ कहो कुंअर अस संगत तोरी । सुनहू ऋषी अस संगत मोरी ॥

कवीरकृष्णगीता. जैसे पथिक बसे सराई । प्रांत भये अपने पथ जाई ॥ कोउ काहूको बात न पूछा । प्राण गये जस काया छुछा ॥ हम सबके जीवन सतनामा । सतसंगत गुरू मक्त विश्रामा ॥ नारद उठ परिक्रमा कीन्हा । तब नृप सुताहें जो बैठक दीन्हा ॥ ऋषी विनय कर पाक कराई । नाना व्यंजन परसे जवाई ॥ दोहा-विदा भये ऋषि नृपते, आप नगर महदेख । हर्ष विस्मय ऋषि चित्तमें, कला निरमोह अलेख ॥ एक चमार चलेउ पुर माही । सोई मृत्यु कहँ रोवत नाहीं ॥ तहां द्याव नारद भये ठाढा । कृत्य करत मृतुक ले काढा ॥

कवीरक्रणगीता. तब ऋषि पूछा समरहिं जाई । कस नहिं रोवस मनुष मराई ॥ हाडी कहै रोविह केहि लागी । गुरु मुख होय मूअ अनुरागी ॥ साकट मरे काल मुख जाई । गुरुमुख तनतज हरिपहँ जाई ॥ राजा भयो कबीरको शिष्या । हम सब रामचरण चित छिखा ॥ राम भजे सो साधुकी चाली । मिला कबीर मिटा जंजाली ॥ 🖟 जो जन्मे तेहि मृत्यु कर लेखो । महितन अछत जियत ना देखो ॥ जिन प्रभुदिया तिनहि हरिलया। मरन जियनकी सोच न किया ॥ ऐसी संगत आय हमारी। कैसी संगत कहो बिचारी॥ 🗣 ऐमी संगति ऋषि मुनि मोरी । तिरबो अस जस रुकड़ी जोरी ॥

कवीरक्रणगीता. छूटे भवर होय दोय दिशा । दोमहँ एक रोक नहिं दीसा ॥ कुशल काहुकहँ पूछिहं साई। ऐसी संगत हमारि गोसाई॥ दोहा--- सुन नारद अचरज भये, हिर पंहँ कीन्ह पयान। हरिसे चरित्र कहा सब, धन निरमोह सुजान ॥ उवाच । कहें ऋषि सुन दीन दयाला। नृप निरमोह जियत कलिकाला॥ 🖟 अस २ संत आहिं जग माहीं । धन्य जो सतकबीर जेहि छांही ॥ अस मोहि द्या करो भगवाना । वस्ती तज बन करींह पयाना ॥ 🖟 कुल परिवार झूठ हम जानी । सत्तनाम एक सार बखानी ॥

(83 कबीरकृष्णगीता. | कुष्णवचन | कहें कृष्ण बन किमि चिल जाहू। गुरुके गृह निज भक्त कमाहू॥ हम ब्रह्मा सुत सब ते जेठे। जगमें और सकल मम हेठे॥ कहें कृष्ण जो करता आवे । बिन गुरु ते उबार नहिं पाने ॥ तुम कितने आहू किह माहीं । मम निरबाह गुरू बिन नाहीं ॥ गुरु बिन साकट प्रेत समाना । साकटके सिर जमकी थाना ॥ घरती कहँ साकट है भारी । औ प्राणी भारी बेविचारी॥ जस चंदा बिन रैन अँघेरी। तस साकट ले जिव जन घेरी॥ रवि न दिवस ईश बिन सैना। गुरु बिन साकट अंघ जन नैना॥

क्वीरकृष्णगीता. बिन देवल देवस्थल जैसे। बिन गुरुके प्राणी है तैसे॥ बिन दीपक जस घर अधियारा । तस गुरु बिन साक्ट जम चारा ॥ कहें नारद गुरु का कहँ करऊं । जेहिते तुम्हरे चित संचरऊ ॥ कहें कृष्ण गुरु कर निरबंदा । नारी तजै तजै कुल दंदा ॥ 🖣 विप्णव गृह त्यागीं बैरागी.। ऐसे गुरुके शरणन लागी॥ गुरु कबीर पंथतन धारी। सद्गुरुके सब जित्र निस्तारी॥ सहुरु सत्तकबीर निरबाना। जाके त्रास काल भय माना॥ 🕲 अब तो गुरु तुम प्रातिहं करहू। प्रात प्रथम मिले तेहि पंग घरहू ॥

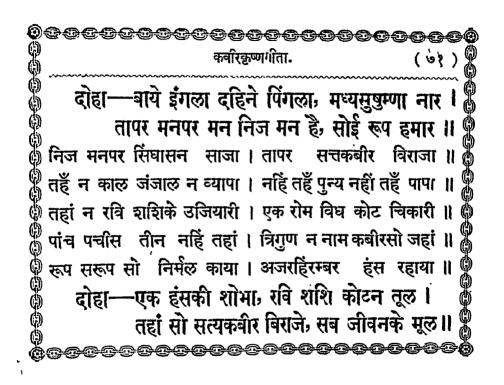
({ { { { { { } { } { } { } { } { } } } } क्वीरकृष्णगीता. दोहा—नारद गवने निज मठ, प्रात जाय गुरु कीन्ह l:: मछवा मिले पंथ महँ, तासो दीक्षा लीन्ह ॥ 📲 दीक्षा ले वैकुंठ पगु धारे । हरिके आगे वच न उचारे ॥ गुरू कियापै जातके हीना । तुव आज्ञा मछवा गुरु कीन्हा ॥ कहें कृष्ण गुरु कहँपै लाऊ । अब ऋषि तुम चौरासी जाऊ ॥ वेगि जाहु तुम गुरुके पासा । अपने औगुण करहु प्रकाशा ॥ तव गुरु आज्ञा जैसी होई । किये निसतार सुनहु ऋषि सोई ॥ 🖥 चले ऋषि तेहि जग महँ आये । बहुर तहां गुरु दरशन पाये ॥ चरण सीस दे बिनती छाई । मोहिसे अवगुण भयउ गोंसांई ॥

कवीरकृष्णगीता. कैसे अवगुण बोग सो कहहू। गुरुसे कह अंतर अब करहू॥ गुरुसे कपट करे गुरु निंदा । साधु द्रोह नर यमके बंदा ॥ सुनत ऋषी थरहर पगु धरेऊ । केहि अवगुणसे प्रगट कहऊं ॥ भयउ दया तुम दीक्षा दीन्हा । ठाकुर मोसन पूछन लीन्हा ॥ कहहु ऋषी गुरु कैसन कीन्हा। तब हम कहें गुरू कीन्ह कमीना॥ ऐसे किह हम वचन अधीना । हमरे जोग नहीं गुरु ध्याना ॥ औपै नीच जातपै आना। यह सुन कृष्ण कहा मोहि सेती। जात मनुष गुरु कहे अनेती॥ तुम ठाकुर कहो कौन सजाई। कहे नारद तुम कहो बुझाई॥

' ६८) क्वीरक्रणगीता. कृष्ण कहा भरमो चौरासी । तब छुटे ऋषि यम गर फांसी ॥ ताते तुम पहँ आयउँ स्वामी । कहो सो करहूँ मैं अंतर्थामी ।। अब तुम कहो कृष्णसों जाई। क्षित चौरासी लिख दिखलाई।। तब हीर लिखें पृथ्वी चौरासी । लोट पोट कर छूटे फांसी ।। चले ऋषि गुरु कहँ सिर नाई । ठाकुरसे गये बिनती लाई ॥ लिख देव स्वामी मम चौरासी । बूझ लेव तब भर्मेड दासी ।। लिखा कृष्ण भूतल अघखानी । लोटाई नारदमुनि बिलखानी ॥ कहे कृष्ण तुम यह का काहू । महि महँ छोट खेह तुम क्रहू ।। भरमो चौरासी हरि सुन बैना । हरि भर आये जल घर नैना ॥

कबीरक्रणगीता. कहें ऋषी यह बुध किन दीन्हा। कहें ऋषी गुरु मोक्ष मम कीन्हा।। कहा कृष्ण अस गुरु परतापा । गुरुसम जग हित नहिं पितुमाता॥ पिता निरंजन गुरुसम मोरा । गुरु दुखासा ऋषि गतघोरा ॥ सत्तकबीर हमारे। कबीरके शरण इक्रोतर तारे॥ दोहा-कहें कृष्ण सुन नारद ग्ररु, बड़ेके दिजराज । कह ऋषि ग्रुरु सबते बड़े, ग्रुरू गरीब निवाज ॥ गुरुसम काहु न देख गोसांई । करता पितु जननी औ भाई ॥ गुरु हैं सबपर ईश गोसांई। कहें कृष्ण नारद समुझाई॥ नारदः ऋषि उठ चरणन लागे । श्रीपति तुम मोहि कीन्ह सुभागे ॥

कवीरक्रणगीता. (60) जो हम ब्रह्मा सुत बड़ ज्ञानी । गुरु बिन इतने वात न जानी ॥ धन्य गुरू अब धन्य सो किह्ये । जासु चिन्हाये गुरुपद लहिये ।। प्रथमहि रजगुण गुरुकी महिमा । सुनहु सतोगुण गुरुकी महिमा ॥ तमगुण गुरुकी कहहुँ सुभाऊ । देवी पंथकर चाल लखाऊं ॥ देव निरंजन पंचम कहिये। जोत अकाश होय दरशन लहिये छठयें जीव सतयें सतनामा । सत्यनाम संतन सुखधामा ॥ संतके प्राण सब जीव सुखदाई । सोई सत कबीर गोसांई ॥ एक जीव त्रिगुण दरशावे । इंगला पिंगला सुखमन भावे ॥



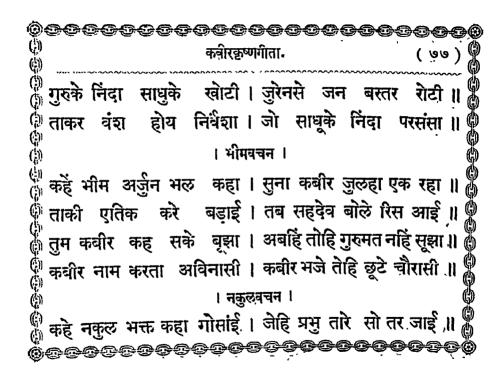
७२) क्वीरकृष्णगीता. पुन्यमान जिव होई । सतकबीर कहँ सेवे सोई ॥ लखन कोट माहिं एक जीवा । सो करिहै कबीरको पीवा ॥ जेहि होय दाम सो खाय मिठाई । मकरा घांस रंक ले खाई ॥ तैसे दाम सहस सतदाया । पूरण पुण्य सहुरू पद पाया ।। सहुरु सत्यकबीर जिव व्याही । जीव व्याह अमरलोकलै जाही॥ अमरलोक सुख बराणि न जाई । छिण एक महमें गये अवाई ॥ अजर मुक्त चाहे जो कोई । सो सद्गुरु कबीर शिष्य होई ॥ बिना कबीर सांच कहु नाहीं । तीन लोकसो आवहिं जाई ॥ सत्तकबीर सो सत्त निवासी । सत्यलोक 'अम्मरपुरवासी ॥

कवीरकृष्णगीता. जीव दयाको जग पगु धारा । दासा तन धरि शब्द्पुकारा ॥ दास कहाय प्रगट भये काशी । शिष्य कहाय रामानंद विलासी ॥ संन्यासीसे भये बैरागी। रामदत्त रामानंद अनुरागी॥ कबीर ब्रह्म आपन जगआदा । तिन गुरु कीन्ह बांध मरजादा ॥ पाछे तब हमहूं गुरु कीन्हा । तब गुरु कीन्ह सबन भल दीन्हा॥ आनंद सरूपी। जन कबीर परमानंद रूपी॥ एक मोरा । सत्यकबीर समर्थ बंदीछोरा ॥ नवे छोटा अभिमाना। शीतल ज्ञानकोघ अज्ञाना॥ ताते अमरपद चीन्हे भाई । सुपंथ चले सो कबीर घर पाई ॥

' ৬৪) कबीरक्रणगीता. कळु पंथे चाहे। सो तो रामचरणचित आहे। **झुठे लंपट चोर** छिनारा । यह लक्षण रजगुण निरवारा ॥ क्रोध कपट पाखंड बड़ाई। यह तम गुण जीव दुखदाई॥ सतगुण सत्त कपट नहिं भावे । प्रेम भक्त गुरु दरशन पावे ॥ गुरुदर्शन प्रभुदर्शन मानो । साधु दरदा गुरु दरदा बखानो ॥ सत्तकबीर सतगुणके मूला । उनकी पटतर कोइ निहं तूला ॥ और सबे छल छुद्र समाना । रागद्देष मान अभिमाना ॥ कहें कृष्ण मोहि मन वच सेवे । हरदम नाम हमारा लेवे ॥ दया क्षमा सत गहे सो पंथा । दीन दुखी पालक भगवंता ॥

कबीरकृष्णगीता. गुरु साधमहँ मोकहँ देखे। घात द्रोह तज पंथ परेखे॥ मेटो आप मृतुककी नाई । प्रेत पिशाच असुर औतरई ।। रहे जो पुण्य सो प्राणी। रामनाम भज नरतन जानी॥ नरतन पाय जो भजे कबीरा । कबीर भेंट मिटे तनपीरा ॥ शिव तमगुणकी भक्ति जो करई । प्रेत पिशाच असुर औतरई ॥ देवि भक्त चौरासी बासा। भक्त करे तन परे यम फांसा॥ शुकर श्वान गिद्ध मंजारी। परे चौरासी मांस अहारी।। दिन रस चेटक भूत मसाना । नामभक्त बिन यमघर थाना ॥ जाहि ज्ञान जाके मन थाका । आतम परमातम पंथ ताका ॥

कवीरकृष्णगीता. (५६) परआतम सब आतम कीन्हा । बिरले आतम परमातम चीन्हा ॥ जिन चीन्हा तिन्ह संदुंरू सेवा । सदुर्र सत्तकबीर निजं भेवा ॥ नारद मगन भये सन वाणी । धन्य कबीर जो कीन्ह बखानी ॥ । अर्जुनखवाच । पूंछे सीस नवाई । अबलग हम नहिं पूंछ गोसांई ।। को कबीर कहवाते आये। जाकी ऐसी स्तुति लाये॥ भक्त कबीर जो रहे एक तोरा । तुमते कोन बडा सुन मोरा ॥ । युधिष्ठिरवचन । कहें युधिष्ठिर सुनहु महिंद्रा । गुरु साधकर जितकर निंद्रा ॥



कवीरकृष्णगीता. (७८) सुनिके कृष्ण कहा सुन भीमा । अर्जुन पढे तिनहु नहिं चीन्हा ॥ दोहा-सोई कबीर तुम चीन्हहू, जेहि शिष्य घंट वजाय । द्वापर भक्त सुदरसन, डोम स्वपच बरणाय ॥ कबीर सोई जाको अस शिष्या । हम सब जीव कबीर घर भीषा॥ जोलहा आद जासु जगताना । सुरझे साध साकट अरुझाना ॥ चंदसूर जाके दोय तारा । करि गह काया बिनहि रिसारा ॥ इंगला पिंगला चले दोय घोटी । मध्य सुषुमणा हांथ जोटी ॥ सरसों तीन साठ लग जानी । अर्घ उर्घ दोय खूंटी तानी ॥ तानी ताना भरनी सुत स्वासा । निहचल बिनहि कबीरा दासा॥

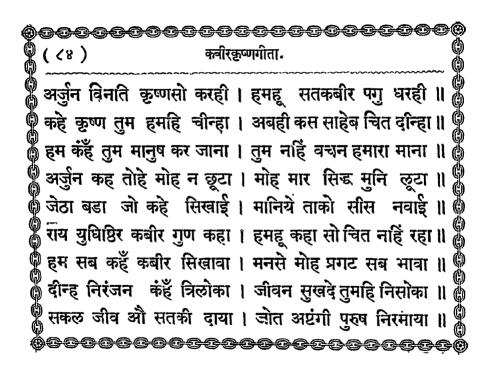
कशेरक्रणगीता. धरती अकाश पवन औ पानी । रचा कबीर सकल रजधानी ॥ फिराह जगतमहँ आप छिपाये । भक्त मुक्त पथ इनहि चलाये॥ जासे तबहिं निरंजन राई। हम तुम कौन गलीमहँ भाई॥ संकट माहिं कबीर सहाई। बंदी छोर कबीर गोसांई॥ करताका कोइ अंत न पावे। तरे सोई जो मक्त कमावे॥ अर्जुन भीम कृष्ण पग लागे। निहचल सोयते अब जागे॥ कृष्ण यधिष्ठिर कहें इसारा। अधम उधारन नाम कबीरा॥ नाम कबीर प्रकाशा । राम कबीर दोय एक अवासा ॥

कवीरकृष्णगीता. । युधिष्टिरवचन । कहें युधिष्ठिर सुनहु स्वामी । आज कहों तोहि अंतर्यामी ॥ जा दिन कहा तुव पुर्षा तारे। बुड़े नरकते जाय निकारे॥ तब तुव आज्ञा सिरपर राखा । बांये अंगुली नरकमहँ नांखा ॥ पांव पकड़ मोहि पित्रन खैंचे । नाम कबीर सुमर तब बांचे ॥ और नाम बहु सुमरेहुं भाई। तजिहं न पित्र मोहिले जाई॥ तब मैं सत्तकबीर पुकारा । ततिछण भयउँ नरकते न्यारा ॥ तबसे हम कबीरको चीन्हा । कबीर कहत भये अघते भिन्ना ॥ जबहिं हम युधिष्ठिर ऐसी कहा । तबहिं कापेळमुनि उठकर गहा॥

क्वीरकृष्णगीता. । कपिलमुनिवचन । धन्य युधिष्ठिर कह दुलराये । तुमहु लख कबीर कहँ पाये ॥ कबीर आप हैं समर्थ साई । जाकी रची सकल दुनिआई ॥ 🖔 आपन बड़ाई विष्णुहिं दीन्हा । आप दास भये अस अधीना ॥ एक दिन व्यास निरंजन ईशा । औरहिं भया चितवे मम दीसा ॥ सवा लाख सँग पहुँचे जाई। सूरी देंय यम चला गोसांई॥ तब कबीर कहँ कीन्ह चिकारा । भिन्य २ के मोहि निरंजन डारा ॥ दूतिहं कहा हंस केहि आना । भाष बेग नतो करों निदाना ॥ बोला श्रीहर दूत होय आगे । डरहिं दृत सब कांपन लागे ॥

कवीरकणगीता. इन नहिं कीन्ह कबीर पुकारा । निरखत जोत तहां हम मारा ।। यहां आय कबीर गोहराये । वहां जोगके गर्भ मुलाये ॥ जोग मोग नहिं जानो भाई । कबीर नाम भज काल न खाई ॥ तबहिं निरंजन दूताहें बुझावा । यहि घरि डार तुरत तब नावा।। दोहा-- इतना कहा निरंजन, तत्क्षण प्रगट कवीर ॥ किन मम इंस दुखावा, केहि भारी भौ शरीर 11 दूत अंघ भय पेल पराने । चल न सके बलहीन तुलाने ।। देख कबीर निरंजन नीरा। घाय कबीरके चरणन गीरा ॥ थरहर कहे चूक नहिं मोरा। अलग हंस बैठारउं तोरा।।

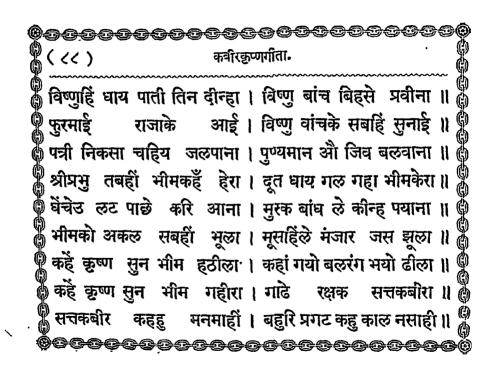
कवीरकृष्णगीता. सतकवीर मुनि कपिलहि पूछा । कहा कपिल कुछ नाहिं बिगृचा ॥ दोहा—तव कबीर दाया किर, मोहे ले चलेउ लिवाय ॥ कहे काल में चेरो ते ये, तुम राखो मम ठान ॥ तब हम कबीर उर धारा। कहे कबीर भये जमते न्यारा॥ कहे किपल मुनि सुन हो भीमा । धन्य कबीर निरंजन सीमा ।। जहां निरंजन कहँ सब धावे। वहां अंत जीवन झरकावे।। कहें कपिल मुनि सुन सहेदवा । बिरले पावे कबीरको भेवा ॥ अब हम लेव कबीरप्रवाना । भज कबीर निज घरकहँ जाना ॥ सुने कबीरके महिमा भारी । इच्छा दुरश सबन चित धारी ॥



कवीरकृष्णगीता. दीन्ह निरंजन कहँ जागीरा । सोइ पुरुष सोइ सत्तकबीरा ॥ सतलोकवासी अविचल नामा। अविचल नाम कबीर सुखधामा॥ सतकबीर हम सबिह सिखावा । राम निरंजन जगहि दृढावा ॥ राम निरंजन प्रगट विस्तारी । कृष्ण अज औ हर संसारी ।। इन सब कहँ लूटवे हर साजा । क्षीर असवारी पीछे राजा ॥ जो निर्गुणकी सब महिमा पावे । तो सर्गुणके कोइ निकंट न आवे॥ निरगुण कबीर त्रिगुणते न्यारा । निरंजन त्रिगुण सरगुण पसारा ॥ निरंजन कहँजग निरगुण कहता । निर्गुण तो जोइन नहिं बहता॥ निरंजन तो जोइन मह आये। तन घर कृतम नरक भुगताये॥

ं ८६) कवीरक्रणगीता. कीतम सखा त्रिगुण कियो कर्ता । कर्ता हर्ता भर्ता नहिं मरता ॥ जे. कर्ता आपिह मर जाई । तो तेहि कीतम कहिये भाई ॥ निरंजन तो तन घर २ मूवा । आदि कर्ता कहु कैसे हुवा ॥ आदि कर्ता सो सत्तकबीरा। जो नहिंग छेन जरे शरीरा।। अकह अगह छाया तन नाहीं । स्वासा से तस रंग लस्वाही ॥ पूंजी सबके भाई । सो स्वासा कबीर निरमाई ॥ स्वासा देह लिये संगे चले । निकसत स्वासा देह महि मिळे ॥ राय निरंजन । स्वासा अंस कबीर दुख भंजन ॥ पवन है भाई । नासिका वाटसो आवहिं जाई ॥

कवीरकृष्णगीता. नासिका निकट सो दरसे आतम। आतम दरस दरसे परमातम ॥ छत्तीस नीर और पवन पचासी । ताते न्यारा सोहंग अविनासी ॥ सोहंग जीव सुखसागर केरा। तन घर भुगते दुःख घनेरा॥ केदली ब्रह्मके नाम सोहंगा। जाको मूलसो शब्द विहंगा।। जीवके नाम केदल ब्रह्म कहिये । विहंग प्रचै कबीर मिल लहिये॥ रोरा नल कुमत अठ गांठी । गुरुके ज्ञानन भिमके साठी ॥ दोहा-अर्जुन भीम सकल मिलि, कीन्ह कबीर प्रणाम ॥ सतकवीर जीवरक्षक, जै २ कबीर सतनाम ॥ द्रबारकर दूता। पाती ले आव निरंजन



कबीरक्रणगीता. सुनके भीम कबीर कहि बोला । सतकबीरको आसन डोला ॥ छिनमें समर्थ पहुँचे आई | कबीरसुनत यम चला पराई ॥ छांड भीमकहँ भागेउ काला। सत्तकबीर मेटा जंजाला॥ कृष्ण उठाय भीम कहँ लीन्हा । तब कबीरके स्तुति कीन्हा ।। सकल देव उठ ठाढे भयऊ । सत्तकबीर कहँ सीस नवायेऊ॥ दोहा-पग्र छूवन सब चाहे, काहु न आवे हांथ।। जापर दया कबीरके, जिन पछ देंही माथ ॥ योगयज्ञसे सैर न कामा। जबलग भजै न सहुरुनामा॥ सत्यकबीर दयाला । शरण कबीर मिटे यमजाला ॥

कबीरकृष्णगीता. (o) दोहा—सत्यकवीरके स्तुति, करे निरंजनराय ॥ निष्णु व्यास सुख गरुर कहत है, भाग दरश सतनाम ।। अधर विवान घानमें सोहा । अद्भुत चंद सूर नख मोहा ॥ स्तुति आप २ सब करहीं | जै २ सत्यकबीर उच्चरहीं || कोटिन चंद सूर उगआये। अद्भुत लीला कला दिखाये॥ विष्णु व्यास जै स्तुति सारा । सत्यकबीर जै सब उच्चारा ॥ जै २ नमो २ सब कहही । अधर स्तुति सब एकटक रहही ॥ जै २ सत्यकबीर सुखदाई। विष्णु न्यास पंडौ गुण गाई॥ २ सत्यकबीर दयाला । कबीरकृपाते जीतेऊं काला ॥

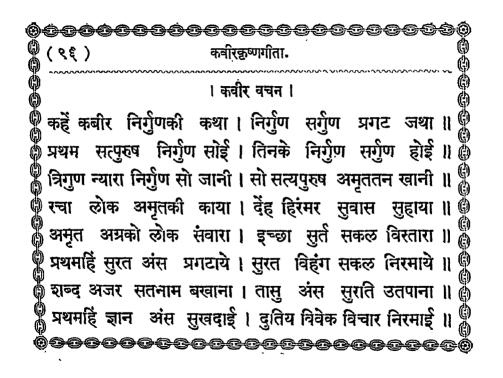
क्वीरकृष्णगीता. जै जै समर्थ सत्य कबीरा । सब घट व्यापक अजर शरीरा ॥ सत्य कबीर संसार तेहि दीन्हा। जै जै सत्यकबीर प्रवीना॥ जै जै अकह सो नाम कबीरा । पुष्पवास घृत घाण शरीरा ॥ जै जै कृपाल कबीर गोसांई। गऊ किपलहिं ले यमते छुड़ाई॥ जै जै अमर नाम कबीरा । लखा घर जरत खंहा महँ चीरा ॥ थाके भीम खंहा नहिं आना । बाचा बंध व्याकुल भगवाना ॥ तवहीं कृष्ण कबीर पुकारा। जै पतालते खंम्ह उखारा॥ जै जै कहि बहु वार कबीरा । जै राम लक्ष्मण एक शरीरा ॥ जै भरथ शत्रुघन सीता सती । जै दशरथ दाया सो कांती ॥

क्वीरक्रणगीता. जै कबीर अमोलख भाई । जै पुप्पवास प्रति रहे समाई ॥ जै काया दल बीर कबीरा। जै अधर धजा फहरात शरीरा (। जै एक स्वास बहु मूंदे आंखी । भीतर सबके कवीर सुर्तसाखी ॥ आप आप मन ध्यान औराधे । दसो द्वार मन पवन कस वांधे ॥ प्रेम भक्त बस साहेब सोई। माया चहे सो प्रभु नहिं होई।। आप निरमाया । आप न्यारा माया जग छाया ॥ माया बस पर जीव कहावे । निहमाया सतकवीर रहावे ॥ जहां अभिमान कपट चतुराई । तेहि नहिं सत्यकबीर दरसाई ॥ तन मन धन जोवन बन फूळा। मन भौरा ताके रस भूळा॥

कवीरकृष्णगीता. जब वन्सपती बन गई सुखाई । भौंरहि भूख लाग अधिकाई ॥ जेहि बन देखत भौर भुळाना। तेहि बन वरस अंगार समाना॥ तव भौरा सरवर दिशि धांसा । पुरइन कंबल जाय अलवासा ॥ कहे कंवल भौरा वनवासी । विपत परेउ आयउ मम पासी ॥ जब बन उगठा आग धंधाना । तब बनते मधुकर बिलगाना ॥ जैसे विन निरास अल भयऊ । तैसे माया लोभित पछतयऊ ॥ चरण कवल गुरु प्रथम न सेवा । काल वस्य तब भयउ बहेवा ॥ 🕲 विपत परत को समर्थ चीन्हा । होय सुशील उपकारसो चीन्हा ॥ अनचीन्हे विपत जो होय सहाई। तो तेहि जानिय समर्थ सांई॥

कवीरक्रणगीता. (९४) दोहा--सत्यकवीर मोहि अनचीन्ह, सियरे पश्चिय नाहिं ॥ कविलमुनि भज गाढे कबीर, छोड़ाय लीन्ह जमपाहीं ॥ वाघ निरंजन काल कसाई। तेहि मुख ते लिय किपल छोडाई॥ किपला गऊ किपल मुनि कही। सतकबीर सो समर्थ अहहीं॥ उतर विवान आव सत सीसा । विष्णु व्यास सुख कपिलसिरदीसा 🛚 । स्तृति कीन्ह सिंहासन सारा । कंचन भर ले चरण पखारा ॥ महाप्राण कहँ दीजे अज्ञा । निराधार कबीर पूछिं ज्ञान विष्णु अरु व्यासा । छोटे बड़े सुनिहं विश्वासा ॥

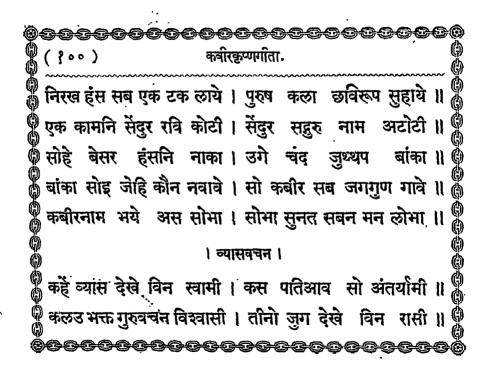
कवीरक्रणगीता. । विष्णुवचन । कहें कृष्णगीता मत सारा। पाठ कीय सुख लहे सो चारा॥ पाठ करें समुझे पंथ चाले । सत्तदयासो जिव प्रति पाले ।। आन जीवके रक्षा करई। ताके संकट साहेब हरई॥ अपनी रक्षा औरकी हानी। ऐसे चाल ब्रह्म अघखानी॥ कहें कृष्ण सुन व्यास प्रवीना । सुनो कथा निरगुणको चीन्हा ॥ दोहा-कहें कृष्ण कबोरसे, होय अधीन कर जोर ॥ कहिये कथा आदि उतपतकी, सत कबीर बंदीछोर ॥

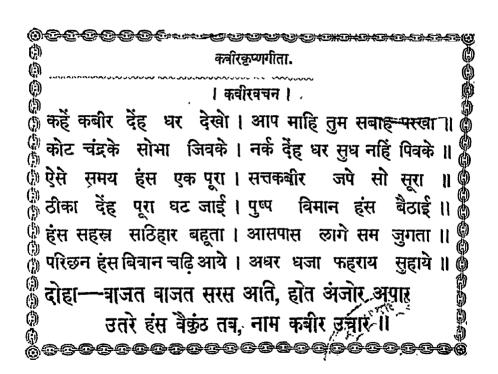


कबीरकृष्णगीता. त्रितय सहजशील निरबाना। चौथे क्षमा संतोष बखाना॥ पंचय निरंजन छंठये भवानी । सतयें जोगजीत जम हानी ॥ अंठये धीरज नवें शचि भाउ । दसयें दया दीनता आंऊ ॥ एकाद्से सत सुकित नामा । द्वाद्श दुरमत नाम निहकामा ॥ त्रेदस आद कुम निरमाऊ । चतुर्दश जलरंग झलकाऊ ।। पंचेदस सो प्रेम प्रमारथ। षटयेदस अचिंत पद सारथ॥ कहनकी छोटा। सत्रह सुतसे काल अटोटा॥ श्रवदास सोरह सुत एक पुत्री वामअंगी । देख निरंजन प्रेम उमंगी ॥ जाहे सुत जो दीय दिय स्वामी । पुरुष आज्ञा बैठे सब धामी ॥

क्वीरकृष्णगीता. (९८) निरंजन थरहिं अकुलाने । चौंसठ जुग छिन सेवा ठाने ॥ देख अष्टंगी काल ललचाने । होय अधीन बहु विनती ठाने ॥ दीन्हो लाय संग अष्टभुजी । मानसरोवर राज करोजी ॥ अस जिवरा ताही केंहँ दीन्हा । पारस स्वास विस्तार जो कीन्हा ॥ दोहा—उठी अवाज पुरुषकी, मानसरोवर जाहू । बांये दहिने जिन हेरहू, सन्मुख होय सुख लाहु ॥ अमर चोलना जीवको दीन्हा । बिसरिहं निहं जिवपुरुष परवीना।। चले निरंजन आज्ञा पाई । मानसरोवर मानसरोवर हंसानि रहहीं। अद्भुत चंद्र सूर्य छवि छहहीं॥

कवीरक्रणगीता. गाविह सब मंगल अति प्रीती । होय झनकार अनाहद रीति ॥ एक २ हंसनि छवि अनलेखा । अमरचीर काछे बहु भेषा ॥ पग अंगुली नख चंद्रकी खानी । तरवन रित शारी जुण्य लोभानी ॥ जंघ नाभी कटि चंद्रकी रासी । उरसर कंमल नाल बिनु भांसी ॥ चंद्र सूर्यकी खान हंसनी। मुखछविनिरख अकह सुख हंसनी॥ शोभा कौन हंसनि छवि कहऊँ । उपमा सरिस न कछु जगलहऊ ॥ नित आरती समान सरोवर । लोककी नार नर्क न्यारा घर ॥ तहां हंसनी सुबुद्धि सयानी । शोभा अमल चंद्रकी खानी ॥ मांग टीका पटवासी संदर । चंद चौथ बिधु अद्भुत दिनकर ॥





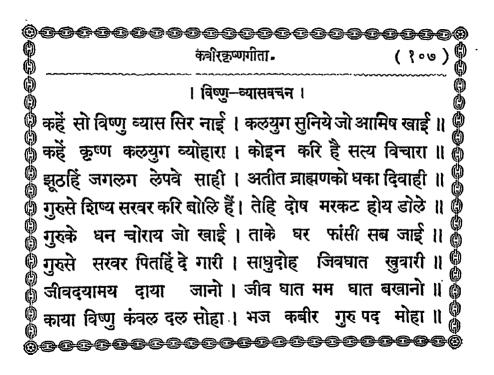
(१०२) कवीरक्रणगीता. आये हंस वैकुंठ को जबहीं । अद्भुत चंद्र सूर्य उगे तबहीं ॥ चला हंस कबीर प्गु पारा । मस्तक पग दीन्हा बल भारा ॥ सकल हंस परिक्रमा करहीं। कबीर चरण रज सिरपर धरही॥ ! हंसवचन । कहे हंस कबीर यम बांचे । विना कबीर काल घर नाचे ॥ सद्गुरु मोकंहँ दीन्ह परवाना । सत्तकबीर सम गुरुकंहँ जाना ॥ यम त्रिण तोंड काल मुख भूका । पाय प्रवाना झगरा चूका ॥ सरगुण त्रिविध झगरा लागा। तैंतिस कोट देव सब भागा॥ जेहि पूजहु सो कछु भल माने । बिन पूजे सब झगरा ठाने ॥

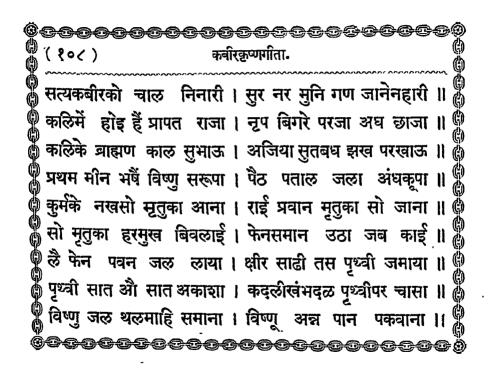
कवीरकृष्णगीता. भक्त अधारा । जप कबीर यमराजिहें छारा ॥ दोहा-धन्य कबीरको नाम है, धन्य कबीरको शरण। जो कबीर हो लावे, ताको जरा न मरण ॥ चरण टेक चले हंस सुजाना । सत्यकबीर कहत घर ताना ॥ पुन वैकुंठ भये अधियारा। बोले कृष्ण धन्य करतारा॥ सत्यकबीर जन गुप्त होय फिरहीं । तिनके दास ऐसे सुख करहीं ॥ सबे देव विनती अनुसारा । ले चलहू जहां अस उजियारा ॥ । कवीरवचन । कहें कबीर सत्यलोक जो जाई । अस उजियार जो तोहि मिलाई ॥

क्वरिक्रणगीता. 808) —कर्म भर्म सब त्यागे, त्यागे जगके आस । सबमहँ एक ब्रह्म लिखि, कबीर भजन सुखरास ॥ सबे कहें मोहि दीजे पाना । यमसे जीव बचजाय ठिकाना ॥ कहें कबीर सुनो सब कोई । सद्गुरु सेय मुक्तफल लेई ॥ कहीं सो करों सबहिं तब तारों । जन्ममरण दुख दारुण टारों ॥ सबे देव सुमरो रामके नामा । छाडो भूत प्रेत अघ कामा ॥ जो जाको गुरु रामसो ताही । गुरुविन राम न तारेउ काही ॥ करहु भक्त दाया सत ठानी । अंस पृथ्वी तन घर भर नामी ॥ कर नित संतनकी सेवकाई । हृद्य कबीर नाम जौलाई ॥

कवीरक्रणगीता. निरगुण सरगुण एक समाना । बीज वृक्ष विस्तार बखाना ॥ मुखमंडन पितु मातु जथाई । हृदय प्रीत पिव सद्गुरु सांई ॥ जो कोड भक्त करे गुरुसेवा। सेवा भक्त सार पद लेवा॥ अमृत सेवे अमृतफल लेई। विषतरु सेवे विष मिल लेई॥ अमृतफल गुरुराम कबीरा। आगे तारव पुण्य शरीरा॥ बिन कौडी सौदा मिल नाहीं । गुरु बिनको गहिहै पुन बांही ॥ गुरु सोई जो अंतहु मीठा । जन्ममरण सब लागे सीठा ॥ दोहा--जन्ममरण सरग्रण ग्ररु, निरग्रण अजर कबीर । शरण कवीरके जो गहे, सो बहुरन धरे शरीर ॥

0222222222222	Š.
ी (१०६) कत्रीरकृष्णगीता .	
🔋 कथा प्रसंग कहा मुनि व्यासा । भक्ति मुक्ति महिमा प्रकाशा ॥)
🖟 भक्त मुक्त पंथ सत दाया । सत्यनाम भज अम्मर काया ॥ 🧯)
🖣 कहें कबीर सुनो विष्णु व्यासा । सत्यकवीर जपो हर स्वासा ॥	ì
🖔 आद अनादिको नाम कबीरा । कल प्रगटिहं अघ नासन हीरा ॥ 🖁)
🎒 अब तोहि अंत खोल हम कहा । सत्यकबीर जप कलि निरवाहा ॥ 🖁	j
🕅 ताहि न देउं मैं पान प्रवाना । जो जीवघात आमिष भष जाना ॥ 🧯)
🖁 दोहा—महापुनीत पवित्र जिव, ग्ररु भक्ता सोंइ संत l 💢 🧯)
🏮 पर आपन जिव एक लखें, ताहि कवीर मिल केंथ ॥ 🧯) 1
() 	:





कवीरकृष्णगीता. जो मीन देंह पूरण कर सेवे । जलमह भात डारि कर सेवे ॥ ताके संतत भक्त गर होई। पूजे कछु सुख पावे सोई।। विद्वल ब्रह्मरूप है मोरा। बावन नरसिंह राक्षस बल तोरा।। परस रामचंद्र सो हमही। कृष्ण बौधानिहकलंकका जबहीं॥ नारद व्यास औ सबमें वासा । रजगुण तमगुण सद्गुण वासा ॥ चौथा रवासा कबीरको दासा । स्वासा पार सतपुर बासा ॥ पंचये निरंजन जिव घटवारा । कबीर मोहर लख पार उतारा ॥ जो नहिं भये कबीरके दासा । ता कंहँ काल निरंजन ग्रासा ॥ 🖣 पुण्य लीन्ह रस चूस जिव केरा । पुन्यमान जस तरे घिव मेरा ॥

(880) कवीरकृष्णगीता. पापिहिं डार दिये यम खाई । जार खोर चौरासी भ्रमाई ॥ पाप पुण्य महँ नाहि उबारा । दया सत्त परमारथ सुधारा ॥ नाम कबीर प्रताप उबारा । कीतम नाम जपेउं यम मारा ॥ आद नाम कबीर दुखहरना । क्रीतम त्रिगुण नाम तप मरना ॥ जन्म मरण दुख बहे जंजाला । जन्म मरण झरकावे काला ॥ वेहि दुख कबीर गुरु पगु गहा । सत्यकबीर जप हंस निरवहा ॥ सरेपुण श्रेष्ठ विष्णु अधिकारा । निर्मुण सत्यकबीर जिव तारा ॥ निर्गुणे भक्त बिना जमलूटे। निर्गुण बिना न संशय छूटे॥ 🖣 नकरु तिर्गुण कहिये निराकारा । तिन तो जीविह कीन्ह खुवारा ॥

कत्रीरक्रणगीता. (१११) निर्गुण मन यम अंसा । तीजे घरती साध निहसंसा ॥ चौथे निर्गुण नीर लखाया। पंचये निर्गुण पवन बहाया॥ छठयें निर्गुण गगन बखाना । सतयें सत्यकबीर निरबाना ॥ आतम पवन और तन आदी। सो राम कबीर का नादी॥ नांद निरंजन नांद अष्टंगी। नांद सुरति सोहंग तरंगी॥ नांद् पुत्र शिष्य गुरु मुख जाये । विना शिष्य कस सुख कहाये ॥ सीखे सुने शब्द केहँ खोजा । जहां सांच ताके भये सोजा ॥ असल सांच एक कपटी दूजा । असल बोलता तर्ज अम पूजा ॥

कवीरक्रणगीता. (११२) दोहा-असल मुरति साहेव का, नर सुरत अनुहार ॥ सबै रूप तन भासे, जोत युंज उजियार ॥ नख सिख विमल सुठ अति लोना। अधर सिंहासन अंकित भवना॥ सिंहासनके अधर सकल सब । अधर सिंहासन सत्यकबीर जपा। जाके दस्त पयाना लहजीऊ । कहे कबीर ताके सोइ पीऊ ॥ पुरुष सरूप मह इंस कड़िहारा । पहुँचे इंस पुरुष दरबारा ॥ कंचन पृथ्वी हंस सब रहहीं। निजरदीप सबे सुख लहहीं॥ **जेते अंस प्रगट होय आवा । घर सरूप सो नाम धरावा ।।** पुरुष अमान सील के खानी । समर्थ नाम अकह सो जानी ॥

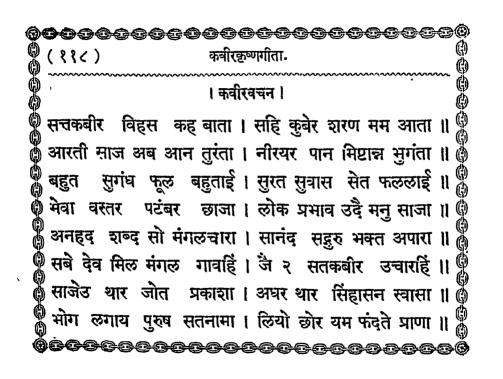
कवीरकृष्णगीता. सबे नाम है साहेब केरा। अकह नाम सो हंस निवेरा॥ अकह नाम सो सद्गुरु भाषा । सद्गुरु सब पूरण अभिलाषा ।। जासों डोरी पुरुषकी पाने । सत्पुरुष सम तेहि चितलाने ॥ गुरुवा कपट कराहीं । सीखिंह शब्द सिखावत नाहीं ॥ कपटी गुरु जो शब्द न देई। पूजा पाठ लेख पुन लेई॥ पूछे शिष्य तब ज्ञानके बाता । पूजा थोर कोध गुरु ताता ॥ गुरु सो जेहि अस कत सिष भाऊ। पूजे बिन पूजे एक ताऊ ॥ पूजा लेय पुनि राह बतावे । अमरलोक ले जिव पहुँचावे ॥ अकह कथा को गम न पावे । सो सहुरु कबीर समुझावे ॥

कवीरकृष्णगीता. (११४) जे शिष्य बहुत गम्य कर बोले । गुरुकी सेवा करे दिल खोले ॥ मात पिता को सेवक जो सुत । सोइ सपूत जो गुरु सेवा ज़ुगत ॥ दोहा-सेवा देवा लेवा करे, पखलधार तब जान ॥ यह सोई जो ज्ञान दे, सेवक सेवा ठान ॥ सेवक होय करे गुरु निंदा । ज्ञान पाय कहे गुरु दाहनबिंदा ॥ चेला गुरू पूंजी दे खोई। गुरु बिन सेवा लाभ न होई।। । कवीरवचन । दोहा-कहें कबीर सुन देव मुनि, कृष्ण कपिल मुनि व्यास । तुम सब सेवो साधु ग्ररु, छोड़ धर्म विश्वास ॥

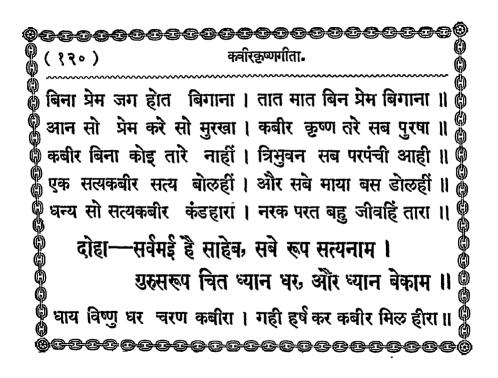
कवीरक्रणगीता. धर्म विश्वास कालकी फांसी। प्रेत भूत आस दुखरासी॥ गुरु तज सकल आस दुखखानी । गुरु विन नर्क परे अभिमानी ॥ ्गुरु सोई जो अंतहु मीठा। जन्म मरण गुरु लागे सीठा।। । सकल देववचन । सकल देव उठ चरण मनावा । श्रीहरि बिलख गलताव सुनावा।। हम सब परे निरंजन फांसा । सत्यकबीर काटे यम त्रासा ॥ जन्मत सरत बहुत दुख पावा । अब कबीरके चरण चितलावा ॥ यनसे एक तुम राखन हारा । कन्नीर वांचे सब यमके चारा ॥

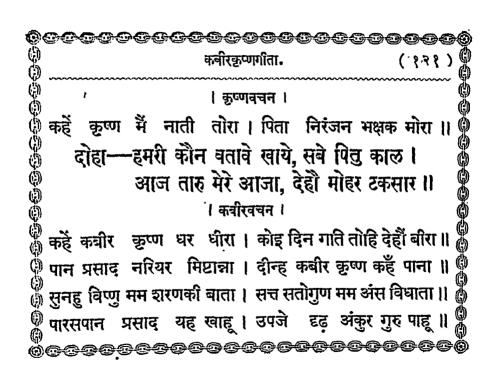
(११६) कवीरक्रणगीता. । कबीरवचन । कहें कबीर तुम सब तन धरहू । कितम देंह हारे सेवा करहू ॥ अमृतदेंह अमर घर जाई। क्रितम देह घर छार समाई।। सत्य देंह इंसके संगा। सत्य देंह विदेह प्रसंगा॥ अब सुनो ज्ञान पान परचाई । थित पान दे लोक पठाई ॥ उठे कुबेर हरिपद लपटाने । सत्य कबीर गुरू करन सो ठाने ॥ कृष्णवचन । कहें कृष्ण पुलकित होय वाणी । सत्यकबीर सहुरु सुखदानी ॥ 🧣 कोट जन्म तप पुंज जेहि होई । सतकबीर कंहॅं सेविह सोई ॥

कवीरकृष्णगीता. हर्षित हरि आज्ञा पाई । कबीरके सन्मुख महिपर घाई ॥ कहें कुबेर सीस महि लाई। आद पुरुष कबीर प्रगटाई॥ । कवीरवचन । कहें कबीर तुम हरि गुरु भजहू । तजहु कुपंथ आमिख भष तजहू।। देवता आभिख लेय मधुवासा । और आमिख बहु देव गरासा ॥ । क्रवेरवचन । कहें कुबेर मोहि आपन करहू। दे परवाना कर्मज सकलके । तीन लोककर भक्त न कलके॥ तुमही कर्ता मूल तुम्हरे अंस जीव सब स्वामी । निरंजनके मूल तुम अंतर्थामी ॥



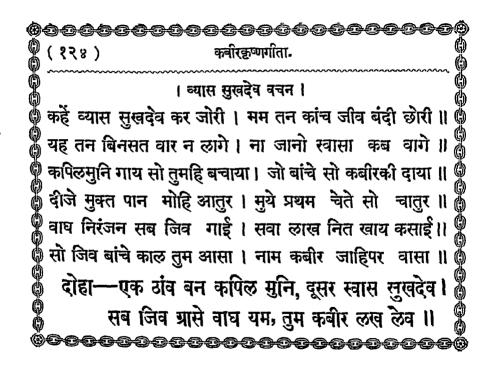
क्वीरकृष्णगीता. यमराजा सो त्रिण नोंडाई। काल मूतके मुंह भुकाई॥ शब्द वाक्य कह दीन्हों बीरा | सुरति सनानी सत्य कबीरा ।। ुतुळसीमाला । दीन्हे तिलक सर्व सुखचाला ॥ चरणामृत कहिं सिखावन दंडवत गुरु साता। तीन दंडवत साध पितुमाता।। रिहय गुरुके चरण लौलीना । रामनाम गुरु साधुहिं चीन्हा ॥ केतो पढके निडर रहई। गुरुकी भिक्त सबे निरबहई॥ पढा देवता दया जेहि हिये। दयाहीन यम कातर दिये॥ गुरु सिवाय कछु आस न किये । सहुरु भज सतलोक पगु घरिये ॥ सद्गरु सत्यक्बीर निज नामा । जहां प्रेम तंहँवा गुरुनामा ॥

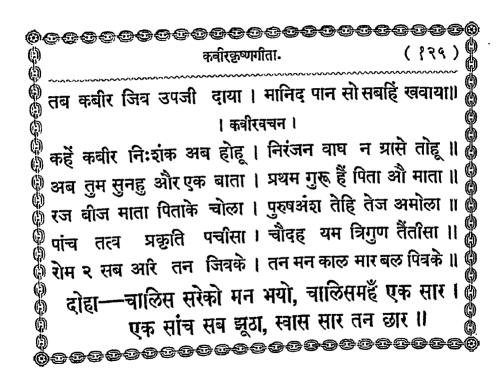




(१२२) कवीरकृष्णगीता. पान प्रसादके अस प्रतापा । जन्म २ को मिटही पापा ॥ रहे मान कन्या वर जैसी । मनीह मनावे सेंदुर चढ़ तैसी ॥ विना लिखा सोइ मानद आना । चरणामृतसे हंस निरवाना ॥ जब लिख वीरा दीन्ह पुन जाही । पूरा शिष्य सद्गुरु पंथ माही ॥ दोहा-सबे देवता दसकत, मोहर सत्यकवीर । विना मोहर सुळतानको. माळ न लागे तीर ॥ जिन वनजारे लीन्ह प्रवाना । मोहर देख घटैत भय माना ॥ दोहा-कहें कबीर कृष्णसे, मनमो राखो धीर । आगे वीरा देव तोहि, हमार अंस तुम बीर ॥

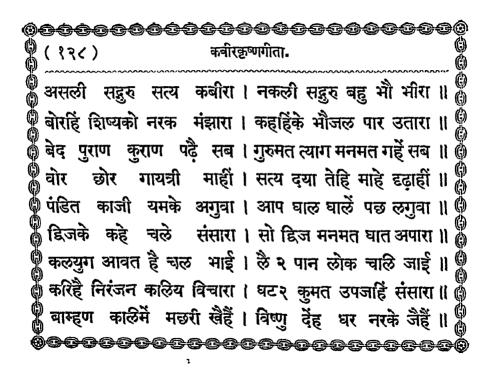
कवीरक्रप्णगीता. (१२३ । व्यासवचन । कहें व्यास कबीर हर वंसा । सबके मूळ कबीर निहसंसा ॥ अपने मन सब सहुरु चेला ।सहुरु शिष्य जेहि नाम पान मिला।। हम सब सहुरु निंदे मुनिजेते । सबके सहुरु कबीर गति देते ॥ रिव प्रकाश भौ तिमिर नासा । क्रीतम त्रिगुण तिमिर तन भासा ॥ निर्गुण भक्त प्रकाश रवि जाना । निरगुण सरगुण माहि समाना ॥ निर्गुण स्वासा सरगुण देंही । यमसे बांचे कबीर सनेही ॥ । कवीरवचन । दोहा—कहें कबीर हम सब घट, राम रूप तन स्वास । स्वासा पुरुष नार तन, स्वासा त्रिकसत न नास ॥





कवीरकृष्णगीता. (१२६) गुप्त प्रगट दस इंद्री लखहू। पचीस प्रकृती तैंतीसा भाषहु॥ गुणभा तीन मिल्ले अठतीसा । अद्धा अंस एक मन दीसा ॥ भाउं न चालिस चालिस जीऊ । जीवके सत्यनाम है पीऊ ॥ जीव अमर सो अमर कबीरा । सत्यकबीर मुक्त मन हीरा ॥ मरे तत्व औ गुण प्रकृती । अमर सो इंस पुरुषको रीती ॥ पांच अमीके काया बाहर । अमरलोक आसन तेहि ठाहर ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश जग अधपत । अधपत की मत क्रीतम मलगत॥ निरंजन पुनि तन घर मरऊ । ऊंच नीचे बहु कीतम कियऊ ॥ अजब दिल निरंजन नांऊ। नाना रंग बसाये

कबीरकृष्णगीता. (१२७) अहंकार बस राहु अलाहू। ताते कोइ न पावे थाहू॥ कुमत कुसंग कोघ अघ चाली । ये सब बिकट निरंजन माली॥ आप निरंजन अल्लह कहाये । अजाजिल्ल एक और बनाये ॥ दुनिया अजजिल्ल जग जानो |असल अजाजिल्ल प्रमुको मानो॥ तुरक अजाजिल्ल हिंदू धर्मराई । है भक्षक रक्षक नहिं भाई ॥ आप अजाजिल्ल अल्लह कहलावा। अलह अलाहकी रूह छिपावा।। जीव का करे काल छल कीन्हा । जीव भुलाने खसम न चीन्हा।। जीवके खसम सो अमर कबीरा । बिन परचे धरे जार गंवारा । सद्गुरु खसम सो अमर भतारा ॥



कवीरकृष्णगीता. निरंजन रूप मलीक्षा । गऊ विप्रहिं दुख देहिं अदीक्षा ॥ बड प्रपंच करिहैं जित्र लागी । अनंत रूप घर नट बट पागी ॥ दोहा-चोरो और छिनारी, आमिष मप जिब घात । यह सब करिंहें निरंजन, जीवन बड उतपात ॥ काजी रूप निरंजन पांडे। एके वाल दोऊ घर भांडे।। विप्णो दुतिय दृवे । त्रिविध तिवारी पांडे चौबे ॥ छठये सतये अठये नौवे । दसये दस प्रकार द्विज सोमे ॥ नारी प्रमोधा । दसमें दस द्वार जिन सोधा ॥ अठवें अप्ट कमल जो भिन्ना । सतये सत्य वाक गहि लीना ॥

कवीरकृष्णगीता. (१३०) षडस त्यागे भाई । पार्डे पचये वेद पढाई ॥ चौबे चार वेद जो राता। तिवारी त्रिगुण देव मगु माता॥ दुबघा दूर वहावे। एक असल सत्यनाम समावे॥ एक सो जन कबीर विष्णो मत । दयाशील पातिपाल अगतगत ॥ । व्यास सुखदेव वचन । कहे सुखदेव न्यास कर जोरी । कहहू चौरासी केतिक खोरी ॥ । कबीरवचन । कहें कबीर सुनो सब कोई। चार खान चौरासी लक्ष होई॥ नै। लख जलमो जीव समाना । चौदह लक्ष पंछी परवाना ॥

कवीरक्रणगीता. कृभि कीट सत्ताइस लाखा। तीस लाख स्थावर चार लाख मानुष तन जाना । मानुष देह परमपद जाना ॥ चार खान अब सुनहु व्यासा । चौरासी चार निरंजन फांसा ॥ अंडज पिंडज ऊष्मज अंकूरा । चार खान जिव एकहिं पूरा ॥ पुरुष दीन्ह जिव अम्बर चाला । इच्छारूपी उड़ुगण खोला ॥ सौ चोला को निरंजन पैन्हा । नरक कलमा काया जिव दीन्हा ॥ भये असतो निरंजन जबते । आनके आप लियो अब जबते ॥ कुमत असत जित्र घात निरंजन । जित्र पालक सतनाम सो सज्जन ॥ अ।पन जनमल ताहु दुखदाई । त्रियसुत ।नेराकार निज खाई ॥

′१३२) कबीरकृष्णगीता. जीव कैसेके बांचे । सत्यनाम विन यमघर नाचे ॥ । विष्णुत्रचन । उठके कृष्ण केहं कर जोरी । कल भखमीन कौनगीत मोरी ॥ मानरूप है विष्णुके स्वामी । जीव मक्षक के कस गत कामी ॥ ॥ कबीरवचन ॥ कहें कबीर सुनो भगवाना । मीन भक्ष गउघात निदाना ॥ परनारीरत नरक अघोरा। लोहू पीव सिष्टा मह बोरा॥ द्वादश तेहि योजन भौसागर। भिष्टा मूत्र कृमि दत्तागर॥ नरक को कुंड सात यम कीन्हा । घोर नरक भौसागर चीन्हा ॥

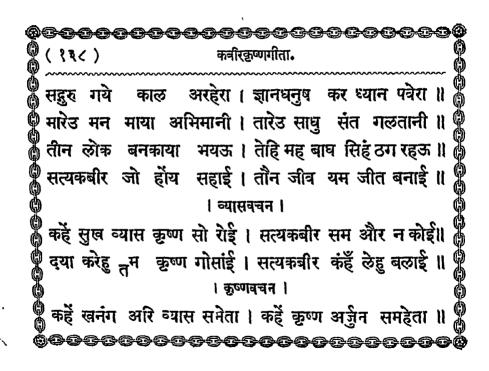
क्वीरक्रणगीता. भिष्टाकुंड ॥ १ ॥ मृत्रकुंड ॥ २ ॥ राबीकुंड ॥ ३ ॥ रक्तकुंड ॥ ४ ॥ रवरवारकुंड ॥ ५ ॥ नासिकामलकुंड ॥ ६ ॥ घातकुंड ॥ ७ ॥ सुनहू आठे अभिकुंड ॥ ८॥ पांच सौ तेरे बडे मुंड ॥ पांच सो योजन चकराई भाई । लक्ष योजन के है गहराई ॥ भौतागर का भंवर भयावन । बूडे पापी अधिक अपावन ॥ राम चीन्ह पुन चीन्हे नामा । सत्यनाम सो सुखके धामा ॥ सत्यनामको वेद न जाने । निराकार कह वेद बखाने ।। निरंजन के स्वासा ते आये वेदा । आगे कैसे जाने मेदा ॥ 🖫 वेद नीत बहु विमल बखाने । तांत्रिक घात मुनी मन जाने ।।

(१३४) कबीरक्रगगीता. दोहा-वेद मते वैकुंठ मिल, दया भाव सतसंग तांत्रिक नरक बुडावे, वैदिक रामप्रसंग ॥ परे बाढ़ मछरी जस भाई। सालिता बूडे मीन उतराई॥ पलटत पानी चले जो मीना । परे सालिल नीको तिन कीन्हा ॥ देहिं लोभ चारा बहुताई। परे फांस मन मति अरुझाई॥ यह विध सिरजन बढ जिव आये। यहां निरंजन कीर बझाये॥ छिन सुखदे सब सुख हर लीन्हा । अम्मर जन्म जीव नहिं दीन्हा ॥ कहा करों जो काल नसायो । विना पेयादा दाम न पायो ॥ कहें कबीर जो संतका द्रोही। निश्चय काल गरासे वोही।।

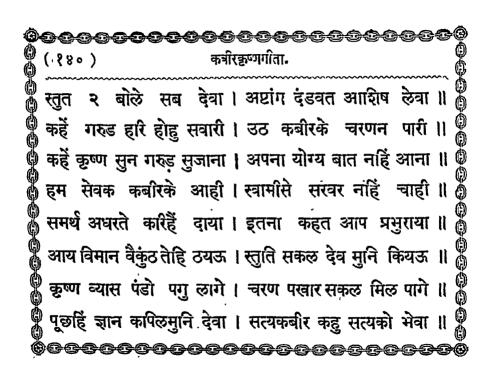
क्वीरक्रणगीता. कोटिन जीव वधे कर पापा । तेहि जो अजिया सुख एक खापा ।। अजियासुत दूध भाई दोई। सो सांचा जिन शब्द बिलोई।। सहुरु शन्द लखे आरे हीता। सब मक्षक एक सहुरु मीता जो जेहि काटे से। तेहि मारे । मारन छल तेहि काल सुधारे ॥ कोट बालक वधे एक त्रिया घालक ।कोट त्रिया वधे पाप एक गायक।। कोट गाय वधे एक झख खाई । झख मछरी कोटिन बुधताई ।। कोटिन पाप बसे तेहि माही । विप्रघातसम पातक कोट विप्र वधे विष्णव एका । विष्णव वध होय पाप अनेका ।। जीवत महितन भरत प्रतमाला । तब तक नरक भोग बस काला ॥

, \$38) कवीरकृष्णगीता. मानुष तन धर भक्त न कीन्हा । भक्तही सद्भुरु भक्त प्रापत जिव होई। कहें कबीर सतलोक गये सोई॥ सद्गरु भक्त प्रापत बडभागी । बड़े भाग्य बैरागी अनुरागी ॥ जन्म अनेक तब पुण्य कमाई । होय मास वासी सो जन्मे आई ॥ वनवासी न करे विवाहा । काहु पुरुष मुख दृष्टि न बाहा ॥ सात जन्म जो सततन राखा । तब सो सच्च पुरुष पत भाषा ॥ सात जन्म सो पियासंग जरई । तब् सो पतिव्रता औतरई ॥ सात जन्म पतिव्रत कमावे । सत्तभक्त कर सद्गरु सात जन्म करे गुरुसेवा। तजे आस सब देवी देवा॥

कवीरक्रणगीता. तीरथ वस्तका तेजिहं आसा । गुरुके चरण केवल विश्वासा ॥ घात द्रोह तजे परनारी। आमिष तजे ले बिसम विचारी॥ हंसहि रंमर लोकहिं जाहीं । विष्णु सत्गुन गुरु तारहिं ताही ॥ सतकबीर हंसन गते होई। सत्यकबीर निज सद्भुरु सोई॥ गुरु सद्गुरु परमगुरु लोई । कहें कबीर अब गुप्त हम होई ॥ प्रगट होउं जब इच्छा तोही । मैं तो जात अबहि जग सोई ॥ एक बेर अब पृथ्वी जाऊं । यम सिर तोंड जीव मुक्ताऊं ॥ सब भिल सुमरो सहुरु नामा । छांडहु कीतम देय सो बामा ॥ प्रवाना । सद्गुरु सत्यकबीर निरवाना ॥ रामनाम सहरू



कवीरकृष्णगीता. सतनाम कबीरा । न्यारा व्यापक सकल शरीरा ॥ दोहा--- तुमहिसे सब प्रगटे, तुमते सब विस्तार। निराकार सिर मर्दन, सो कबोर औतार देहु दरश सत्पुरुष अनादी । तुव दरशन विन जरों ब्रह्मआदी ॥ प्रगट सत्यकबीर देहू दरशन । कहें कृष्ण मोहि पर होहु प्रशन ॥ कबीर दरश विन कृष्ण अधीरा । प्रगट भये तब सत्यकबीरा ॥ भौ वैकुंठ महा अघानी । पुष्प विमान चढि पहुँचे आनी ॥ भये सुवास वैकुंठ अंजोरा । सत्यकबीर देख चहुं ओरा ॥ अधर विमान उतर नाहें नीचा । आवत अमी सबनपर सींचा ॥



कवीरक्रणगीता. दोहा--श्रोता वक्ता कौन घर, जब नर आवे नींद । शब्द भिराजे कौन घर, पूछिंह कपिल मुनींद ॥ । कवीरवचन । सिद्ध जाहि दरवार महं, ब्रह्मरंघ्रके तीर I श्रोता वक्ता एक शब्द सुतसंग, सुनिसो कहें कबीर ॥ । कपिलमुनिवचन । कहें किपलमानि मोकहँ तारो । निरंजन वाघसो मोहि उबारो ॥ हृद्य जिपहों तुहारो नामा । जेहि दिन यमसो छोरेहु प्राणा ॥ अव मोहिं करहु निकटक स्वामी। देहु पान प्रभु अंतर्थामी॥

(888) कवीरकृष्णगीता. आरती पान शरण लौलाई । आदि अंत डर देहु छोड़ाई ॥ मोहि उबार सबनको तारो । काल मेट निज हंस उबारो ॥ । कवीरवचन । कहें कबीर कपिलमुनि सेती । देके छोड़ लेय बदनेती ॥ कोइ दिनके आगे होय ऐसा । तुम कपिल मुनि भाखेहु जैसा ॥ अब तुम पान लेहु त्रिण तोरी । लेव कालके मुखसो छोरी ॥ तारों सब जिव सहज सहज ते । सो पशु पंछी भूंग नर जेते ॥ सहज आरती कर दीन्हो पाना । भयउ मुक्त कपिलमुनि जाना ॥ चरणामृत सीत प्रशादी । लियो कपिलमुनि भक्त अराधी ।।

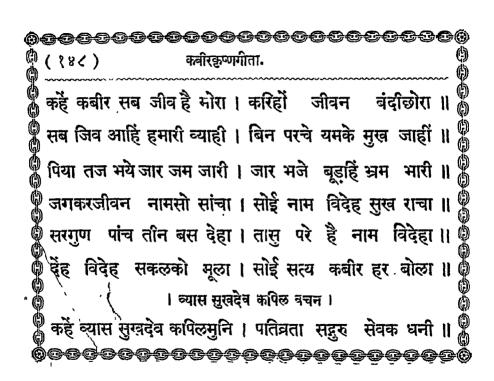
कवीरकृष्णगीता. मगन भये सब संशय नाशी । सत्यकबीर मिले अविनाशी ॥ कहें कबीर सुनो कापिलमुनि । हमरे नाम सुरत लायो धुनि ॥ हमरे नाम जप काल न पाई । हमरे नाम बिन काल चवाई ॥ जैसे रावण तप ।नित कीन्हा । दशशिर काट शिवहि नित दीन्हा।। मगन भये सेवा वश रुद्रा । दियो लंकागढ़ खाही समुद्रा ॥ की नहों कैद रावण सब देवा । सबै देव करें रावणकी सेवा ॥ रावणके मन गर्व सुहाती। एक छख पुत्र सवा छख नाती॥ दश शीश बीस भुजा लख गाजा। कहे रावण मोहि सम को राजा ॥ करता गर्व करे सो छाजा। सो करता संतन पगु माजा।।

(888) क्वीरक्रणगीता. कहें कबीर जिन कियो गर्व छल । सत्य भक्त बिन परे नरकमल ॥ रामचंद्रसो ताहि हताये। सब परवार रिष नगर रिताये॥ बांचे भक्त ठांन बिभीषन। हंकारी प्रले भो सब जन॥ तस छल गर्व निरंजन कीन्हा । जोग जीत तबहीं शिर छीना ॥ ताते भक्त करो मन लाई। सत्यनाम भज सब सुखंपाई॥ 🖫 रामचंद्रके हृद्य कबीरा। कृष्णके शीश गंम्हीर कबीरा॥ ताते राम कृष्ण जग जीता। नाना रंग जुगन जुग कीता ॥ सतयुग त्रेता द्वापर माही। थाड़े पाप बहु पुण्य कमाही॥ 🖔 🦁 कलयुग पाप करिहैं बहु लोगा। सुख किंचित् ताते बहु रोगा॥ 🖁

कवीरकृष्णगीता. —ब्राह्मण औ संन्यासी, काजी प्रजा झार । सव होइहैं आमिषभप, कोटि माहिये न्यार ॥ कलिके भूप कहें गउ वंदा । प्रजा दुख दे आप अनंदा ।) तबलग भोगहिं राजू। जबलग दान पुण्य व्रत साजू।। पुण्यहीन नृपत जङ्जूङा । पुण्य घटे राजा बिन मृढा ॥ पुण्य कीन्ह बहुतै एक साकट । गुरु बिन सक्छ पुण्य भौ करकटा। किसंह पितवता बहु नाहीं। सती यती गुरु भक्त विरला आहीं॥ पतिवता विश्वा कलि गारी। विश्वा सो जो बहुत भतारी॥ दुनियाके पतिव्रता पत भजी । साधु सो जो पतिव्रत सजी ॥

(१४.६) कवीरक्रणगीता. गुरु सोई सो अंतह मीठा। जन्ममरण गुरु लागहिं सीठा॥ दोहा-पतित्रता सोइ जानिये, जो अपने पतिरात । - अपना पति सोइ जानिये, जो कहे अमरपुरवात ॥ अम्मर दुलहिन अम्मर वर चाही। जीव अमर सत्पुरुषके व्याही॥ सत्यपुरुष अम्मर अमरापुर । तहँवा काल जंजाल दुख दुर ॥ सोई पुरुष सत्यनाम कबीर हम । हमरे डर डरे निराकार यम ॥ कहें कबीर हमरे सब कीन्हा । ताकर तोहि बताऊं चीन्हा ॥ ्रिजाकर अंस दरद तेहि होई । गुरु बिन राखनहार न कोई ॥ गुरु सोई जो भौते न्यारा । नहिं कुछ जातपात व्योहारा ॥

कवीरक्रपणीता. विन पूजे सुख माने । पूजा परम भक्त रत जाने ॥ कृष्ण सुनो गुरुमतकी बाता। गुरु संत करता पितु माता ॥ सबके गुरु अमरापुरवासी । कलि प्रगटहिं डासा तन कासी ॥ दास कबीर सोई ततनामा । कहें कबीर हमरे सोइ कामा ॥ कहें कबीर बडा जो होई। होय गलतान प्रेम बस सोई॥ पेते गर्व करे छूंछेपर । गर्वके सीसा वा देखे घर ॥ छुंछे गर्भ बम्हा शिव कीन्हा । सत्यनाम लेखि सुरतन दीन्हा ॥ विष्णु सतोगुण कछु लखि पावा । ताते हमसो प्रेम बढावा ।। विन कबीर जिव कोइ न तारे। श्री कृष्ण यह वचन उचारे ॥



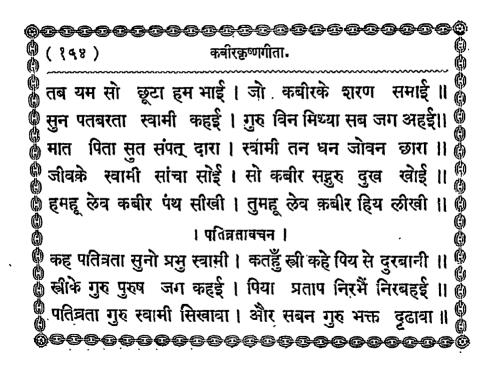
कवीरकृष्णगीता. । कश्चीरवचन । कहें कत्रीर सुन त्रिप्णु व्यासा । सुनहु किष्ठ मुनिपतित्रत भासा ॥ कुण्ह होय पतिवरता। पूरव कुर होय बहु भरता वेविचारी नाऊं। पतिवरता शुभ चार कमाऊं।। राजा एक रहो दुगपाला। ताके गृह जन्मे दोइ बाला ॥ कीन्ह च्याह दोनोंके ताता । बेविचारीके मन स्वामी नहिं राता॥ वेविचारीके स्वामी अनारी। कोहवर कछु न दीन्ह चिन्हारी॥ सुभिचारी पतिव्रताके स्वामी । मनमो तर्क कीन्ह गुरु ज्ञानी ॥ पतिवरताके स्वामी मन कहा । मैं जैहों देंसतर

कवीरक्रणगीता. तिवइ कीन्ह देहु कछु आजू । तब पुन होइहै दंपत काजू ॥ दंपति स्त्री पुरुषिं कहिये । गुरु विन मुक्ति कबहुँ निहं लहिये॥ गुरु सोई जो अंतह मीठा। जन्ममरण गुरु विन नहिं छूटा॥ कहें कुंअर सुन त्रिय पतिवरता । चिलिहे दिसंतर तुम्हरेभरता ॥ अपने हांथ खवावहु मोही । भोजन चीन्ह देउं भें तोही ॥ मोर नाम ले बहु नृप अइहैं । हमार नाम ले तोहि भुलैहैं ॥ दोहा-ताते कळु प्रशादके,मोकहँ आन कराव । जो आवें सो पुनि तेही, पूछिही भोजन प्रभाव॥ मुनतिहं दुलहिन विकल भई मन । स्वामीके पग गिर करणाकर ॥

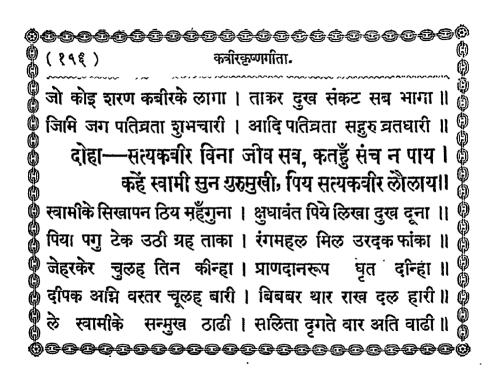
केवीरकप्णगीता. बहरि जोर युग कर युग रोई ।तुम विन मोहि रक्षक नहिं कोई॥ मोहि तिज पिया कितहु जिन जाहू। तुम विन मोर करे करे निबाहू।। मात पित बंधु परिजन जेते । पिय विन करकट दुर्जन भये तेते 🚇 सोहि त्रियहि गाडेहि चाहे डारी । केहि कारण पिय दिसंतर सारी॥ व्याह करन चाहे सब कोई। नारि निवाह करे कोइ कोई।। कहें कंअर सुभचार बेविचारी । सुनहु सुरत घर सिख हमारी ॥ कच्चा कली वन मधुकर योगू। तबलग मधुकर चिंताह वियोगू॥ हिं हमरी तुम्हरी सुग्त एक जानो। पिय गुरु वचन हदयपर आनो॥ किं नर होय नारीके रंग राता। तिनको कोइ न पूछे बाता॥

कवीरकृष्णगीता. १९२) नार सोइ जो कान न छोड़े । मर्द सोइ जो एकोन न छोड़े ॥ और काज हमरे कछ नाहीं । गुरु खोजन दिसंतर जाहीं ॥ गुरु विन काज कबहुँ नहिं होई । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर सम कोई ॥ करता आप जो तन घर आवे । तो गुरु बिन नहिं जग यस पावे॥ ना जग यश ना यमते छूटे । गुरु विन निराकार यम लूटे ॥ गुरु सोई जो निरंजन मारा । सो गुरु भौजल तारनहारा ।। अमरलोक ले जिव पहुँचावे । त्रिगुण त्यागले चौथ मिलावे ॥ सोई गुरु जो अंतह मीठा । गुरुते जन्म मरण सब छूटा ॥ ताते अब चित धीरज धरहू । मानहु वचन तुमहु गुरु करहू ।।

कवीरक्रणगीता. यह जीव है कहे सुघ घरकेरा । कहे वदे सतलोक जिवडेरा ॥ सत्यलोकते सब जिव आया । निरंजनके डहन समावा निरंजनसो अधिक जो होई । ताके सुमरण बांचे लोई ॥ जाके डर डरे काल निरंजन । परम जोत सो काल शिर मंजन॥ करणा मैं कहाय जग प्रगटे । तिनके त्रास निरंजन हटे ॥ सोई अचित सत सुकृत सहुर । सोई मुनींद्र त्रेता शुभ पग धर ॥ दोहा-सोइ समस्थ सत्यनामहै, तेहि प्रथम नाम कबीर। कलिके जिब तारन कारण, प्रगटहिं दास कबीर ॥ दास कबीर कलिमहँ कहाई। सत्यपुरुष जग प्रगटिहं आई॥



कबीरक्रणगीता. । ध्रुंअर वचन । कहें कुंअर हम तनके स्वामी । तुम अरधंगी व्याही वामी ॥ जीवके स्वामी सत्यकबीरा । तास शरण जिव व्यापे न पीरा ।। करणा में कबीरकी कला। कबीरके भक्त आद जे माला॥ जो कबीर कलियुग ना प्रगटे। चले ना भक्त काल न हटे॥ काल दोहाई कबीरके माने । और काहु यम नाहिं गुदाने ॥ बलि हरिश्चंद्र मोरध्वज राजा । जिनके सदा धर्म वरत साजा ॥ पांचो पंडव नरक गक्षो चाको । दानी करण महा अति बांको ॥ कहँलग कहों तिहुपुर धर्मधारी । छलके सबहिं निरंजन मारी ॥



वजीरकृष्णगीता. आज्ञा पाय घरडे पिय आगे । बरावर दुइ भाग किहु कुंअर सुभागे॥ एक आप लिय एक त्रिय दीन्हा । अर्पण कर पुन भोजन कीन्हा ॥ दे खरचा पुन वीरा दीन्हा । मुख जूठन कुल्ला तब कीन्हा ॥ भये संतुष्ट जूठन देव दासी । हर्षित लेहु जो मिलि अविनाशी॥ चरणोदक पुन प्रथमहि लीन्हा । महाप्रमाद तब भोजन कीन्हा॥ सुखसागर पिय दरश सुजानी । पिय विराहिन पियं दरश लुभानी॥ लोंग जायफल पान मिलाई। बीरा रच देइ पियाहें खंवाई॥ कहा कुंअर अब आज्ञा देहू । हम गवने तुव पतिव्रत छेहू ॥ यह सुन कुहकी मार धन रोई । कुहक सुनत धाय सब कोई ॥

(१९८) कवीरकप्णगीता. मात पिता कह कुँअर नवेली। गरे हार करु कुँअर चवेली॥ रोई आन दुख बूझ सयाना । कहें कुंअर नृप बोलिय आना।। इम कह परि ओर कछू धंधा । तुम सब के मन पापके संधा ।। कुंअर सो बुध जान सब बूझा । कहा बुझाय तबे सब सूझा ॥ दोहा-- ठांव २ सब रोना कहु, कुंअर सोइ अलसाय । पहिला भिन्न सार अगम पंथ, कुंअर घरे उठ पायं ॥ निकसा कुंअर सत्तगुरु आषी । गुरु कर फिर आयो अस भाषी ॥ निसरा कुंअर दिसंतर भारी । कुंअर जाग एक सर सेज पारी ॥ उठि अकुलाय अंगना भइ ठाढी । पियकी प्रीति अंतर्गत बांढी ॥

कवीरकृष्णगीता. माय बाप केहँ डांक जगावा । मम अभाग पिय तरिथ सिधावा॥ रोर करे दुलहिन पिय लागी । पियके बोल हिये उठ बृह आगी॥ सबे विकल होय रोवन लागे । कहें नृपत कस रोवह अभागे॥ पठवहु मानुष पर आती । कुंअर होय पितु बंधु जमाती ॥ धाय बहुत खोज नहिं पाये । नृपत समोघ कुंअर समुझाये ॥ पतिवरताके स्वामी पूरा । सर्बस माग चेताय तेहि सरा ॥ बेविचारी कर स्वामी कांचा । चीन्ह कछू नीहें बोळिस बांचा॥ वहां दिसंतर गयो कौने काजा । बेविचारी छिहे गौ दुतिय राजा॥ बारह वर्ष बीत जब पूरा । आन कुंअर आवत वाजे तूरा ॥

(१६०) कवीरकृष्णगीता. कियो चृपत सन्मान बहुता । कस तन ठहरे ताके पृता ॥ पहिले पहर तेहि कुंअर बुलावा । पतित्रता पट अंतर दियावा ॥ दोहा-पतिवरतासुं दुहि कहा, पूंछ कुंअरको वात । कौन वस्तु तुम खावो, पतिव्रता संग रात ॥ भगली कुंअर कहे भष भाता । बराबरी झकमास सुहाता ।। कहे पतिवता यह नहिं मम स्वामी। बिदाई नहिं कहूँ लसकर जाही ॥ यही भांति भूप बहु भगली । पतिवरतिहं ठग सके न नकली ॥ भूप अनेक कांक्ष बहु आये । हांथ न लगी जाहि पछताये ॥ नृपत पद पतिवता राती। पिय आज्ञा किया चहे पिय माती॥

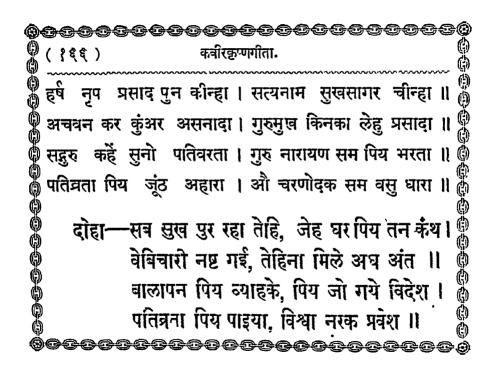
कवीरकृष्णगीता. गुरु करेको अंकुर कीन्हा । पुन पिये प्रति अबोझा दीन्हा ॥ जब पिय आवें देखों आखी । तब गुरु करों कबीर सत भाषी ॥ गुरु प्रतीत तुरंत मिल स्वामी । धन्य सद्गुरु गुरु अंतर्यामी ॥ बाजत गाजत आव बराता । सुनके क्रोध भयउं तब ताता ॥ तब पुत्री केंह्र गारी दीन्हा । धन सबेस नाहक खर्च कीन्हा ॥ सुना कुंआरे पिय करे अवाई । अधिक प्रीत कब पिय पद पाई॥ पिता पहां दुलहिन चाले गयऊ । पूछ पिता पुत्री कस आयऊ ॥ कहे पतिव्रता संभाषण करहू । नहिं तो द्रव्य सम गहना घरहू ॥ सुन पितइ पठय नौबारी। किहु सनमाने जेना धारी॥

' 4 8.2) क्वीरकृष्णगीता. बहुरि दीप बार कुंअरि बुलाये । माला तिलक झलक झलकाये॥ सतकबीर करुणा वे बोले । तब पातिव्रतते श्रवण खोले ॥ पूछे सुंदरी कहु नृपबारा। कोहवर जैवे कौन प्रकारा॥ परदा सात चदर देहु अंतर । निज पिया नाम जपहिं उरमंदर॥ कहें कुंअर जानीहें अरधंगा। दुइ बरा पायऊं एके संगा॥ यह सुन पतिव्रता पगु लागी । परदा सात भरमपट त्यागी ॥ परे चरण पिय छुये न ताही । पुछे विष्णव भये कि नाहीं ॥ कहे पतिवता यह मन आऊ । जिहि पियसो पग हो तेहि पाऊ॥ कहे कुंअर साकट जेहि नारी । तेहि संग बूडे पुरुष अनारी ॥

कवीरकप्णगीता. यह कहि कुंअर चला अपना दल । साक्रट हांथन उचित लेन जल॥ पिछे लाग चली पातिवरता । बहुर उत्तर दिन्हा तेहि भरता ॥ हम अब जात आह बरिआता । गुरु करव तो होन तुव साथा॥ कहे कन्या गुरुदेव बोलाई । हमहू शरण सत्यनामके जाई ॥ कहे कुंअर गुरुबंधु संग मोरे । तुरत पान लेहु तिनका तोरे ॥ भये जो मंगल अधिक उछाहा । तन गउवा मन जीवके व्याहा ॥ पतिव्रता कहे पियपद लागी । चल मंदिर मोहि करहु सुभागी ॥ तबलग मोर छुवा जिन खाहू। जो लाग मोहि गुरु शरण दिवाहू॥ सुनत वचन पतिव्रता केरी। पाऊं परे कुंअर पगु वारी॥

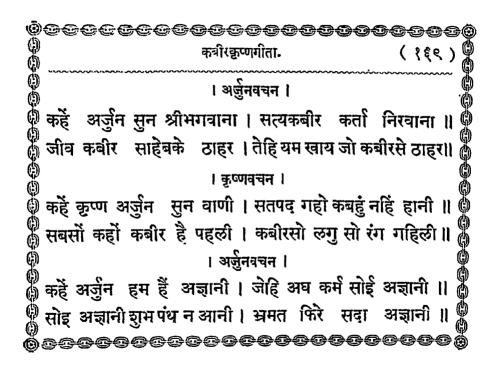
(83) कवीरकृष्णगीता. पतिवता गृह चल भौ स्वामी । हर्ष चले पाछे पिय बानी ॥ मंदिर जाय पलंग सुभ डासा । फूल विछौना अधिक सुवासा ॥ पलंग बैठ पिय वचन उचारा । परआतम कह दुन्हि अहारा ॥ दोहा-राजा कोन्ह सन्मान सब पुन, कीन्ह आरती साज । आरती होत सो मंगल, अनवन वाजन बाज ॥ सिंहासन बैठे कडिहारा । नरिअर मोर हंस निस्तारा तिनका जमते वेग तोडावा। दे प्रवाना जीव मुक्तावा पुन दे तिलक चरणोदक दीन्हा । कागते हंस रूप कर लीन्हा ॥ चरण टेक कीन दंडवत साता । सद्गुरु दियो सीस तब हांथा ॥

कवीरकप्णगीता. दिन्ह प्रसाद नारियर गरी । बहुर प्रसाद नवह देहु फेरी ॥ पुन सद्भुरु तेहि सिखापन दीन्हा । सदा रहहू पिय चरण अधीना ॥ पतिवता सुन शब्द सिखापन । गुप्त प्रगट एक ब्रह्म पुरातन ॥ सत्यनामप्रति पिय गुण जानी । पतिव्रता पिय पद लपटानी ॥ चरण टेक पियसो कह बाला । हमहु देहु पिय तुलसीमाला ॥ दीनद्याल दिय भेष गुरुसेती । कहा करहू प्रसाद सुनेती ॥ प्रसाद बनावा । सतसुकृतं कंहँ भोग लगावा ॥ पातिव्रता सदुरु कहँ पकवान पवाई । राजा निज कर बाव डोलाई ॥ पतिव्रता पुनि स्वामि जिमावा । नाना व्यंजन थार भरावा ॥



कवीरक्रणगीता. । कवीरवचन । कहें कबीर यह जीवके लेखा । ज्ञानी होय सो करे विवेका ॥ तैसे जीव केंहँ जार मुलावा । काल निरंजन जार लखावा ॥ सत्यनाम सब जीवके पीऊ । निज पिय ताहि न चीन्हे जीऊ॥ । कृष्णव्यासवचन । विष्णु व्यास विनवें कर जोरी । सत्यकबीर अगम मत तोरी ॥ सबके मूळ तुमहि सतनामा । सब जीवनके तुम सुखधामा ॥ कहें कृष्ण में कबीर बल गाजों । सद्गुरु चरण प्रताप विराजों ॥ अब ऐसी दाया प्रभु करहू। सब दिन तुम मम हृदय संचरहू॥

(१६८) क्वीरकृष्णगीता. जो तुम मम हिय करहू प्रकाशा । तब छूटे मम यमके त्रासा ॥ तुम विन को जिव राखनहारा । निरंजन जीवहिं करे अहारा ॥ कहा करों यमके डर दरपों । काल निरंजनके डर कंपो अब मोहि देह मुक्तके पाना । यम त्रण तांडे करह निरवाना॥ हम सब तुम्हरे जाप पोये। तुम जागे औ सब जग सोये॥ । कबीरवचन। कहें कबीर सुन कृष्ण मुरारी । निर्मुण भक्त करे तेहि तारी ॥ आद् अजर सतनामां। सद्गुरु सत्यनाम सुख्धामा॥



(१७०) क्वीरक्रमगीता. श्रीयदुपति मोहि दीन्ह चिन्हाई । तव हम कवीर पुरुप लख पाई ॥ दोहा-अर्जुन भीमाहि औ गले, भये युधिष्टिः टाट । सब देवन कुछ औ. ऋण भिक्त विनती करहिं अतिगाह।। । युधिष्टिरकृष्णवचन । कहें युधिष्ठिर ऋष्ण सनेता । सत्यकवीर तुम ऋषा निकेता ॥ अव मोहिं सबकेंहँ तारह स्वामी । सत्यपुरुष । कशरवचन । कहें कबीर सुन सांचा सोई। मोहि विन जीव तरे नहिं कोई॥ जाकर अंस ताहि दुख व्यापे । आनके अंत आन पहुँचोपे

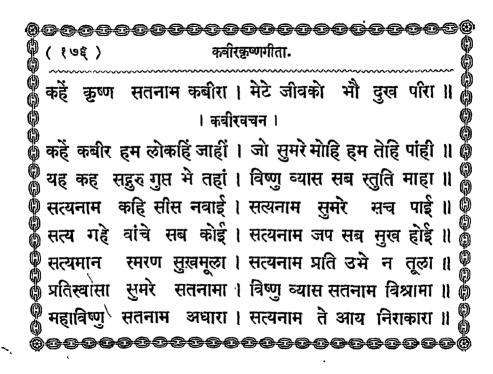
कवीरकृष्णगीता. कहें कबीर जीव अंसाह मोरा । छलके जार निरंजन चोरा ॥ जो सुमरे सत्यनाम गोसांई। ताके निकट काल नहिं जाई॥ । युधिष्ठिरवचन । कहें युधिष्ठिर दोइ कर जोरी । मुक्त पान दये जिव बंदीछोरी ॥ । कशीरवचन । कहें कबीर निज अंस प्रगट कर । सोई अंस विष्णु अंस मेलपघर ॥ आद अंत औ निर्गुण सरगुण । पांच पचीस औ चौदह त्रिगुण ॥ अजर अमर सो सबके मूला। जासु अंस सोहंग अंकूला। केदल ब्रह्म सोहगम जीऊ। रिमता सोहंग पै तन धीऊ॥

(१७२) कवीरकृष्णगीता. क्षीर मथे सो करे सुवासा । सो सुवास पर आतम पासा ॥ परआतम आतमके करता । सो सब मूल सकलके भरता ॥ सो सत्यनाम अमरपुर माहीं । सब जिव सत्यनामके आहीं ।। । युधिष्ठिरवचन । कहें युधिष्ठिर तुम सत्यनामा । सत्यकबीर संतन सुखधामा ।। परवाना अधम उधारो। पांचों पंडव कंहँ तुम तारो॥ । कवीरवचन । दोहा-कहें कबीर सुन धर्मसुत, आनहु आरती साज । देव प्रवाना मुक्तको, वेग करो जिवकाज ॥

कवीरकृष्णगीता. **€**⊌}) जाहु कुबेर पहँ तुम राजा । आनहु साज करो तुम काजा ॥ जाय कहा नृपपांह कुबेरू। आरती साज कबीराहि हेरू॥ लाय कुबेर सकल विध नामा । नृप साजले आय तुलाना ॥ आये समर्थ चरण मनावा। साहेब कीन्ह सबहिं सतभावा॥ कृष्ण कुबेर सो चौका सँवारा । जोत प्रकाश सिंहासन सारा ॥ श्रुब्द उचार अनाहद गाजा । ताल मृदंग झालरी बाजा ॥ सत्यकबीर तब नरिअर मोरा। पांचो पंडवके बंद छोरा॥ मगन भये प्रवाना पाये। आद सुरत सतलोक पठाये॥ क्रीतम सरत संसारे राखा। पुष्ट पुन घर गवन सो भाषा॥

क्वीरक्रणगीता. कहें कवीर प्रसाद वताबहु । सभदृष्टि पतिव्रतक मनाबहु ॥ रजगुण तमगुण भोजन तजह । सद्दुरु भोग नाम सत भजहू ॥ सतकवीर सिखवन दे सबहुं। सुमत विना कोइ तरेन कवहूं॥ प्रेतमक्ष तज देव मक्ष लीजे । सहुरुके चरण चित दीजे ॥ सहरु भक्त साघुकी सेवा। सक्छ आस तज देवी देवा॥ मजा चाहे जो कोई । तेहि पंथ गुरु हर छखे सोई ।। । भगवानोवचन । ्युघिष्ठिर सो भगवाना । तुम्हरी घरी शुभआय तुलाना ॥ ंसत जो सहुरु सेवा। सहुरु सव देवनेके देवा॥

कवीरकृष्णगीता. एकादश कोट देव विष्णु अंगी । हरसमेत भये सद्गुरु संगी ॥ दोहा-अागे पीछे सब मिल, लियो मुक्तको पान । ठीका पुरे सुखघर गये, सत्यकबीर व्रत ठान ॥ सत्यकबीरके सेवक पतिवता । सतकबीर सब अघके हर्ता ॥ कोटि २ जिन किये अपराधा । गौ द्विज हत्या अगम अगाधा ॥ केहु प्रकारकी हत्या होई। कोट तीर्थ किये छूटे न सोई ॥ जो जिव सद्भुर शरण समावे । सतकबीर सुमरे सच पावे ॥ जन्न २ अघजार नसावे । यम त्रिण तोड प्रवाना पावे ॥ धन्य सराहिये ताकर भागा । जो सतनामके शरणहि लागा ॥



कवीरकृष्णगीता. सत्यनाम सो सतपुरवासी। सतपुर अमरलोक सुखरासी॥ विद्यावेद पढ़िहं नर लोई। सत्य अमर कंहँ लखे न सोई॥ सत्य सुकृत जाके घट पूरा । सत्यनाम तेहि रहत हजूरा ॥ सबके घट महँ अम्मर स्वासा । सो सतनामको अंस सुवासा ॥ 👸 जीव सोहंग रमता थिर करता । भंग खाली कर खाली भरता॥ सत्यनाम सब महँ सोइ न्यारा । सोइ परम गुरु भो कंडहारा ॥ कहाये । पून गुरु तात मात बंधु भाये ।। सद्रुष सत्यनाम दोहा-सक्ल समाये रहे सो, प्रगट होहिं जंहँ सांच ॥ विष्णु व्यास सुखदेव कहें, सांच बिना जिव कांच॥

१७८) क्वीरक्रणगीता. सांथ सोई जो विनरो नाहीं। जठर योनि नहिं आवे जाई ॥ जब यम जीव कहँ सांसत कीन्हा । जीव पुकारे सद्गुरु लीन्हा ॥ 👸 कस जिव अघ पतसे बहु जामी । अमरलोक अम्मरपति स्वामी ॥ कहि जो कियऊं ताहुपर जारे । सत्यनाम सो जरत उबारे ॥ तत्क्षण प्रगट भये सतनामा । कालहिं मार विधसेउ धामा ॥ स्वास निकस तन सुन्य कहाया । काल मेट सुन्यकार बसाया॥ दाना भीर राखेंड यहि लागी । बिना पयोद दाम न पागी ॥ सत्यनाम सोइ सत्यकबीरं । जोगजीत है काल बधीरं ।।

क्वीरकृष्णगीता. दोहा--वंदीछोर कवीर प्रभु, राम अलाह कवीर । प्रथम विष्णु मिल धायके, कबीर राज दिये थीर व्रह्मा पत्री कर द्रम साली । सत्यकबीर कुल विष्णु अमाली ॥ श्वन्वेदके मते जो चिछि है। ताके त्रास काल महि खिलि है।। वेद पुराण कुराणकी बाता । विरला सैल निरख मग जाता ॥ गुरु साधु सा होय अधीना । सेवा सबके स्वामी चित दीन्हा ॥ सवन मथनके देख परेखा। स्वामी सत्यकबीर अलेखा॥ विष्णु न्यास अज कृष्ण उचारा । सत्यकबीर जिव तारनहारा ॥

कवीरकृष्णगीता. दोहा-सबके मडक कवीर ग्रह, विन कवीर कुछ नाहिं। स्रात स्वास सुख संतत, सो कवीरके छांह ॥ अविचल स्वामी परख कबीरा । महाकालको मस्तक चीरा ॥ कहें कृष्ण कबीरसे बैना । निस दिन दरश देह भर नैना ॥ गुप्त प्रगट हरदम देह दरशन । सबहि पदरस प्राप्त गुरु प्रशन॥ दरश परस मम हिय हु भीनी । कृष्ण कवीर केंहँ विनती कीन्ही॥ आये कबीर कृष्णके सीसा । ताप गई शीतल हर दीसा ॥ 👸 जबलग रहे कबीर डर माथा । तबलग कृप्ण सो रहे सनाथा ॥ 🕲 जबहिं कबीर गुप्त होय जाहीं । तब गोपाल पथ पिंतु जे माहीं ॥ 36666666666666

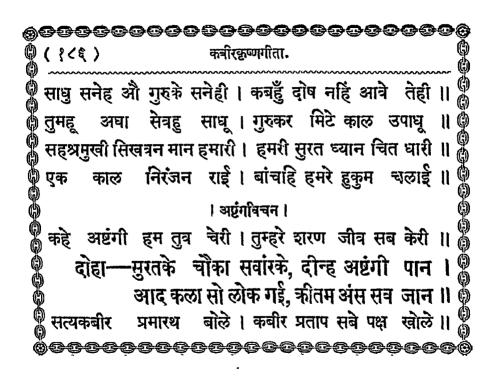
कवीरकृष्णगीता. पिनु जननी धर्मराय भवानी । ताके छाया अनित चलानी ॥ चलहिं अपंथ जो विष्णु सयाना । तव पितु काल बांध सिरहाना ॥ वार अनेक विष्णुहिं ग्रासे काला । तबहिं विष्णु औ सब बेहाला ॥ तव कवीरके चारण समाये। कबीर चारण जग त्रान नसाये॥ नगद् पंथ निरगुण कवीरा । सरगुण जानहु भर्म खोगीरा ॥ सरगुण तरिथ व्रत भ्रम पूजा । पुन सरगुण काया यद दूजा ॥ निर्गुण एक कवीर अनिवाशी । बहा बोलता सब घट वासी ॥ बहु निर्गुण बरणो अब नीरा । दुखित निरवान सकल शरीरा ॥ नीर कवीर को अंस बखाना । शीतल नीरसो साधस ज्ञाना ॥

(? < ?) कवीरकृष्णगीता. नीर विना नहिं जीवे प्राणी । नीर सकल शरीर निसानी ॥ अञ्चनेत औ तरवर त्रीना। कंद मूल फल दल बिनहीना॥ दल पानी करुनाम बखाना । दल देव भाषा जल नर जाना ॥ पानी नीर उद्क अंबु वारी। जल कह जले नीर संसारी॥ दोहा-नीर कबीरहिं मिल गया, अंतर रहा न रेख। तीनो मिल एके भया, नीर कबीर अलेख ॥ जाके होय सत्तके जोरा । सो गुरु करे कबीर बंदीछोरा ॥ जो पुन दया सत्तके हीना । तिन भज त्रिगुण देवी पंथ लीन्हा॥ 🦹 त्रिगुण मता देवी सरगुण संसारी । निर्गुण सत्यकबीर 🛮 जिवतारी ॥

कवीरकृष्णगीता. (१८३) नीर विना नहिं पग पछली । मिहि विना कोइ बैठे न चली ।। सो महि मीन रूप स्थापा । मीन भषहिं बड़ लागहिं पापा ।। भीन एक गौ द्विज शत कोटी । तिल भर भीन नरकके कोटी ॥ । महादेववचन । क्रोध महादेव वचन उचारा । विनामीन नहिं मातु अहारा ॥ । अष्टंगीवचन । उठ अप्टंगी सबिहें बुझावा । कक्षप सूकर महादेव खावा ॥ ी में तो आद निरंजन बामी। हमरी प्रत को श्रवण प्राणी॥ एक दिन जो कोइ तिलमर खाई । पुरषा सहित सो नरक सिघाई ।।

(8 < 8) कवीरकृष्णगीता. हम तो विष्णु ब्रह्मा शिव माता । एक दिन मम कामन राता ॥ ब्रह्माहु मम वचन नसाये । तुमहु शिव नीके बरताये ।। विष्णु भागि गो साधुन संगा । खाहिं मीन हम तेहि नहिं संगा॥ हमहू मीन खाय अघ बूडे। मांस खाय अघ मुडे बूडे॥ मल सिव सभा माहिं हम हारा । तुरत भरम होहु श्राप हमारा ॥ भयउ भस्म शिव बहुरि जियाया । सर्व जीवके तेहि मीन खवाया ॥ मीन खवाय ज्ञान हर लीन्हा । प्रेतक ईस महादेव कीन्हा ॥ ब्रह्मा कहा जननी परखावा । औरहिं ब्रह्म ज्ञान बतलावा ॥ ब्रह्माहि बधु पुन तुरत जिआवा । मीन मांस भर सुरा खवावा ॥

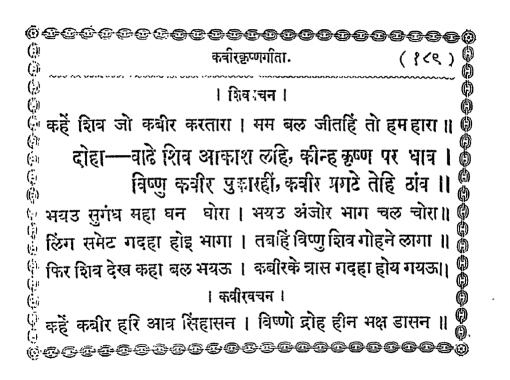
他的中旬 कवीरक्रणगीता. ब्रह्मा कंहँ तब कीन्हें प्रेता । द्विज तन जगत भेष धर केता ॥ प्रेत अंस औ नो गृह अंसा । भषिहैं सखा तुत्र मांस परसंसा ॥ ゆゆのゆりゅりゅうゆのゆゆ विष्णु जननी कंहँ सीस नवावा । भैं बालक माते बरतावा ॥ मात द्याला । कबीरके हांथ देवाइव माला ।। कवीरसे रोई । विष्णुहिं चांप सके नहिं कोई ॥ दोहा-नह्या शिव एक यत भये, विष्णुहि करिहै उदास। तोहि शरण कवीर हरि, राखि लेंडु यहि पास ॥ सींपहु आजू । हरिकर कीन्ह प्रथम हम काजू ॥ विष्णु साधुकी संगत कीन्हा । ताते हम विष्णुहिं चित दीन्हा ॥



क्वीरकृष्णगीता. जापर द्या करहिं सतनामा । सत्यनाम सो कबीर सुखधामा ॥ सत्यक्बीरकी जापर दाया। सत संतोष दया तंहँ छाया।। कबीर सुवास फूल तिल संसीरा । सत्यकबीर धृत जग तम हिरा ॥ कवीर अमी विष राय निरंजन । तारिहं कबीर काल शिरमंजन ॥ दोहा-कैसो अधीन अगाध होय, जो ग्रह करी कबीर । विष्णु व्यास सत कहतहै, तेहि छूटे भौजलपीर। कबीरके सुमरे पाप नसाई । कबीरके भजे यम निकट न जाई॥ । अजहरवचन। अजहर विनवे दोइ कर जोरी । श्रीकृष्ण सुन विनती मोरी ॥

000	©©©©©©©©©©©© ©©©©©©© (१८८)	}© (a)
906	कहु सोहंग कर मूल बखानी। कासो भये सोहंग उतपानी।	
	निराकार अद्या पितु माता । तिनतो कीन्हा सोहंग घाता ॥	
	मात पिता घाती नहिं होई । गुरु साघ घाती नहिं कोई ॥	1
	। कुष्णवचन ।	
	कहें कृष्ण सुन रुद्र वियोगी । तुव समान नहिं जगसा जोगी ॥	
	सो तुम आद सोहंग न चीन्हा। हम तो आद सतनाम गहि लीन्हा॥	(i
		· V
	अमर कबीर अमर सतलोका । अंस सोहंगम कबीर निहसोका ।)	
() 000000000000000000000000000000000000	}{©

•



कवीरकृष्णगीता. (१९०) प्रेत पिशाच भूत रखवारे । तासो बंजनी कहा हमारे । हमरे साध भजन सतनामा । भूत पिशाच घोर अधकामा ॥ साधनका जो दुखावे आई । आपन बल करे नाम सुहाई ॥ हमरे नाम सुरत चित गहहू। सकल समस्तो निर्भय रहहू॥ प्रथमिंहं सिंघ मथन तिहुं छरऊ। कबीर प्रताप तहां निस्तरऊ॥ ब्रह्मा शिव देवी कर दूता। कहें विष्णु मोहि दुखावे बहूता॥ सत्यकबीर एक तुव प्रतापा। कालिहें जीत भक्त स्थापा॥ दोहा-कहें कबीर कृष्ण सुन, हम तोहि सदा सहाय । सुमरे नाम जो मेरो, औ सतपंथ चलाय ।

कवीरक्रणगीता. त्रिगुणके पिता निरंजन अठा । पुनिहं पाप करावे बैठा ॥ पुण्य पाप नहिं नाम समाना । साधुसेवा गुरु भक्त प्रणामा ॥ दोहा-कहें कवीर कृष्ण सन, साधु सरूप है राम। विष्णु साधु सरूप ग्रुरु ग्रुरु सरूप सतनाम ।। बहुरि शंभु सनकादिक आये । ब्रह्मा अद्यागन समुझाये ।। यहां कबीर कृष्ण सतरूपा। अंतर दीन्ह दरश नहिं भूपा॥ एक वार शिव बरस अंगारा । सब अंगारपर रुद्र कपारा ॥ जरा जरे बांच लट तीनी । बहुर कबीर भस्म तेहि कीन्ही ॥ तब अज सनकादिक चल भागी। तबहींके तन लुक सो लागी॥

कवीरकृष्णगीता. (: ? e ?) तब सनकादिक विष्णु पुकारा । विष्णु कहा सुमरहु करतारा ॥ कबीर बख्से तो बांचह झारा । सबके मूल कंबीर करतारा ।। । सनकादिकत्रचन । कहें सनकादिक राख कबीरा । उवाला छटा भौ निर्भल शरीरा ॥ तब सनकादिक स्तृति कीन्हा । सत्यकबीर कहा सब चीन्हा ॥ सनकादिक तन तपके पूजा। हीरा विष्णु रुद्र अज गुंजा॥ दोहा-सत्यकबीरके पश्र परे, सनकादिक बिलखाय। अव तो बब्सहु चूक प्रभु, रुद्रहिं देह जिआय।। सरजिव कीन्ह कबीर दयाला । चक्षुहीन ज्यु मुंडके माला ।

क्वीरकृप्णगीता. रुद्र आंखके भा रुद्राक्षा । आपन चक्षु आप शिववाक्षा ॥ बहुर चक्षु कबीर कर द़ीन्हा । आद् सिखापन दैबे लीन्हा ॥ तुम तीनो महँ हर सरदारा । रहियो विष्णुके आज्ञाकारा ॥ तबते रुद्र कबीरहिं चीन्हा । रहियो सेवा विष्णु अधीना ॥ छांड धुरत मत जोग अराधा । भांग धतूरा माहुर साधा ॥ गगन ध्यान मन जोत प्रकाशा । परम जोत विन मुक्त निरासा ॥ परमजोत सत्यनाम कबीरा । जोत निरंजन काल अहीरा ॥ सत्यकबीर गुप्त होय गयऊ । सनकादिक हर पृछे लियऊ ॥ कहिये विष्णु कबीरके महिमा । हम बहु माना कबीरके सीमा ॥

(828) कबीरक्रणगीता. कहें हरि तुव मानिक होई । सत्यकबीरके यम डर रोई ॥ सुनहु आदंके बात गोसांई। जबते हम कबीर लाखि पाई॥ प्रथमहि सतयग यम मोहि जारो। निराकार यम पिता हमारो॥ तीनो देव औ कोट तैंतीसा । सबकहँ जार भरम कर पीसा ॥ जीवहिं कब दिन्ह बहु काला । तहां प्रगट सतपुरुष दयाला ॥ जिन सब जीव सोंप धर्मराई । सो सत्यनाम कबीर सुखदाई ॥ महाभयंकर काल निरंजन । धर्म अजाजिल बंस अंजन ॥ अजाजील धर्मराय लखाये । आप काल करता कहलाये ॥ कहइ रक्षाके भक्षक ताही । ध्रुव प्रव्हाद अजहु पछताहीं ॥

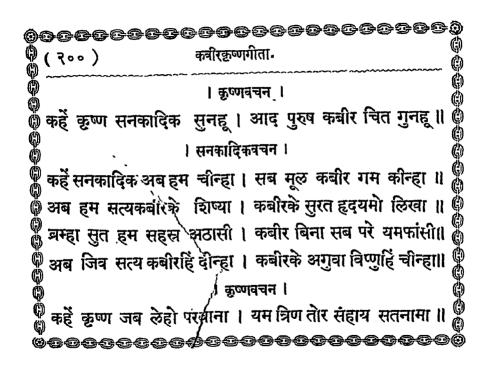
क्वीरकृष्णगीता. भक्ष करे .जित्र चांपे काला । जार बार करे निपट बेहाला ॥ राम कहे सत कहे नरेशा । सत्यनाम विन कागके भेषा ॥ दोहा- धुनकट कैसे अंस भरी, सम्रथ सत्यकबीर । पतित्रता गंगा गती, विष्णु व्यास रघुवीर ॥ । कृष्णवचन । कहें कृष्ण प्रगटे सतनामा । सत्यकबीर जोगजीत सुखके धामा ॥ हने सीस मम पितुके अनंता । जार भरम किय यमहिं तुरंता ॥ सत्यक्बीर आजा .भें नाती । क्बीर दुलहा हम सबिहं बराती ॥ कालिहें जार भरम यम साखा । दान कदसा अंस भर राखा ॥

(\$28) कवीरक्रणगीता. दोहा-धुनकट केंस अंस भार, बहरे काल वारेआन। जाय स्वर्ग गे लागा, देवतन देख रिसान ॥ सकल देव तेहि प्राप्तन घावा । भाग छवे कबीर पहँ आवा ॥ तत्क्षण सत्यकबीर जोगजीता। कालीहं भस्म कीन्ह भये रीता॥ लक्ष वार तेहिजार निकंदा। पुनि सजीव कीन्ह कहे मैं बंदा॥ । कवीरवचन । कबीर वंदा तैं काकर । जाकर दास नाम ले ताकर ॥ । निरंजनवचन । कहे काल कबीरको दासा । जिन मोहि छिनमा सिरज विनासा॥

कवीरकृष्णगीता. (१९७) कहें कबीर तैं कासो डरसी । काकर भक्त विहुन भक्ष करसी ॥ कहे काल मैं पुरुषके. अंसा । पुरुष कबीर एक परसंसा ॥ सत्यकबीर सो हमरे श्रेष्ठा। और न करे छिनक महँ नष्टा ॥ बहुर सहस्र बेर तेहि जारा । सिरजेउं बहुरि काल तंब हारा ॥ पुछिहिं जोगजीत सुन काला । कासो डरस कहु यम व्याला ॥ बोले काल रोप सिर धुनिया। तुम्हरो दास तुव मेरे सिर मणिया॥ तुव सत्यपुरुष हम तुम्हरे चेरा । तुम्हरे दास मकुट ।सिर भेरा ॥ 👰 जो लेहि सत्यनाम परवाना। तोहे सम ताहि गिनो निरवाणा॥

′ የ९८ ነ क्वीरकणगीता. -सत्यक्वरिके ढास जो, में प्रन ताके ढास । जो जिव विलग कवीरसे, यम तेहि घाले फांस।। धन्य सत्यनाम कवीर अटोटा । जिन महाकाल वांत्र यम कोटा ॥ यमके कोट कर्म अस धोखा ! सत्यकवीर विन पावे निहं मोपा॥ । कवीरवचन । कहें कवीर सुन काल निरंजन । अजाजील तुम साकटभंजन ॥ हमहि गोय कस पाया चोरा । आपहि पुरुष याप कस भोरा ॥ | कालवचन । कहे काल मोहि व्यापेउ ऐसा । पुरुषिं मेट राज करों वैसा ॥

कवीरकृष्णगीता. जब मन महँ अस चितवन कीन्हा। दस बीस सीस टूट परभीना॥ वहुर कीन्ह में सुमरण सांई। सीस मोर धड़ लागे आई॥ तव मैं जाना पुरुष दयाला । सेवक चूक न मन महँ चाला ।। निशि दिन धरों मैं पितु पगु ध्याना । पै कछु मन महँ भौ अभिमाना ।। तव तुम मोहि भस्म कर डारा । कबीरते आद अंत यम हारा ॥ जो सतनाम राखे तो रहऊं। डाहे तो विन अगिन डहाऊं॥ दोहा-सत्यकवीर जो सुमरही, तेहि मैं निकट न जाऊं । कवीरके भक्त विहून जो, कहे काल तेहि खाऊं॥



कवीरक्रणगीता. यह सुन सनकादिक घर ध्याना । कृष्णके स्तुति आप बखाना ॥ सत्यलोकके हंस संग आये। झलकत झलझल सुवास बसाये॥ कोटिन रवि शाशि एक न तुलहीं । एक हंस सिस अर्बन तुलहीं ॥ शोभासिध राससुख मुलं। ताहि मुख जेहि कबीरसम तुलं।। सत्यकवीर जग दास कहाये। साधरूप धर भक्त दृढाये॥ इह हम कंहँ यममुखते बचावा । जगमहँ हमरे नाम खिडावा ॥ कहें कृष्ण पेंगें; समर्थ नाई । कंहें लग कहों मैं समर्थ बड़ाई ॥ सतकबीर मेंटो मम दुःखा। सनकादिक सुन प्राण पियूषा।। यम त्रिण तोड़ कालमुख थूका । आरती मंगल यम धर लूका ॥

कवीरक्रणगीता. (२०२) दोहा-दियो पान सनकादिको, मन भये सब साध । कहे सनकादिक छुल भये, मिटा काल आध ॥ कहें सनकादिक धन्य सतनामा । क्षण महँ हम सबक़ो भो कामा ॥ जै जै सत्यकबीर दयाला । सनकादिक जप कबीरको माला॥ मग्न भये सब तन मन शोधा । पांच पचीस मन सहज समोधा ॥ चौदह यम त्रिगुण जेहि थाकी । अरिहित सम लघु दृग एक ताकी॥ धन्य सो सतकवीर सत्यनामा । मैं लघु सेवक कबीर सुखधामा॥ सनकादिक बहु स्तुति कबीरा । सुरति निरति गहि तन मन थीरा॥ व्याघ्रश्वान हर अज बिग कागा। चारो झोहर करने लागा॥

क्वीरक्रणगीता. सब हेरे सनकादिक ऋांती। मिल सनकादिक साधुके पांती॥ एक बारके हुकार सब गजी। आप आप कह अज हरी तजी॥ तव कवीर सनकादिक आगे । सतकबीर आवत यम भागे ॥ कछु पग जाय भये चक्षुहीना । बहुर कुष्ट होय चुये अमीना ॥ पगुके हीन भये सिर कूटा। जरि भो चिता केर जस खूंटा॥ दोहा-चारो मृढ नर पूछे, कहे आप महरोय । जो कबीर ना आवते, तो सब खात विगोय ॥ ऐसी भौ पुन चारो वेदा । स्तुति करहिं कबीरको भेदा ॥ कहा कबीर वेद समुझाई। धर तन मक्त करहु मनलाई।

(२०४) कवीरक्रणगीता. चारो वेदके तारन हारा । पंचये सुसम वेद सोहंगम तारा ॥ सतकबीरको अंस सोहंगा। स्तुति वेद कबीर प्रसंगा॥ आज्ञा मान भक्त चित दीन्हा । चार वर्ण भये भक्त अधीना ॥ बाह्मण क्षत्री वैरय औ शूद्रा । कोइ करे भक्त कोई तपमुद्रा ॥ भक्त विना धन वित सब छारा । सतकबरि विनती यम धारा ।। सत्यकबीर सत्य सो राजी । काम कोघ मिथ्या यम बाजी ।। सोहंसा सारपद् चाही । अजर अमर जिव अम्मर व्याही ॥ मजिंह कबीर सो जाहि अमरपुर। सब सुख विलसिंह कर्म काल दुर॥ भजे सो सत्यकबीर पतिव्रत छवा । तिमिर मिटै जब उदे ज्ञानवा ॥

कवीरक्रणगीता. तिमिर त्रिगुण मन मत सब चारा। सो तहवां अंजोर कबीर मत सारा॥ विष्णु अवरण तुलसी भूषण । मृतुका तिलक काहु नहिं दुषण॥ अंकुर कंद मूल गुर घीऊ। पान फूलपट सेत सोइ लेऊं॥ दोहा--भीन मांस जो भले, तास अन्न जल नाहिं। साकटको घर भात तजि, जूठ साधको खाइ ॥ एक दिन महाकाल रिसियाना । तीन लोकमो परा भगाना ॥ सहस्रमुखी तक्षक होइ उड़ा । जाय इंदासन इस इंद्र मुड़ा ॥ भागे देवता अखिल पताला । वहां सहस्रमुखी जंहँ ज्वाला ॥ 🕲 दैरि काल कैलासिह आवा । शिव केंहँ डंक कीन्ह बहु भावा॥

२०६) कवीरकृष्णगीता. बहुर काल घाये वैकुंठा | जै औ विजय सांस घर उठा || खैंच उरधके डसेउ बनाई । विष्णूके ढिग दीन्ह गिराई ॥ मृतुक साथ तक्षक ।गिर तहां । विष्णु व्यास सुखदेव सब जहां॥ कै प्रहापे अहि घाय विष्णु पर । सतकबीर तब कहा मुरलीघर ॥ सहस्रमुख सन्मुख कबीरा । पुन कबीर धर अमित शरीरा ॥ रूप कबीर देखत यम हारा । आपन विष भौ आपहिं छारा ॥ लीन्ह उबार विष्णुहिं सतनामा । जे कबीर कह विष्णु प्रणामा ॥ जै २ सत्यकबीर अरिघालक । वाल मर्दन रक्षक सतपालक ॥ सत्यकबीर सबे गुण आगर । पतित तार देहीं मुक्त उजागर ॥

कवीरकृष्णगीता. इंद्र रुद्र सब देव जिआये। सब देवन मिल स्तुति लाये॥ सहस्रमुखी तब विष्णुहिं कीन्हा । महाविष्णुकी पदवी दीन्हा ॥ वेद विदित जाने संसारा । सहश्रासिरषा पूर्व बिचारा ॥ सहश्र सिरषापति आनंद सिषासो। सो सत्पुरुष कबीर दिखासो॥ एक अनंतकी कौन बतावे । कोट अनंत पार नहिं पावे ॥ जाके खोजत सब पचहारे। सो सतनाम कबीर पुकारे॥ जासु अंस एक रोम निरंजन । सो सतनाम कबीर दुखभंजन ॥ जिन प्रभु इच्छाते सब कीन्हा । सो सद्गुरु कबीर हर चीन्हा ॥ महाविष्णु औ विष्णु व्यासा । सत्यकबीर सुमरो हरि स्वासा ॥

कवीरकृष्णगीता. दोहा--सत्यकवीर सत्यनाम प्रभु, दुख नासिका मुख्धाम सर्व मई सो रम रहे, सतनमें विश्राम ॥ जहां सांच तहँ प्रगट आही । द्याहीनके निकट न जाही ।। गुरु भक्त सबते अधिकारी । साथ भक्त गुरु भक्त सखारी ॥ कोटिन देवी देव अराघे । विन गुरु भक्त काल घर बांघे ॥ कोट अनंत कर्म संसारा । गुरुके मक्त विनसवे असारा ॥ इहां वहां गुरु भक्त सुहेला । गुरु आज्ञा कर सोई चेला ।। गुरु कहँ आद ब्रह्म कर लेखे । गुरु सरूप संतन कहँ पेखे ॥ 🧣 गुरु सोई जो तिहुँलोकते न्यारा । सहुरु अमरलोक विस्तारा ॥

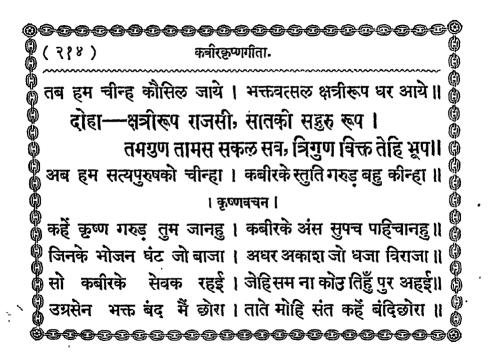
कवीरकृष्णगीता. अंस सद्गुरुके आहीं । सद्गुरु सर्वे मई बरताहीं ॥ सद्गुरु सत्यकबीर अविनाशी । रहे निरंतर सब घटवासी ॥ जिमि चंदा नभ कुंभक दीसा । पुनि जिमि रवि प्रकाश पद ईशा॥ एके साहेब सद्भुर आदी । क्रीतम उपजी विनसि षट स्वादी॥ तीन लोककेहँ विष्णु श्रेष्ठा । विष्णुते सत्यकबीर गरिष्ठा ॥ सत्यकबीर सबके सुखदाई । सुरति सुमतिते वे भल पाई ॥ दोहा-सत्यकबीर सुखदाया, जो सुमरे एक त्रित्त । विष्णु ज्यास कहें सब, ते सुख कबीर प्रतीत ॥ जै जै सतनाम कबीरा । सत्य सुकृत[ं] सो अजर शरीरा ॥

(२१०) कवीरकृष्णगीता. पष्पविमान सतलोकतेआवा । सकल आय चरणन शिर नावा॥ निज सिंहासन ठाकुर दीन्हा । चरण पखार चरणामृत लीन्हा ॥ विष्णु व्यास सुखदेव सतव्यासा । सतकबीर पग परस हुलासा ॥ कर जोरे जै हरखित कहहीं। सतकबीर कहत सुख लहही॥ जो सुमरे सतनाम सुखधामा । सत्त २ सो सद्गुरु नामा ॥ सत्यलोक अम्मर सुचकाया (तहां सो सत्य पुरुष रहाया ॥ बेहंग सोहंग वोहंगके मूला। ओंकार मकारके कालके कारण करण गोसांई। रक्षपालक सब जिव सुखदाई॥ ्री तीन लोकते न्यारा रहहीं। सर्व मई पुन सबसों कहहीं॥

क्वीरकृष्णगीता. (२११) धरणी अकाश पवन औ पानी । चंद्र सूर्य जेते नष खानी ॥ सबके आद सोहे सतनामा । सत्त दया मिल जीवको कामा ॥ सर्वमूल अविनाशी रामा। सोई सतकबीर सुखधामा जो सुमरे सतनाम कबीरा । ताके काल न आवे नियरा ॥ कीन्हो स्तुति विप्णु बहूता। कहा कबीर बैठहु तुम स्तुति जब बहुते कीन्हा । तब हम आय दरश तोहि दीन्हा॥ कौन काज तुम सुमरेहु मोही । टोरो सब संकट जत तोही ॥ परहिं काल मुख झरकहिं जबहीं। सतकबीर कह चितवे तबहीं ॥

©	6000000000000000000000 0)
9	(२१२) कवीरकृष्णगीताः)
	······································) i
6	। कुष्णवचन ।)
9	कहें कृष्ण पलकन पग झारे। मैं नाती तुम आजा प्यारे।। 🧗	1
36	धन्य भाग्य मम शुभ दिन मोरा । दीन्ह्रो दरश कबीर बंदीछोरा ॥ 🖁)
4	कबीरते अधिक और निहं कोई । आद अंत सब जिनते होई ॥ 🖣)
	हम सब हैं कबीरके अंसा । सतकबरिके सब निज वंसा ॥))
98	सिन्द साध मत वेद पुराना । सतकबीर गुण सर्वाहं बखाना ॥ 🖁)
	कबीर निरवान मुक्तके दाता। जाको अंत न लखे विधाता।।)
	दोहा—सब करताके करता, सब दाताके तार।)
	सकल मूल सतसाहेब, सो कबीर औतार ॥ 🧣	1
6) \$ \$)

कवीरकृष्णगीता. (२१३) गाई । सतकबीर जिव रक्षक भाई ॥ हर में कबीरको महिमा जानो। और सबे मनमत बौरानो ॥ गरुड चरण हरि शीस नत्राई । महिमा कृष्ण कबीर पस्वाई ।। अस शोभा नहिं देखो काहू । करता कृष्ण राम तुम आहू ॥ दोहा--सोई पुरुष कवीर है, जोहि हम कीन्हो खोज । सबे कहें मोहि वाउर, कहें भसुंड वनरोज ॥ त्रेता रामचंद्र मोहि जांचा। नागफांस परिचित भौ कांचा॥ तहां पहुँच अहिनास उबारा । तब भैं करता तेहि नाव बिचारा ॥ करता निरबंद योनि नहिं आवे । नागफांस तेहि बांधको पावे ॥



क्वीरकृष्णगीता. (२१५) कबीर छोरहिं चौरासी यम फंदा । निर्गुण नाम कबीर निर्देहा ॥ जापर दाया करहिं सतनामा । सो देखे सतलोक सुखधामा ॥ ्कहें कृष्ण सुन आसन मोरा । महा सुज्ञान गरुड़ बल जोरा ॥ 🖁 हमही रहे त्रेता रघुवंसा। तबहीं कबीर मेटे मम संसा॥ सतकबीरके अंस एक राऊ । सो पूंजी मम पितहिं दियाऊ ॥ राय रमिता राम सोहंगी। ताके नार देह अर्धेगी ॥ अर्धेगी सीता। रावण चोर संघि सिर दीता॥ रामचंद्र तेहि प्रति रामचंद्र दुख पावा । वन २ रटत वचन पितु पावा ॥ वचन सरूप घरे सब देवा। डासन त्रिण भोजन फल मेवा॥ 🖁

क्वीरकृष्णगीता. (२१६) सिंघु सेत बांधे हरि ताका । पर्वत सबे सिंघु महँ राखा ॥ बांघन लगे सिंधु गंभीरा। तब हरि सुमरे सत्यकवीरा॥ आय कबीर तुरत दरसावा । कबीर रूप हरि हृदय समावा ॥ हृद्य कबीरा । आद् ब्रह्म कबीर गंभीरा कबीरके अंस हैं लक्षमणबाला । लिखा मेर पर अंकरिसाला ॥ लक्षमण अंक सेतु लेहु बांधा । रामचंद्रका उतरा सैन लंकागढ़ टूटा। सकल देवका बंदी दीन्हो राज्य बिभीषण थापी । कोइ न बांचे राक्षस सिय बंदिछोर राम लियो संगा । सत्यकबीर प्रताप

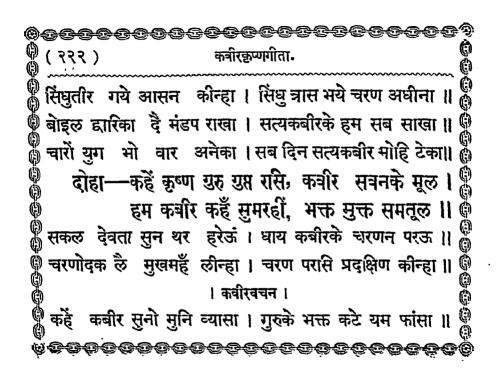
कवीरकृष्णगीता. सुन खगपति सब देव मुनीसा । सृष्टि कबीर सवन कंहँदीसा ॥ दोहा--कहें कृष्ण सुनु देव मुनि, रक्षक नाम कबीर। हमहिं औसर सुमरहीं जब, गाढ़े परे शरीर ॥ सुख देवे कारण । पुरुष कबीर प्रगट कलि सारन ॥ रामनाम गुरु महिमा भाषा । सत्संगतके इच्छा सत्संगत गुरु मारग पाई । गुरु सहुरु मिल प्यास नसाई ।। खरा खोटा परख दिखाये । सहुरु सो जिन सत्य चिन्हाये ॥ निर्गुण एक कबीर बखाना । सर्गुण सकल देव मिल जाना ॥ ⁽³⁾ निर्गुण बोलता कवीरको अंसा । रमता राम सकल घट हंसा ॥

कवीरक्रणगीता. (२१८) कहें कृष्ण कबीर परचाई । सहुरु सत्य कबीर गोसांई ॥ दोहा---सद्भुर सत्य कबीर हैं; निहचल अजर शरीर । भौसागर तारन तरन, समर्थ सत्य कबीर ॥ सुखदेव समेता। अज हरि हर प्रभु कृपानिकेता। नारद ऋषि इंद्रादि सनकादी । सके न कोई कबीरसंवादी ॥ कहें कृष्ण सुन व्यास सुखदेऊ । कबीरहिं मानुष कहे जिन कोऊ॥ कबीर सर्वादिक करताके करता । भरी ढरे फिर खाली भरता ॥ मक्तरूप घर प्रगट दिखाये । गुरुकी भक्ति ढिग दास कहाये ॥ युग २ रक्षा हमरी कीन्हा । भक्त रूप होय दर्शन दीन्हा ॥

कवीरकृष्णगीता. संग लक्ष्मण सीता । सत्यकबीर वन दास पुनीता ॥ दोहा-कहें कृष्ण सब कोइ सुनो, इत उत दास कबीर । सतकवीर सत युगर सुमरे, दोउ दीन ग्रहपीर॥ । व्यासवचन । कहें व्यास सकल मिल वाणी । धन्य कबीर जेहि कृष्ण बखानी ॥ । कुष्णवचन । कहें कृष्ण सुन व्यास सुख देऊ । हमहु न लखा कबीरका भेऊ ॥ जब कबहूं हम त्रसित निरंनज । तहां कबीर काल शिर भंजन ॥ कवीरको चरणोदक जव लीन्हा । जबते अगम गम्य हम चीन्हा॥

कवीरकृष्णगीता. (२२०) हमरे कहे के पिता निराकारा । हम कहे ये कबीर प्रतहारा ॥ कबीरके पांव निरंजन लागे । और जीव कहा कस आगे ॥ निरंजन एक दिन ग्रासन घाये । कबीर नाम जप जीव बचाये ॥ दोहा-एक हंसके पाछे, × आद नाम सर देख । अङ्कत शोभा अकह छिव, कवीरको कला अनेक।। कबीर है अमरलोकके माहीं। यहां दरद देख जीव बंचाही॥ जब हम बैठे सप्त पताला । नाथे कालीनाग निसाला ॥ तब नागिन मोहि विष संचारा । तहँ कबीर गये प्राण उबारा ॥ संगहि आये बलभद्रकें भेसा। बालबच्छ रचि मेटेउ अहेसा॥

कवीरकृष्णगीता. जब हरनाकुश कीन्हेसि वरिआई। तहँ कबीर पुन भये सहाई ॥ रामरूप त्रेता हम जांचा। परम जोत कहि बोलेहु वाचा॥ परम जोति कहि कियेउं पुकारा । तहां कबीर आय दुख टारा ॥ दोहा--क्वीर सुखदाता जीवके, अमरलोक विश्राम । सो जिव सुख घर पहुँचे, जो सुमरे कबीरको नाम॥ कलि हमरे जो बोघ शरीरा । देवल थापेउ दास कबीरा ॥ तट देवल सिंधु तर गाडा । तब कबीरको ध्यान हम माडा ॥ तुरत कबीर प्रगटे तुलसी चौरा । विप्ररूप में दर्शनको दौरा ॥ 🖣 तुलसी चौरा जाय भें दासा। हंस कबीर अंकम लै परसा॥



कवीरकृष्णगीता. गुरु विन राम न आवे हांथा । गुरु विन डोलहिं जीव अनाथा ॥ मक्त साधुकी सेवा । हराषे गोपाल मिले यह मेवा ॥ करता जाना । काउ जीत गुरु नाम बखाना ॥ गुरु सोई जो अंतहु मीठा। जन्म मरण गुरुलागे सीठा।। दोहा-योग यज्ञ तप तीरथ, प्रतिमा भूत मसान । कहें क्वोर सह़रु विना, जीव जात यम थान ॥ उठके गरुड ठाढ भये आगे । हरिसों विनती करने लागे ॥ आज्ञा देहु मोहि त्रिभुवननाथा । हमहु जीव निज करहु सनाथा। हम कबीर कहँ सद्गुरु करहीं । सेवा तुम्हार ध्यान उर धरहीं ॥

कवीरकृष्णगीता. (२२४) कृष्ण विहुँस कहबे अस लीन्हा । सुनहु विहंग सबन चित दीन्हा॥ यहिते श्रेष्ठ अमर कछु नाहीं । धन्य सो जो गुरु शरण समाहीं॥ गुरुके शरण समाने । सद्गुरु कर कबीर कहँ जाने ।। कबीरके आस सबनको भाई । कहि कृष्ण पुन गरुड़ बुझाई॥ दोहा-- खगपति गये कबीर पहुँ, शरण देहु सतनाम। यमसे त्रास निवारहु, देहु भक्त सत्थाम ॥ । कवीरवचन । कहें कबीर सुनो खगराई। बडे भाग गुरु शरण समाई॥ गुरुकी आज्ञा शिष्य जो माने । शिष्य सोईजो गुरु सुराति समाने॥

कबीरक्रणगीता. (२२५) चरण टेक विनवें नभगामी । आज्ञा करह सो मानो खामी ॥ कहो तो सीस कल्प भुंड धरऊं। कहो निजहु तासन परऊं॥ हमह गुरुकी महिमा जाना। गुरुते श्रेष्ठ और नहिं आना॥ हम त्रिभुवन पतिके सुखपाला । हमरे पीठ जो सदा गोपाला ॥ जब हम देख गोपाल तेहिं सेवा । परेउं चरण तर लीन्ह तुव भेवा॥ दोहा-कहे तक्षक अरि जोर कर, विनय सीस पग राख । काटहु यम कर फांस प्रभु, गरुड़ दीनता भाष ॥ । कबीरवचन । कबीर सुनो खगराया। मिले ना समर्थ सहुरु दाया।।

(२२६) कवीरक्रणगीता. आपन जीव सम सब कह लेखे। एके राम सकल घट पेखे॥ सुर असुरारी चाल निहारे। नीर क्षीर बिलगाइ सुघारे॥ ज्ञान औ मनकी दशा विचारे । सतपद गहि गुरु मुरत निहारे ॥ जेते आमिष मीन मद् मांस् । परधन परिनदा । कवीरवचन । कहें कबीर सुन गरुड़ सुजाना । अंकुर सुगंध पवित्र फुल पाना ॥ दोहा--- गुरु कहँ करता जाने, साधन गुरु कह लेख । कहें कबीर सुन खगपती, राम सकल घट देख ।।

क्वीरक्रणगीता. (२२७) । गरुडवचन । गरुड़ कहे तब सीस नवाई । सत्यकबीर तुम समर्थ सांई ॥ तुम्हरे सिखापन हद्य मानो । शरण देह कहे श्रीभगवानो ॥ । कशीरवचन । ्तुम त्रिभुवन राऊ । गरुडहि बोधे कहहू सुभाऊ ॥ दोहा-शब्द हमारे शीतल, अमृत मोद सो भाव। भक्तपंथ समिता ज्ञान हढ, अभे मुक्त पद लेव ॥ भले गरुड जाय आनहु साजा। गह २ वैकुंठ बाजन बाजा॥ कहे गरुड़ भाषहु प्रभु साउज । सत्यपुरुष कह चढ़े सब सांउज॥

कवीरक्रणगीता. (२२८) कबीर नारिअर भरप्रा । सेत गरी मिष्टान दोहा-पान फूल चंदन सुचि मेवा, गऊ घृत जोत प्रकाश। सो अमर प्रत नाम ग्ररु, चरण सीतहर दास ॥ सिंहासन क्षत्र चंदेवा । ध्वजा पताका सेत सजेवा ॥ छान जल झारी । थार जोत घर पंच मुख बारी ॥ आज्ञा माग गरुड़ उठ घाये । तैंतिस कोट देव हकराये ॥ सवा लाख नरिअर ले आना । सवा सौ मन मिष्टान प्रवाना ॥ कृष्णिहिं नेवत दीन्ह कर जोरी । तुव प्रताप गुरु मम बंदछोरी ॥ शिव सनकादि ब्रह्मादि विष्णवादी । देवऋषी मुन सुखसे सादी ॥

कवीरकृष्णगीता. (२२९) सब मिल आय कीन्ह धुन ध्याना । भजन अखंड शब्द प्रवाना ॥ दोहा—सकल देव मुनि चित्रत, गरुह शरण सतनाम । सत्यकवीर जो सुमरे, तेहि गाढे आवे काम ॥ दीन्ह पान यम त्रिण तोराई । चरणामृत तिलक दढाई ॥ प्रवाना गरुड अनंदा। जस चकोर पाये निस चंदा॥ महाप्रसाद सकल मिल लीन्हा । विनवहिं गरुड असीस तब दीन्हा । कृष्णवचन । कहें कृष्ण खगपति वड भागी । तुम सद्गुरुके दास सुभागी ॥ धन्य भाग तेहि प्राणी केरा। शरण कबीर गये दुख फेरा ॥

कवीरक्रणगीता. ं २३०) सरगुण भक्त जो आवा गौना । तन घर दुख सुख पावे पवना॥ निर्गुण भक्त शरण सतनामा । नाम कबीर भजन सुखघामा ॥ दोहा-कहें कबीर सुन खगपति, नाम कवीर कंडहार। निस्युण भक्त सब ऊपर, आवागवन निवार ॥ सकल देव मिल स्तुति लावा । बड़े भाग हम दर्शन पावा ॥ व्यासदेव सुखदेव मुनिनारद् । विनती करें सुरपति गण शारद् ॥ पूछे व्यासा । कबीरकी महिमा करहु प्रकाशा ॥ तुमते श्रेष्ठ कबीर कंस भयऊ । यह चरित्र हम जान न पायऊ ॥

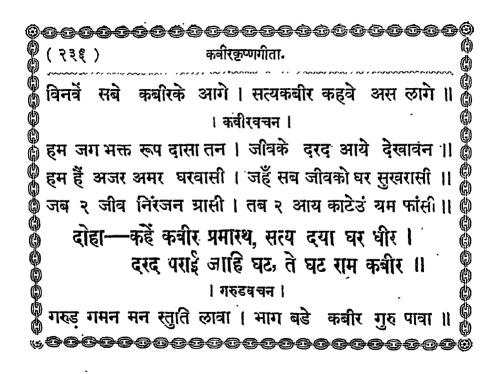
कवीरकृष्णगीता. (२३१ । श्रीकृष्णवचन । कहें कृष्ण सुन व्यास सुख जाना । कबीर आद करता निरवाना ॥ निरंजन हमरे पिता दग काला । जार मार जिव करहि बेहाला ॥ सतकबीर काल शिर भंजन । कबीर नाम ते त्रसित निरंजन ॥ दोहा--तीन लोकते न्यारा, अमरलोक विस्तार । जो कवीरको सुमरे, सोइ उतरे भौपार ॥ कहें कृष्ण मैं कहों परमारथ । निर्गुण भक्त जन्म जुग स्वारथ ॥ जब कलकाल निरंजन कोपिहै । मिटिहै दया धर्म विष रोपिहै ॥ गंगा सती सिद्ध औ साधक। सबके सत घटि है कलबाधक॥

(२३२) कवीरकृष्णगीता. निराकार सब जीव गरासे | भक्तहीन तेहि काल तरासे || निर्गुण भक्तिहीन जो प्राणी । पापी पुनी जार सब सानी ।। सबकर सत्त काल विचलाई। कबीरके संत अड़े रहाई॥ गाढे ताहि कबीर .ले राखी । आगे तेहि निज कबीर हरि भाषी।। दोहा-अजर मुक्त सो पावे जो, सुमरे सत्यकवीर,। नरकी देंही त्यागके, हिरंमर घरे शरीर ॥ सुन पंडव नारद सुख़ व्यासा । एक दिन सुन कस भयउ तमासा।। जीव एक सतलोक चलि जाई । दूत ताहि नहिं पायउ भाई ॥ धर्मरायके पासा । धर्मराय आप मम

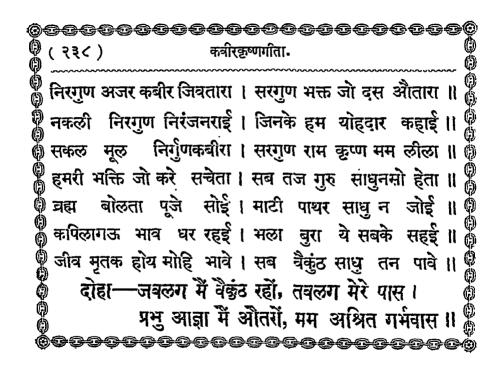
कवीरकृष्णगीता. हम त्रिय बंधु यम सहित सिधाये। हेरत जीव कितहु नहिं पाये॥ सब थाके हम देखा जाई । सुन्यके पार मानसर जाई ॥ महासुगंध देश उजियारा। कामिन शोभा अकह अपारा॥ कोटिन चंद्र सूर्य छवि एका । हंस असंख हंसाने तेहि रेखा ॥ दोहा--जहँ सतपुरुष कवीर निज, सो नहिं देखेउं ठौर। पुरुषलोकको आभा, मानसरोवर मोर ॥ अपनी कंचनउदित अटारी | हंसनीको लगी गंध हमारी ॥ द्वारपाल एक पठइन वेगी। देश निकार धायो बहु वेगी॥ मोहिं धर बांह नीकारीस बाहर । मैं सुमरेंड कबीर तेहि ठाहर ॥

क्वीरक्रणगीता. (२३४) तहँ कबीर मोहि लीन्ह बचाई । वार अनेक दया उर लाई ॥ जहांसे गयऊं निरंजन खोदा । कवीरके आद न जाने वेदा ॥ कबीर सबनके आद बखाना। कबीरके आद कोई नहिं जाना॥ कबीर नाम कायाको वीरा | कदली तन पौनगरसीरा । दोहा--काया कदल दल, गुप्त प्रगट कवीर । सबके भीतर बाहर, स्वास निहस्वास शरीर ॥ शोभा । कहि न सिराय मोर मनलोभा ॥ तरवन जोती । छिन एक महँ देखेऊं ससीकोती ॥ एक हंसनी रवि शशिकी खानी । अनंत कोट रवि शशी प्रवानी ॥

कवीरकृष्णगीता. निराकार एक तिहुँ पुर जारे । सत्तकबीर सो जरत उबारे ॥ जबते हम देखा अस थाना । तबते मनमें निशिदिन ध्याना ॥ तीन लोक तेहि लेखामाहीं। सत्तलोकको नहिं परछाहीं॥ तीन लोकमहँ नरककी काया। सब सुगंध सतलोक लखाया॥ दोहा--काल कठिन परपंची, तीन लोक दुख देय। ताके निकट न आवे जो, कबीर प्रवाना लेय ॥ जबहिं कृष्ण अस परचे दीन्हा । तबहिं न्यास चरणोदक लीन्हा ॥ सुखदेव औ सब देव अधीना । सबहिं कबीर कहँ सद्गुरु चीन्हा ॥ परी दोहाई । सबहिं कबीर कहँसीस नवाई ॥



क्वीरक्रणगीता. कहें गरुड़ सुन कृष्ण मुरारी । जीवनकी गति कहो विचारी ॥ कोटिनमें एक कबीरहिं चीन्हा । तिन निज जन्म सुफल कर लीन्हा औरहिंकी गत कैसी स्वामी। सो कहिये मोहि अंतर्थामी॥ । श्रीकृष्णवचन । खगेश कहे त्रिभुवनराई । सबकी गति भैं कहों बुझाई ॥ सतकवीरकी भक्ति जो करि हैं । सो सत सत्यलोक पगु धरिहैं ॥ अमरचीर हिरंमर काया। सबी सुवास अमी फल पाया।। दोहा--सत्यकबीरके सेवक, वहुर योनि नहिं आव । अमरलोक सुख विलसे, निरमे कैल कराव ॥



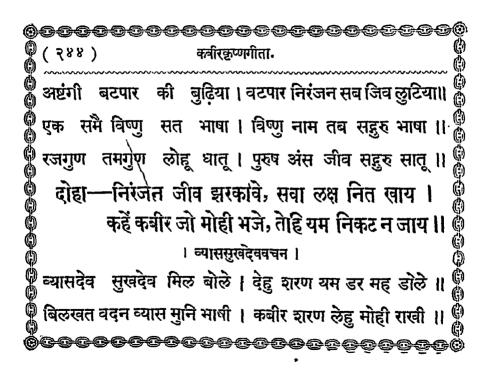
कवीरकृष्णगीता. रहित मुक्त निहं हमरे हांथा । रहित मुक्त कबीर गुरु करे मम भक्त देंह मैं तारों। सत्यकवीर देंह सद्गुरु समर्थ रूप हमारा । मोह समान को आन विचारा ।। एक मैन औ कवीरसे भाई । कछुक निरंजन अस्थान जब जाई॥ और सबे हैं हमरे आसा । शिव अज सनकादिक मम दासा ।। मुक्तको हम हैं दाता। जीवके मुक्त कबीरके करे सो पावे । पाय पुण्यमहँ आवे जावे ।। गाढ़के हीन सो दानहि पावे । तेहि औसर साकट पछतावे ॥

कवीरकृष्णगीता. दोहा—देंह मुक्त यह जानहु, देंह धरे फल पाव । सत्यकबोर जो सुमरे तो, बहुर योनि नहिं आव ॥ रज तम लक्षण भूत पिशाचा । सतगुण साधु संत प्रकाशा ॥ रज तम चाल परे चौरासी । सत्गुण देंह मुक्त विश्वासी ॥ कर्भ भ्रमकी छूटे आसा। आवागौन निरंजन फांसा॥ निरंजन सेवक कबीरको अंसा । कबीर जेमुख तेहि विधंसा ।। दोहा--- खरा खोटा सब पाखे, पारखी निरंजन राय । पुरुष प्रवाना देखि सिर नावे, विना छाय धरखाय।। कहें कृष्ण पंनग अरि सुनहू । कहूं ज्ञान अपने मन गुनहू ॥

कवीरकृष्णगीता. (२४१ सतगुरु भक्त पपील चलानी । निरगुण भक्त विहँग बखानी ॥ पंछी विहंग उड जाय अकाशा । नहिं पपील चढ सके बेआसा ॥ जहां इच्छा तहँ जाय विहंगा । चढि सरगुण मता भुअंगा ॥ कोट माहि सरगुण गति पावे । निरगुण भक्त सबे तर जावे ॥ दोहा-निरगुण महिमा अगम है, सरगुण सके न कोय। सरगुण उपजन विनस्न, निरगुण विन गति नहिं होय।। सत्युत त्रेता द्वापर काली । चहुँयुग निरगुण अजर अमाली ॥ निरगुण सरगुण सबके मूळा । सोई सत्यकबीर हरि बोळा ॥

(२४२) कवीरकृष्णगीता. दोहा-हमरी तुम्हरी को कहे, कवीर सवनके मूल । कहें कृष्ण सुन खगपती, को कवीर सम तूल ॥ बोले. गरुड विहसिके वाणी । मम जीवन शुभ सहुरु जानी ॥ चरणोदक ले निर्मल भयऊ । सहुरु चरण हियमहँ धरऊं ॥ व्यासदेव सुखदेव सिर नाये । बडे भाग्य हम दर्शन पाये ॥ व्यासदेव मुनि नारद पूछा। हमहुको है भक्तिकी इच्छा।। पान प्रवाना हमको दिजे । मुक्तदान हमहूको । कवीरवचन । कहें कबीर सुनो सब कोई। जीव दया विन मुक्त न होई॥

कवीरक्रणगीता. सद्गुरु सेवे । सबसे श्रीत नाम चित देवे ॥ सबमें सोर मिता अब रामा । स्थिर सत्यनाम निज नामा ।। विना भक्ति भगवंत न भेंटे । सहुरु विना ना संशय मेटे ।। सद्भुर कहें कबीर हम आहीं । सद्भुर अंश विष्णुके माहीं ॥ सद्भुरु अंश जीव सत सबमें । राम कृष्ण मम अस कहो अबमें ॥ अंश निरंजन राया। तीन लोक अधिकार तिन पाया॥ तिन पुन आपन अंस उतपाना । छल छुद्रम मान अभिमाना ॥ छल औ क्षुद्र विष्णु बहुरंगा। व्रह्मा कुमत हंग रुद्रंगा रजगुण ब्रह्मा विष्णु सतोगुण । काल प्रले जन रुद्र तमोगुण ॥



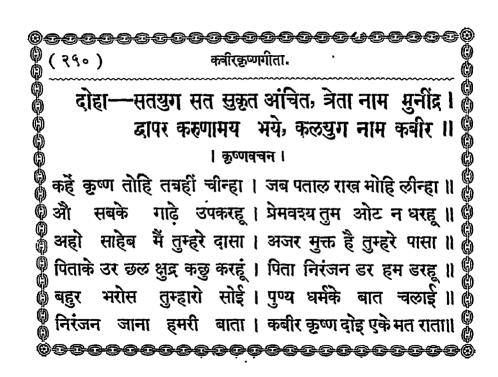
क्लीरक्रणगीता. । कवीरवचन । कहें कबीर सोइ यमसे बांचा । निज २ शब्द गहा मम सांचा ॥ अब तुम होहु निहसंक यम सेती । देंउ बीरा चल यमसो जीती ॥ द्गिन्ह प्रवाना त्रिण तोड़ाई । व्यासदेव सुखदेव कमाई ॥ चरणोदक महाप्रसाद तव दीन्हा । बहुर सिखापन जीव द्याको कीन्हा हमकंहँ गुप्त हदय महँ राखहु । साधु गुरु हरि महिमा भापह ॥ हरिरूप हमारा । हमरे नाम भज यमसो न्यारा ।। सुभ्रत जंहँताई । सबपर ज्ञान सहुरुको सांई ॥ कृष्ण अर्जुन गीता तुम भापहु । ज्ञान पाठ गीता अव राखहु॥

(388) क्रवीरकृष्णगीता. हम कह इच्छा देहु प्रवाना । सतकबीर कहें सुनो भगवाना ॥ हमरे मेटह़ आवा गवना । ले चल निज घर बहुर न अवना ॥ सुनेउ राम वसिष्ठसे रामा । कौन नाम दीऱ्हो गुरु रामा ॥ जो तोहि पान दे लोक पठाई । तो सतरंजबाजी उठ जाई ॥ विष्णुसयान् तिहु लोक न कोई । सतनाम सम वरत न कोई ॥ क्रितम उपजे विनस दुख पायो । आद अजर घर अमर रहायो ॥ जो तुम जैहो अमरलोका । निराकार कंह होइहै क्षोका ॥ हम विष्णु जी नाती आजा । बाप तुरक कह कौने काजा ॥ सपूत पुत्र तेहि भोजन देई । विन सुचील सुत पान न लेई ॥

कवीरकृष्णगीता. निरंजन के वंश मझारा। एक विष्णु तेहि पुर में सारा॥ सांच विना बांचे नहिं कोई । भक्त बेमुख तेहि काल बिगोई ॥ तुम कंह विष्णु चिंता कछु नाहीं। तुम्हरे पास हम सदा रहाहीं॥ नरक परे नहिं दैहो तोही। जो तुम ध्यान राखिहो मोही ॥ कि होय सेवक या होय स्वामी । संत गाढ़ पहुंचे सुरत गामी ॥ जो जेहि नाम न ध्यावे प्राणी । तासु लोक पहुंचे निज गामी ॥ । कृष्णवचन । कृष्ण कबीर बल मोरा । करताके करता बंदी

कवीरक्रष्णगीता. २४८) दोहा-में कबीर कंहँ चीन्हा, कवीर रूप करतार । करता निरंनज कितम, कहें कृष्ण निरवार ॥ । कवीरवचन । यह सुन कबीर कृष्ण कंठ लावा । सीस हांथ दे निकट बैठावा ॥ कहें कबीर तुम हमरे अंशा । हम चीन्हें बिन काल विधंसा ॥ निराकार केंहँ जब उपजाया । स्वास तेज कंपी तन आया ॥ आगम तास होय यह काला । जीवन कंहँ यम करे बेहाला ॥ तब पुन पुरुष दीन्ह तेहि श्रापा । योगजीत तेरो सिर खापा ॥ योगजीत तब उतपन दन्हा । ताके त्रास निरंजन छीना ॥

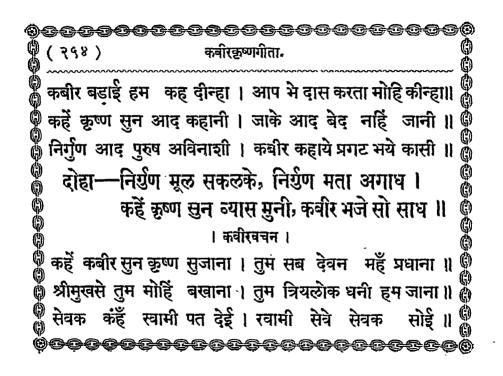
कवीरकृष्णगीता. चौंसठ युग सेवा लव लावा। सेवा वस्य राज तिन पावा॥ अमरलोक ते गये निकासा। जब अष्टंगी कीन्हे ग्रासा॥ योगजीत डर काल डराई । नाम कबीर सुनत छिप जाई ॥ वस्तु जीव सब साज हमारा । निरंजन कंहँ सौंपाले भारा ।। पुरुष आज्ञा तज मन मत ठाना । निरंजन तोपे काल दिवाना ॥ जीवन कंहँ तिन करे अहारा । जीव विवश हो परे बिचारा ॥ तब मोहि दाद जीवनकी आई । दासा तन धर भक्ति दढाई ॥ 🖁 जो जिव भाक्ति हमारी करि हैं । ताको काल खूंट नहिं घरि है ॥ चारो युग जिवलोक पठावा । युग प्रवान नाम जिव गावा ॥



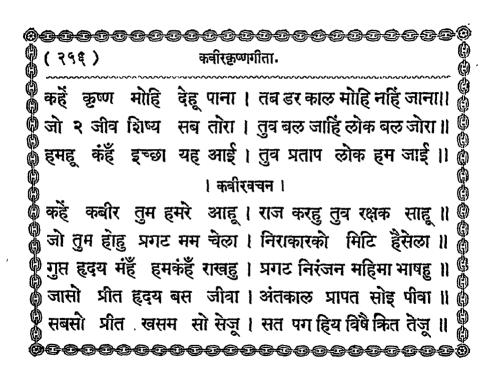
कवीरकृष्णगीता. जीव द्या गुरु भक्त बखानहु । सतसंगति महिमा काथ आनहु॥ रामनाम गुरु साधुसे नेहा । कहें कबीर राम गुरु देंहा ॥ ठाक्र कंहँ मानुष जिन जानहु । राम कृष्ण करता पहिचानहु ॥ रामकृष्णके हम लघु जेठा । जैसे फेर जन्मापितु बेटा दोहा-राम कवीरके अंश हैं, कवीर रामके दास । स्वामी सेवक होयके, करहिं भक्त प्रकाश !! तुम हो व्यास विष्णु औतारा । चौविस महँ तुम भक्त पियारा ॥ हम हरि वंश विष्णु मम अंसा । भक्त रूप हम विष्णु प्रशंसा ॥ विष्णु द्या जब कीन्ह पुकारा। तब जानो हमरे संचारा॥

(२९२) कबीरक्रणगीता. निरंजन विष्णु समाई । तब कर विष्णु कपट चतुराई ॥ सबपर श्रेष्ठ जानो सतनामा। कहें कबीर गुरुपद विश्रामा॥ गुरुसोई जो यमसो उबारे। जन्म मरण दुख दारुण तारे।। कहें कबीरसो सद्भुर जानो । राम कृष्णको सिप्न बखानो ।। । कृष्णवचन । कहें कृष्ण हम निहचे जाना । हम सब पर कबीर प्रवाना ॥ निरंजन आद सो अजर कबीरा । स्वासरूप रमे सकल शरीरा ॥ हममहँ तुममहँ सोहंग जीऊ । स्वास रूप तन जीवके पीऊ ॥ 🖫 जीव सेब अंश कबीरके भाई । देंह निरंजन राय बनाई ॥

कवीरकृष्णगीता. जो जिव लैहो कबीरके पाना । ताके डर निराकार डेराना ॥ कोटिन केर काल मोहि खावा । निराकार अज सिवहिं नचावा॥ और जीव केहि लेखा माहीं । रहटके घरिया आवहिं जाहीं ॥ दोहा-रहटके घरिया सरग्रण, रीते भर उतराय । मरी उरघ भर खाली, निडर कूपके जाय ।। जब नहिं घरती अकाश पताला। जब नहिं देंह जगत कित काला॥ नाहिं निरंजन आद भवानी । वहिं तब त्रिगुण पवन औ पानी ॥ तब नहिं दश अवतार मम भयऊ। गंगा जती सती नहिं रहऊ ॥ तबकी कहें कबीर सहिदानी। जबकी काहु मर्भ न जानी॥



कवीरक्रणगीता. दोहा--कबीर नाम हरि गावहीं, यरुके ध्यान अधार। यर गोविंदके लेखहीं, साधराम रूप अधार ॥ । कृष्णवचन । कृष्ण कपिल कबीर प्रा गहा । सुन स्वामी तुम कैसे कहा ॥ तुम्हरे समान न देखों काहू । हम सब कर तुम हांथ निबाहू ॥ और सबे सरिता चौमासा। जेठ झुराय सिंध को आसा॥ सिंधुको जल संसार बिडाई। मेघमाला छप्पनकोट बरसाई॥ सरिता सिंधुको सेवक आही । स्वामी सरवर कबहुँ नहिं चाही ॥ निरगुण बास फूळ भये सरगुण । सगुण देंह बोलता निरगुण ॥



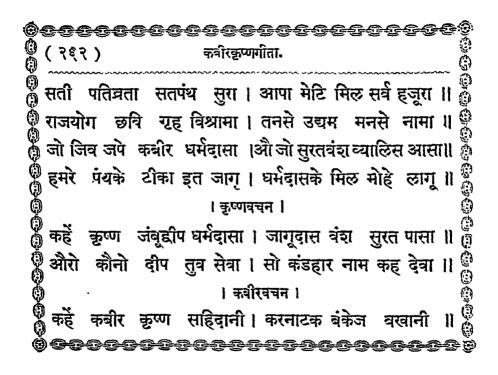
कवीरकृष्णगीता. मुखसों त्रीत सबहिं त्रभु जानी । गुप्त त्रगट पिया व्रत चित ठानी ॥ भली छांड नहिं करिय सदाई । भली भला सुरत संतन गाई ॥ कोई मदवारे सो मदफल पावे । बिजधर मे मद माद समावे ॥ दोहा-कहें कबीर शीकृष्णमों, जिन छांडह सत व्योहार। सत्तिहें ते गत पाइये, झूटिह नस्क में डार ॥ कोटिन काल निरंजन आवे। जो मोहि जपे ताहि नहिं पावे॥ नाम हमारो गावे । यम त्रिण तोड प्रवाना पावे ॥ स्वांस सतनाम समावे । गगन मगन सतनाम सुहावे ॥ अधर सधर दुग दश प्रकाशा । भीतर बाहर राम निवासा ॥

(२५८) कवीरकृष्णगीता. यंत्र मंत्र औषध तप योगा। तीर्थ व्रत देव चंदन भोगा॥ सबे आस तज भज गुरु साघू । कहें कबीर सब मेर उपाघू ॥ डरे न यमसो बल के मोरा। सुमरे नाम कवीर वंदीछोरा॥ पूजे बोलता सब जिव गमा। मन वच कर्म सतनाम विश्रामा॥ राधे ध्यान तो जियत तेहि भेंटे । विश्वासी जियहिं अंत दुख मेटे ॥ सुन आतुर हरि साज मगावा ! नरिअर पान मिष्टान्न सुवाहा ॥ सबे साज आनेउ बहुताई। घृत पकवान सुवास वसाई॥ सकल देवतन भोजन कीन्हा । तेहि पाछे हीर बीरा लीन्हा ॥ यम त्रिण तोर काल मुख थूंका । दीन्हो पान मेट सब चूका ॥

कवीरकृष्णगीता. सतगुण देवता कोट इकादस । सबन पान छीन्हा हरि पारस ॥ तमगुण पेल पराने । विष्णु व्यासको निंदा ठाने ॥ रजगण । कुष्गवचन । महाआनंद कृष्ण मन भयऊ । अव हम राज निकंटक पायऊ ॥ जेहि रक्षक भये सत्यकबीरा । बार न वंके तासु शरीरा ॥ कृष्णके दुरवासा ऋषि गुरु हैं। सत्य कबीर सबके सद्गुरु हैं॥ सत्त मिले सतकवीरके हाटा । सत्त विना जिव वारा बाटा ॥ तीन लोक महँ डंका परिया । सबते श्रेष्ठ कबीर ठहरिया ॥ जीव उवारन ताके सब दासा । विष्णु व्यास सतनाम प्रकाशा ॥

(२६०) क्वीरकृप्णगीता. कहें कृष्ण सेवक जत वाणी। हम तुम सेवक सेवक जानी।। जगमहँ कोतुक पंथ चलाई । निज पंथ इस ताहि बतलाई ।। दृत हमार तासु रह दासा । जो कोइ होय कबीर गुरु आसा ॥ सबीर नाम प्रति स्वास जप प्राणी । कवीर नाम भज लहे सुख्धामा ॥ । कवीरवचन । कहें कवीर सुन क्रुप्ण सुजाना । तुम हमरे महँ सकल समाना ॥ जव तुम चाहो दरस मम किया । नाम सरूप प्रेम चित दिया ॥ जाके नाम सरूप चितलावे । गुप्त प्रगट ते दुईान पावे ।। अब तुम इच्छा हमरे हांथा। हमरे दास कंहँ देही साथा॥

क्वीरक्रणगीता. मम अंस औतारा । थापेउं ताहि जम्बूद्दीप कडिहारा दोहा-भर्मदासके अग्रवा, जात्रित चूरामनदास । हम जग होय जगाइब, करव पंथ प्रकाश !! जो गुरु नांद् पुत्र धर्मदासा । व्यालिस वंश धर्म दास प्रकाशा ॥ पन एक सरत गोपाललेव नाऊ । तुम्हरो प्रीत गोपाल सुन भाऊ ॥ तुम्हरी सुरत रहे मम अंगा। हम तुम व्यापक सकलो संगा॥ राम कबीर कबीर सोइ रामा । अविनाशी सेज संत विश्रामा ॥ सब पर दाया करहु गोविन्दा । एक मजूरी भक्त मुख टेके रहे । सत्यनामके रहनी



कवीरकृष्णगीता. दरमंगा दक्षिण चत्रभुज राऊ । सीलदेश सहते जी सुभाऊ ॥ हम सब ठौर भक्त तुव गाऊं । तुम हमरी महिमा परचाऊ ॥ अपनी महिमा आपहि लाजा । कोइ कहे हम मिथ्या काजा ॥ आपहि आप वडा किये होय पापा । गुरुकी महिमा कहि मिल आपा॥ | कुष्णत्रचन | कहें कृष्ण अब पायऊं जानी । एको जीव तुव निहं अघखानी॥ सत्यकबीरा । भज कबीर टैरे भौ पीरा ॥ सांचे दोहा--कहें कृष्ण सुन न्यास सुख, औ गऊरस सबकोय। सत्यक्बीर मुक्तके दाता, सब जीवहिं गत देय ॥

कवीरक्रणगीता. `२६४) काल निरंजन बड सुख देई । जार झरकाय पापा खोय लेई ॥ धन्य विष्णु जो कछ सुखदाता । तुम सब कृष्ण कवीर विधाता॥ । कवीरवचन । कहें कबीर सबिहं जिव तारों । कालिहं बांध रसातल डारों ॥ अधपत सो राजा कंहँ भावे। जो परजाहिं सुख देय न सतावे॥ कहा करों निज शब्द हिताकी । नातो छिनमहँ मेट देवे पापी ॥ अब यहि भला बुरा निंह लेखा । कपुत सपूत मात पितु एका ॥ सब सुत पर पितु करे जो छोहा । निकट अबुब भक्ष देय तोहा ॥ निरंजन हमरे बंसा । महाकाल जग घालक संसा ।।

कवीरकृष्णगीता. ताते त्रिप्णु तुम मम सिख लीन्हो । प्रगट निरंजन मम चित दीन्हो॥ हम डर यम थरहर अब कांपे । जो मोहि भजे ताहि लख आपे ॥ कबीरके मक्त विहुन जो प्राणी । ताहि काल झरकावे आनी ॥ विष्णुकी भक्ति संपूर्ण करई । एक रोम तब यमके डरई ॥ और देवनको भक्षे काला। एकहि सत्तकबीर रसवाला॥ सव मिल भक्ति कबीरके मानी । सत्यनाम महिमा विध आनी॥ कृष्णसे सत्यकबीरा। मम वचन सनह यदुवीरा।। अब हुम पंथ जगत विस्तारा । धर्मदास कंहँ थापव कंडहारा ।। जीवलोक केंहँ जाय हमारा । ताहि न पकडे काल लबारा ॥

(२६६) कवीरकृष्णगीता. भजब जीव सकल कल लोका । सब जीवन कर मेव सोका ॥ ठीका पुन्य सती औ गंगा । सबके सत्त करे निरंजन भंगा ॥ त्रासिंहै सकल जीव घर काला । तब हम प्रगटे रूप दयाला ॥ गुरु सद्गुरु साधु दुखभंजन । कबीरनाम ठर डरे निरंजन ॥ कालहिं मेट सकल जग तारों । आवागवन दुख सुख निवारों ॥ । कृष्णव्याससुखदेवगरुडवचन । कृष्ण व्यास सुखदेव खगराया । चरणटेक सब विनती लाया ।। हम सेवकपर दाया करिये। पल २ छोह हमारो धरिये॥

कवीरकृष्णगीता. । कथीरवचन । कहें कबीर हम निकट प्रेमते । नाम भजे भौ तरे क्षमाते ॥ प्रेम बैन कहि गांवे बीरा। संग सबनके स्वास शरीरा॥ बहर ध्यान विनति प्रकाशा । वरणहु कृष्ण चाल हरिदासा ॥ संसारी जिव कैसे तरि हैं। सत्यनाम बिन भौजल परिहैं॥ । श्रीकृष्णवचन । कहें कृष्ण जिन्नको निस्तारा। बिन कबीरको जीन्नहि तारा॥ पूर्ण पुण्य जब जीवहिं होय पूरा । तबसों नाम कबीर भज सूरा ॥ कबीर नाम प्रताप बड़ भागी । मुक्त होय सो संत सोहागी ॥

(२६८) कवीरकृष्णगीता. कबीर शरण तब प्रापत होई । परम पुनीत कबीर भज सोई ॥ कोट जन्म पुण्य प्रकासा । पूरण पुण्य होय सहुरु दासा ॥ सत्यकबीरको सद्गुरु जाना। सद्गुरु अंश मोहि पहिचाना॥ हमहू सत्यनामकी आसा। बांचिहि काल निरंजन फांसा॥ जिम जगकी इसलता नहिं सेवा। खातिर चढै न पाइक देवा॥ तैसे शरण कबीर प्रतापा। होय निश्चित छूटे तिहु तापा॥ जौ लगि बनि जीवको निस्तारा । बिन कबीरको जीवहिं तारा ॥ पूरण पुण्य होय जिव पूरा । तब निज नाम कबीर भज सूरा ॥ कबीर नाम प्रापत बड़ भागी। संत सोहागिल सो अनुरागी॥

कर्नारकप्णगीता. कबीर शरण तत्र प्रापत होई । परम पुनीत कबीर भज सोई ॥ कोटिन जन्म पुण्य प्रकाशा । पूरण पुण्य होय सहुरु दासा ॥ सत्यकवीरको सहुरु जाना। सहुरु अंश मोहि पहिचाना॥ सत्यनामकी आसा। वांचिह काल निरंजन फांसा॥ जौलग वानेज न हीरालाला । तौलग संग्रह घोंघी रिसाला ॥ जौलग पारस हांथ न आवे । रती हेम दुर्लभ केंह्रँ पावे ॥ जौलग अभी वृक्ष सुघ नाहीं । तौलग ताड़ खज़रहिं खांही ॥ अस कवीर विना सब धर्मा। कबीर बिना जिव मिटे न भर्मा॥

(२७०) कबीरक्रणगीता. । गरुडवचन । कहें गरुड़ सुन त्रिभुवन राई । तुम अंतर करेहु गोसांई ॥ तुम कबीर मिल जीव बचाहू । समय परे कस जीव नचाहू ।। तुम यम दिशि होय बोलत अहहू । दुर्बल जीव लख दृष्ट न खोलहु॥ । श्रीकृष्णवचन । कहें कृष्ण सुन गरुड़ सज्ञानी । बातकी जड़ तुमह़ नहिं जानी ॥ हम हैं निराकारके बेटा । पितु आज्ञा जाय निहं मेटा ॥ कहा निरंजन मोहि बुझाई । चित्र गोपित्र औ जहां रिसाई ॥ कहिन केहैं निरगुण दासा। दूतन जायह तिनके पासा।।

कवीरकृष्णगीता. तिनके दास छुयेह जिन कोई । निरगुण भक्त कबीर निज सोई ॥ कबीर प्रताप राज हम करहीं । कबीरके द्रोह किये जारे माहीं ॥ सत्यकवीर सो अलगहि जीऊ । तेहि तर लावह कर हद धीऊ ॥ । निरंजनवचन । दोहा-कहें निरंजन कृष्ण सुन, निर्गुण भक्तहें छांड । निर्ग्रण भक्त बिहून जो, ताहि नरक लै डार ॥ | कृष्णवचन | कहें कृष्ण सुन पन्नग त्रासी । यह बिघ जीव अमे चौरासी ॥ उत्तम भक्त कबीरको आहीं । महिमा जीव बिरल लख ताहीं ॥

कवीरक्रणगीता-(२७२) आद् अनाद् निरगुण कबीरा । स्वासरूप रम सक्छ शरीरा ॥ जब कबीर तब और न कोई । कबीरके किये सृष्टि सब होई ॥ सबते उत्तम सत्य कबीरा । तिनके निकट विष्णु धर धीरा ॥ विष्णु निकट ब्रह्मा ठहराये । ब्रह्मा निकट रुद्र चल आये ॥ देवी निरंजन ऊपर नीचे । सत्यकबीर न्यारा सब बीचे ॥ सत्यकबीर प्रसंग सतोगुण। सद्भुण विष्णु देव सो निरगुण॥ निरंजन अंश ब्रह्मा मन रूपी । अप्टंगी अंस रुद्र अंधकूपी ॥ एक भाव जग बरते कैसे। ताते पृथक् सद्भुण बसो रजतमके माहीं। ताते त्रिष्णु सत्य बिरथाहीं।।

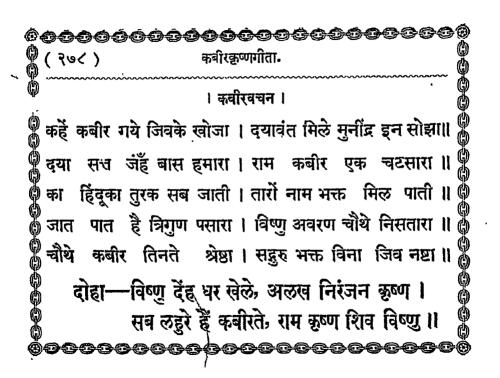
कवीरकृष्णगीता. (२७३) दोहा-सत्यकवीरके शिष्य सुत, ताते सहुण विष्णु । दस चोविस विष्णु तन तामी, सृष्टि राम विष्णु।। तमगुण देंह वनाई । सतोगुण अंस जिव आन समाई॥ अप्टंगी भवानी । तमगुण पिता निरंजन जानी ॥ रजमता सत्यकबीरके अंस सतोगुण जीऊ । कहें कृष्ण जिव सब जग पीऊ॥ दोहा--जीव जगमें पीउ है, जीव कवीरके आहिं। कवीरसो आप सरपुरुष हैं, अमरलोक रहाहिं॥ जब जित्र डेह निरंजन राई । तबै जीत्र रोवे चिल्लाई ॥ जाकर जीव ताहि दुख व्यापे । कबीर कहाय प्रगट प्रभु आपे ॥ १८

(२७४) कवीरकृष्णगीता. जीव जरत उबारेउ कबीरा | करे भक्त जब धरे शरीरा || जीवहिं घोखे परे भुलाई । सार असार चीन्ह नहिं पाई ॥ देंह धरे विसरे सब ज्ञाना | देंहसे न्याग भये सब जाना || जगको वेद शास्त्र अरुझावे । कबीरके भक्त निहं विप्र दढावे ॥ कुसहा ब्राह्मण अगुवा काला । कमैवरय जिवपरे बिहाला ॥ दे विश्वास जो पुण्य करावे । मृतक आस जो पूर्व फल पावे ॥ जियत कर्मफल नेक न दृष्टा । पूर्वल आस मरे सो भिष्टा ॥ सौदा सोई जो दांखे दृष्टा। फल औ फूल दृष्टि सुख चिष्टा॥

कवीरक्रणगीता. —उपजन विनसनको मता, ब्राह्मण काजी भाष । स्थिर घर जो पहुँचे जो, सत्यकवीर व्रत राख ॥ पोंडश रवि शशि भाल छवि, अग्र अमी रस चाल। अस छल सत्य पुर महँ, शब्द भेद मत भाष ॥ तमगुण जोत सतंगी । सतगुण त्रिष्णु कबीर प्रसंगी ॥ रजगण सत्य कबीरके पारस सेती । सतोगुण राम कृष्ण विष्णु केती ॥ फिर २ जीव **अमे** चौरासी ।निरगुणको निदक त्रिगुण उपासी॥ एक जासो भय तीनी । माय बाप गुरुते सब चीन्ही ॥

(२७६) क्वीरकृष्णगीता. दोहा-माय बाप एरु सहरू साध संत दिज एक । पवन एक बाजा बहुत, कहें ऋष्ण सत देक ॥ विनय विष्णु जो परम सुहाई । आज्ञा कर्राह कबीर गोसांई ॥ अज्ञा सब जिव दियों मुक्ताई । ऐसी करव हमसों किम भाई ॥ तात मातते गुरु अधिकाई । सद्गुरु शरण विना जिव खाई ॥ विना कबीर न वांचे भाई। कबीर साहेब सहुरु सांई॥ कोटि माहिं कोइ जीव पुनीता । संत साघ संग पाठ कृत गीता ॥ गीतामाहिं बहु संघ कबीरा । मिले ताहि जो मथे अर्थ क्षीरा ॥ मथे क्षीर ले माखन तावे। तब घृत वास सुवास वसावे॥

क्वीरक्रणगीता. तिम कबीर संतपृत कुल वासा । और पंथ विन आसंतिक आसा॥ दोहा-वेद मथके गीता कीन्हा, गीता मथके सार । सार सो सार कवीर वखानाहे, भाषे कृष्ण मुरार ।! जिमि सब तनमें चक्षु नाका । तस तनमें स्वासा जिव ताका ॥ सबे कबीर कहि २ गोहरावा । तत्क्षण सत्यकबीर चलि आवा ॥ सबे कबीर घाणमें होताहिं पहुचै । परे सबनमें दृष्टि कबीरके ॥ उठे सबे भहराई | चरण पखार सिंघासन बैठाई || चरणोदक ले विनती कीन्हा । कंहँ गयउ साहेब दरश विन दोन्हा



कवीरकृष्णगीता. ग्रप्त प्रगट निरग्रण वो सरग्रण । व्यास उक्ति मति श्रेष्ठ सो निरयण ॥ कबीर व्यासकी वाणी। गीता मता सार सब ठानी।। करह प्रकाश भागवत गीता । सुने ज्ञान जिव मिटे मन चीता ॥ हम कबीर जिव दाया दृढावे । जहां सत्त ताके ढिग आवे ॥ सत्यकबीर हमारो नाऊं। दया सत्यके निकट रहाऊं॥ तुम पूछेहु कब गवनेहु स्वामी । मक्का पहुँचेउ मुन नभगामी ।। राय अमोलिक कंहँ शिष्य कीन्हा। नाम पानदे मुक्त कर लीन्हा।। जम्बुदीप धर्मदास कंडहारा । ताके अगुवा जीवन कंडहारा ॥

(२८.०) कवीरकृष्णगीता. जागू प्रगटके जगत जगैहैं । कबीर धर्मदासके भक्त दुढै हैं ।। कहायब सत्यक्रबीरा । लहुरा कबीर जागु गंभीरा ॥ कहें कबीर हम जगमें नासक । दासातन घर दास हो दासक ॥ सो सानिये त्रिभुवनपति राई । कबीर धर्मदास जीव जीव तर जाई । व्यासवचन । कहें कृष्णसों व्यास सुजाना । जब भगवान कहो कछु ज्ञाना ॥ अगले जीवन शन्द सहाई । परख शन्द पंथ ज्ञान चलाई ॥ ऊंच नीच तन सब जिव तरई । बहुरिन योनी संकट परई ॥ वेर अनंत पूछहु मोहि भाई। मुक्तदाता कवीर

कवीरकृष्णगीता. कबीरके भक्त बड़े तप पावे । त्रिगुण कर्म भर्भ अरुझावे ॥ जहँ कबीर समर्थ गुरु आपे । मुखपे पान नाक किम थापे ।। सत्यकबीरसे जाई। कबीर कहें सोइ बीज ठहराई॥ कहें व्यास तुम करता स्वामी । कबीर समर्थ करता सुखखानी ॥ । कृष्णवचन । कहें कृष्ण व्यास निज दासा । गुरुके एक रोम प्रति आसा ॥ करता हरता दाता भुगता। गृह बैरागी योगी जुगता।। कौनहु पंथ गुरु सम नहिं कोई । सबपर श्रेष्ठ कबीर गुरु सोई ॥ सुन सतनाम कबीर गोसांई । गृही विरक्त गत देहुं चिन्हाई ॥

(२८२) कवीरकृष्णगीता. । गरुडव्यासवचन । गरुड व्यास हरि चरण लपटाने । कबीर चरण गहि विनती ठाने ॥ कबीरसे पूछिहं न्यास निरुवारा । रमता बैठा भाव विचारा ।। स्थिर रमता भेद बताऊं। प्रेही औ बैराग सुनाऊं।। तुम कंहँ प्रिय रमताकी बैठा । बैरागी प्रिय औ गृह गूढा ॥ धर्मदास तुम्हरे कंडहारा। नाम बोहित तुत्र नाम अंधारा॥ और सबके तुम हो सुखदाई । मुक्त पंथ मोहि कहो समुझाई ॥ । कवीरवचन । कहें कबीर गरुड़ सुख व्यासा । कृष्ण समेत सुनहु सब दासा॥

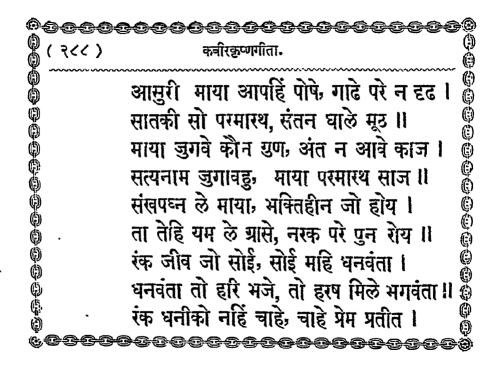
कवीरक्रणगीता. कहें कबीर सुनो मुनि व्यासा । भो मोहि प्रीत भजे मोहि दासा ॥ थ्रेही भक्त सो उत्तम आही। बैरागी उत्तम ग्रेही भक्त आपन कुळ तारे । बैरागी औरन निस्तारे ॥ त्रेही भक्त सोंना कर भाऊ । बैरागी पारस निरमाऊं ॥ साकट आमिष अहारी प्रेता। खोवे हीरा जन्म अचेता॥ धन्य भाग जो राधेव नामा । नाम भक्त प्रीत सुखधामा ॥ बिन सतनाम तरे निहं कोई । क्रीतम नाम ते काज न होई ॥ सद्गुरु लख पावे । यमफंद काट जीव मुक्तावे ॥ अमरलोक ले राखें हंसा। छुटे जन्म मरणकी संसा॥

7 (8) क्वीरक्रणगीता. सद्गुरुकी आसा चित राखे । सोई करे शिष्य जो गुरु भाषे ॥ केते शिष्य गुरुको तज भागे । तीर्थ व्रतकी आसा लागे ॥ तीर्थ वत कोइ तारे नाहीं । सबे मुक्त गुरुसेवा माहीं ।। लाभ दिसंतर होई। साध दरश गुरु लाभ है सोई॥ औ तन मन दृढ़ रहे गुरुसेवा। ते फल सब घर बैठे लेवा॥ अथवा जो मन होय उदासा । देखिय संतनकेर विलासा ॥ तो गुरु सेवा महँ कोइ राखी । करहु दिसंतर दीन्हेउं साखी ॥ गुरुकंहँ अकेला तजे न भाई । कल्पे गुरु तेहि दोष बहु भाई॥ गुरु आज्ञा जो करे दिसंत्र । नाम सुरत गुरु घ्यान निरंतर ॥

的时间的的的的 कवीरकृष्णगीता. दोहा-सात पांच संमत भरी, ग्रह सेवा चित राख तव एरु आज्ञा लेयके, करे दिसंतर जाय ॥ दिसंतर देखे देशा। देखे राजा रंक नरेशा दशा विचारे लेखे। काम कोधका मुरचा पेले॥ मनकी दशा चीन्ह विसरावे । मन मायाका रंग न भावे ॥ जेंहँलग कुवंथ घोखा भ्रमा । तंहँलग आय मन माया कर्मा ॥ नागिन नारका चोंट बचावे । नाम ध्यानसो दशा जुगावे ॥ त्यागे रहे दीनता। शब्द प्रकाशे नाम लीनता॥ सत्यनामकी महिमा भाषे। तृष्णा लोभ न मनमें राखे॥

कवीरक्रणगीता. (२८६) रहे असोच सो आपन कामा । पल २ निशि दिन आठहु यामा ॥ पर पोषण भिक्षा नहिं लाजा । नित्त पित्त करहिं ब्रह्म समाजा ॥ बेगमी रहे भरोसे साहेब। सोई संत सब माहिं मुलाहेब।। आवे सहज विचार सो पावे । परिहरि आमिष अंकुर फल पावे॥ सत्यपुरुष कंहँ भोग लगावे । महाप्रसाद संत मिल पावे ॥ कोइ जीव वचन नहिं पावे । सबमें राम कबीर कहावे ॥ कोई फकीर होय पाले देहा । मकरा ताज गोहसो नेहा ॥ जो साहेब भेजें सो पावे। रूखा सूखा नहिं बिलगावे॥ 🗓 क्या पाटाम्बर क्या टाटम्बर । क्या चिंतामणि क्या पीतांबर ॥

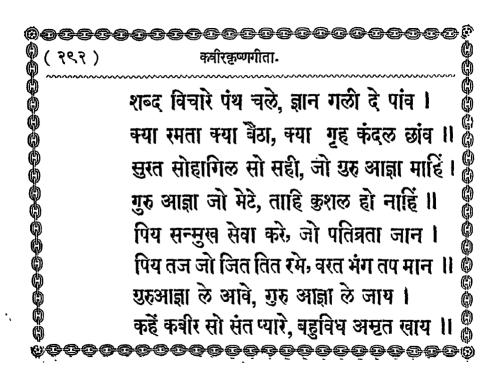
の自身の कवीरकृष्णगीता. साहेव भेजे सो सही। कछपत भिक्षा छेना विन मागे कोई कोट चढावे । सो लीजे कछु दोष न आवे ॥ अजाची भिक्षा आवे । आप चुगे औ सबहिं चुगावे ।। संतन सेवकाई । सवसो प्रीत सुमत सुचिताई ॥ वह माया कहु कौने काजा। जो नहिं परमारथ पथ साजा।। एक जो माया जोगवहिं भाई । विलसहिं आप औरन डहकाई ॥ है यमकी फांसी । नाम विना भरमे चौरासी ॥ दोहा--माया है दो भांतिकी, जो कोइ जाने खाय। एक मिलावे नामको, एक नरक ले जाय ॥



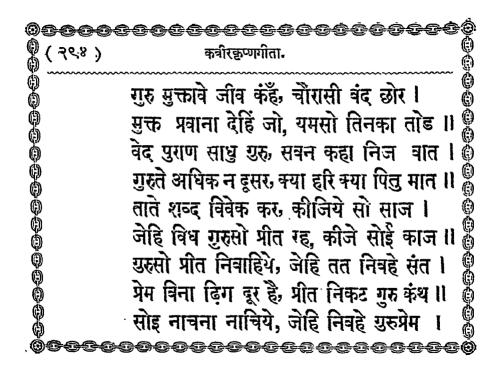
कवीरकृष्णगीता. युरुभक्ता मोहि भावे, कहें कवीर अतीत ॥ ग्रहभक्ता मम भक्ता, साध भक्त मम दास । हरिभक्ता सोऊ हम, कहें कवीर हरि व्यास ॥ आतमपूजा जिव दया, परआतमको सेव । कहें कबीर सत्यनाम भज, सहज परम पद लेव !! परपंचा । नाम भजे जिव पावे संचा ॥ पांचो परपंची तन भुगता। पांच तीन साधे अवधूता॥ सुर नर अज हरि हर मुनि जेते । तन धर पांच तीन घर तेते ॥ विरला गुरु गम परिख भये न्यारा। सो वांचे जिन शब्द विचारा॥

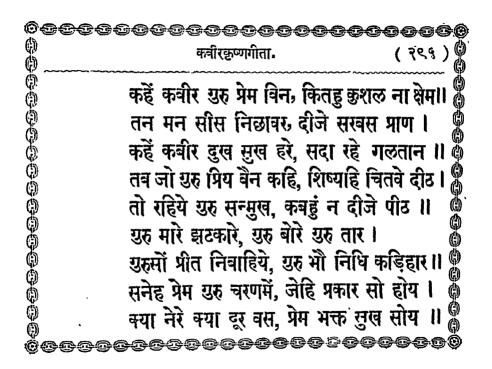
ं २९:०) कवीरक्रणगीता. जो राजामहँ थाको माना। शब्द महंत महातम जाना॥ शब्द विना जग बाउर अंघा । शब्द विना जग परे यमफंदा ॥ सद्भुरु शब्द परख पंथ चाला । जो जीते जग वरवस काला ॥ काल निरंजन अंसा । अज्ञानीको करे विधंसा ॥ ज्ञान द्विप्रवेश] होय मन सांचा । नाम बचे ्जित्र यमसो:बांचा ॥ भजे नाम जो मन चितलाई । पांच पचीस तीन थक जाई ॥ प्रगट होय कला सतनामा । शब्द परख चले तेहि शुभ कामा।। दोहा-नैन नासिक जिभ्या, श्रवण इंद्रो स्थान । पांचो आने सहज घर, सोई सिद्ध प्रवान ॥

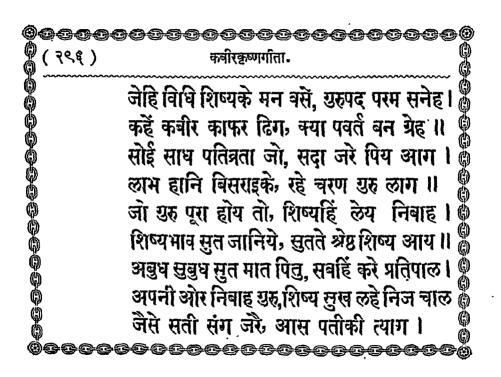
कवीरकृष्णगीता. जिभ्या बंका घाट जुगावे । मिथ्या चुगल आमिष न भावे ॥ जो बोले सो अक्षर सूंचा। नाम भक्त सतसंगत ऊंचा।। जो साहेब देय धार घृत मेवा । सहज भाव कर दोनों लेवा ॥ जैसा भीठा दिध घृत खोवा । फिरका साग ताहि संजोवा ॥ अग्रवास रस मीठा । रसना उतर कंठ तर फीका ॥ दोहा--जैसा मीठा घृत पक, तैसा फीका साग। सत्यनाम सो सचे, कहें कवीर वैराग ॥ ग्रेही साध सेवा करे, भाव भक्त आनंद **।** कहें कवीर वैरागी, निरवानी निरद्धंद ॥



क्वीरक्रणगीता. कहें कवीर ग्रुरु प्रेमवश, क्या नेरे क्या दूर । जाको चित जासों बसे, सो तेहि सदा हजूर ॥ गुरुआज्ञाते जो रमे, रमते तजे शरीर। ताके मुक्त हजूर हैं, सद्भुर कहें कबीर !! गुरुके सन्मुख जो रहे, सहे कसोटी दुःख। कहें कबीर वा दुःख पर, वारों कोटिन सुक्ख ॥ सहरू अधम उधारन, दयासिंधु गुरु नाम । गुरु विन कोई न तर सके, क्या जप अछह राम।।







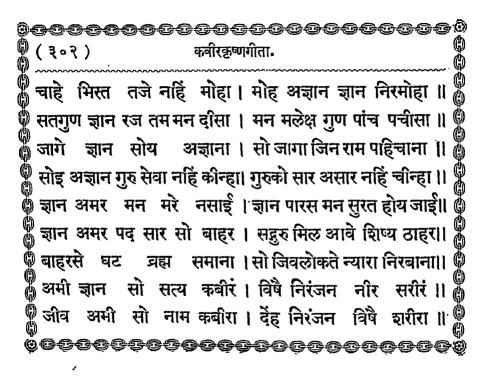
कवीरकृष्णगीता. सुघर क्रूर सोचे नहीं, शिष्य पतिव्रत सोहाग ॥ सरवस सीस चढाइके, तन कृत सेवा सार। शुभ पियास सिंह ताङ्ना, ग्रहकी सुरति निहार ॥ ग्रहको दोष रतिक नहिं, शिष्य न साधे आप। शिष्य ना छोड़े मनमता, यरुहिं दोष दे पाप ॥ जैसी सेवा शिष्य करे, तस फल प्रापत होय। जो वोवे सो छुवे, कहें कबीर विलोय ॥ कहें कबीर ग्रह सो मिले, नाम होय प्रकाश । ग्ररु मिल शिष्य भौनिधि तरे, सुनहु कृष्ण सुनिन्यास

(२९८) कवीरकृष्णगीता. सुनियो संतन साध मिल, कहें कबीर समुझाय। जेहि विधि छरुसो प्रीत होय, कीजे सोइ उपाय ॥ । च्यासवचन । विनती व्यास कीन्ह पग टेकी । तुनसन काहु न देख विवेकी ॥ ज्ञान दसा औ मनकी दसा । सत्यकबीर करो प्रकाशा ॥ । कवीरवचन । कबीर निरने टकसारा । मनमत ज्ञानमता अंग प्रथम गुरु करई । गुरुको शब्द हृदय गह घरई ॥ गुरु तो ऐसा कीजे माई । पूर्ण ज्ञान सत चाल दृढाई ॥

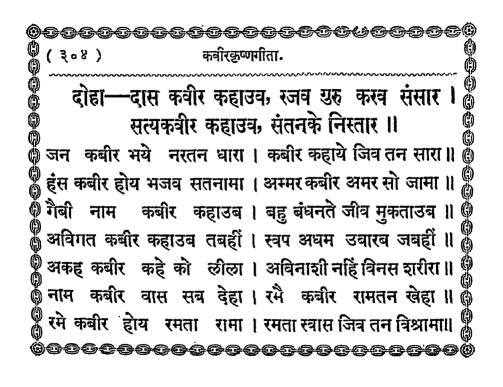
कवीरक्रणगीता. (२९९) सत्तलोकले जीव पहुँचावे। दया क्षमा सुखर्सिघु समावे॥ पूछे गुरुसे होय गलताना। जो गुरु कहे सोई सतनामा॥ गुरुमुख ज्ञान विचारे लीन्हा । मन औ ज्ञान भिन्न तब कीन्हा ॥ द्या क्षमा औ शील संतोषा । ज्ञान दया औ जीवपंथ मोषा ॥ विष्णो ज्ञान साकट अज्ञानी । शीतल ज्ञान कोध मन जानी ॥ असंत औ आतुर ज्ञाना । शील ज्ञान बेशील अज्ञाना ॥ निरगण ज्ञान औ ज्ञान अतीला । धीरज ज्ञान अज्ञान हडीला ॥ आप खाय औरहिं देय ज्ञाना । गुरु साधू तज खाय अज्ञाना ॥ सेवा ज्ञान न उस अज्ञाना । कामी मन निहकामी ज्ञाना ॥

कवीरकृष्णगीता. तीर्थे व्रत तप मनको भाऊ । नाम भक्त पुन ज्ञान लखाऊ ॥ चंचल मन स्थिर गुरु ज्ञाना । चंद् मान ज्ञान अगानित भाना ॥ दिवस ज्ञान अज्ञान भौ राती । अवरण ज्ञान अभै नाजाती ॥ आतम पुजा ज्ञान बखाना । मनमत सिला धात व्रत ठाना ।। दुबल सुपद ज्ञान प्रति ठाना । डिंभ धार को पूजे अज्ञाना ॥ मात पिता सेवे शुभ ज्ञाना । तात जननी तज त्रिय मन माना॥ हिंभ अहंकार दुती मन छाया । अछत दीन लघु ज्ञान सुभाया ॥ 🐧 पालक ज्ञान घालक यम बाजी । जैसे जग मनमत दिज काजी ॥ बोलता ज्ञान तन मन अंकारा । जायित ज्ञान स्वप्न मन चारा ॥

कवीरकृष्णगीता. ज्ञान परमारथ स्वार्थ मन मूढा । जुवा मनुज ज्ञान पद बूढा ॥ अपन पराया एक सम जाना । और तोर मन बुध बिगराना ॥ मात पिता सिर देय सो ज्ञाना । आवह नारी विष खोट अज्ञाना॥ भीख अजाची ज्ञानको अंगा । धूमधाम जांचक मनरंगा ॥ देह दाग मनमता कहावा । मन दागे जो ज्ञान सुभावा ॥ नाच छाछ विश्वा नट ठाढी । यह मनमता यम चौकी गाढी ॥ मीन मास मद भष मन वाजी ।कसतुरी मिमयाय असत बन खाजी चाहे वैराग तजे नहिं रानी । सन्यासी संग्रह मन चारी ॥ 🖣 झंखे मन पुलकित होय आना । सरगुन गुरु मन सद्गुरु ज्ञाना ।।



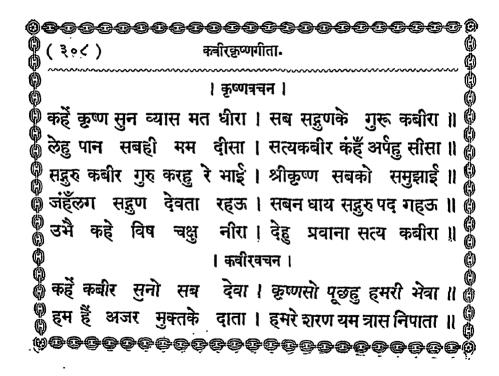
कवीरक्रणगीता. आवत स्वास सो सत्य कबीरा । निकसत मरे निरंजन कीरा ॥ मीर हमीर मन माया जानो । अजर पीर कबीर बखानो ॥ व्यास कहें कस पीर कबीरा । सत्य कबीर भल दास गंभीरा ॥ । कवरिवचन । कबीर कलयुगके आदी । मीन मांस भांसि हैं नर बादी ॥ मलेक्ष महादेव अहैं |गौ द्विज विध सिरिया नेगी अहै॥ महादेविहें महम्मद किहये। हिंदू केर धर्म निहं रहिये।। तब हम पीर कबीर कहाउब । साधि मलेक्ष गौ दिजहिं बुचाउब पक्षका भयो प्रकाशा। हमरे विष्णुसों कस दुइ भासा।। विष्ण



कवीरक्रणगीता. दीन दयाल कबीर कहाये । दीन दुखित जिव पालन आये ॥ खसम कबीर कहाये तबहीं । जीव सोहंगदे व्याहेउ जबहीं ॥ काल मरदन कबीर कहाये। यमहिं जीत जिवलोक पठाये॥ जोगजीत तब नाम हमारा । जब जीते योग माया निराकारा ॥ सत्साऋत तब नाम हमारा । जब सत्त प्रकाश कीन्ह संसारा ॥ बंदीछोर तबहिं कहलावा । जब यम बंदिछोर मुक्तावा ॥ मनकहँ जीत मुनीन्द्र कहाये । करुणामय होय दया दृढाये ॥ बेलि हमारी । निरंजन कंहँ सौंपा बारी ॥ निरंजन पुत्र पुत्री अष्टंगी। मम द्रोही जो ताको संगी॥

कवीरकृष्णगीता. (३०६) हमरे दुष्ट मित्र नहिं कोई । सर्वेहिं व्यापक न्यारा सोई ॥ साधु द्रोह सोई मम द्रोहा । साधुसेवक मम सेवक वोहा ॥ जो मम संतकी सेवा करई । हमहिं जानके गुरुको धरई ॥ ताहि मुक्तिका संशय नाहीं । गुरु साध भक्ता मम आहीं ।। गुरुद्रोही सो साधुको द्रोही। अपने राम न भेटेउ वोही॥ जग महँ चहुं युग गुरु औ रामा । राजा राम गुरू सुखधामा ॥ गुरु राम दोय नाम हमारा । राम असोच गुरु भी कंडहारा ॥ अगम ज्ञान मन पूछिंहं बाला । बहुरिंहं . पूछेऊं पीर न्याला ॥ 🧣 पीर पराई सब दिन मेरा । सोई पीर जेहि पीर जिव केरा ॥

कवीरकृष्णगीता. कहों कहां लग विक्त कला जग । निरंजन एक मम रोम तनलग।। व्यासवचन । व्यास चरण गहि पुलकित भयऊं । सत्य कबीर मोहि मानद दियऊ॥ बड़े भाग मम सुखदेवकेरा । और गड़ुरके भाग बड़ेरा ॥ च्यासदेव कृष्णिहं सिर नाये। धन्य तुम कृष्ण कबीर चिन्हाये॥ कवीर विना को राखे जिवको । गुरु बिन कौन चिन्हावे पिवको॥ गुरु विष्ण सत सतको अंशा। सोई सत्यकबीर कुलवंशा॥ सवके मुल कवीर ठहराने । कवीरके डर यमराज डराने ॥



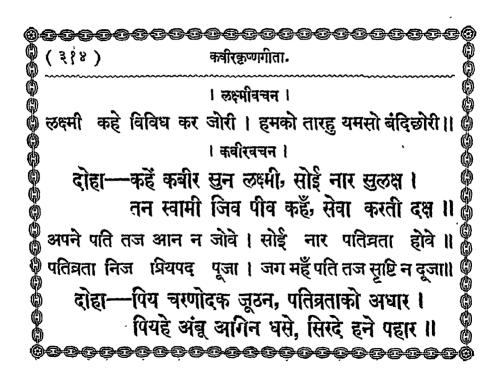
कबीरकृष्णगीता. जो हम कहा शब्द सहिदानी । शब्दकी चाल चले सो ज्ञानी॥ सबन कहा अर्पों शिर तोही । देहु पान आपन कर मोही ॥ सत्यकबीर तब आरती कीन्हा । अमी अंक सो बीरा दीन्हा ॥ चरणोदक दे तिलक कर दीन्हा ।तुलिस माल दे सिखवन कीन्हा॥ सब जिव जानहु एक समाना । जीवघात तज द्रोह अभिमाना ॥ साधु गुरु सम सेवा मानी। सुख स्थिर सद्गुरुकी वाणी॥ गुरु कर्ता गुरु सम नहिं कोई । गुरु कर्ता ते श्रेष्ठ है सोई ॥ करता देहीं घर गुरु करही। तो करता करता होय परही॥ सब महँ करता नाम कबीरा। रमे राम होय सकल शरीरा॥

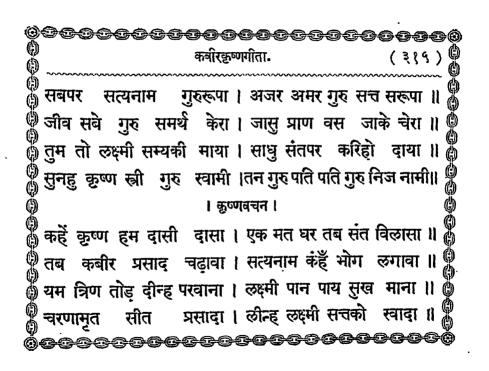
कवीरकृष्णगीता. सर्वे मई सो राम लखाहीं । राम सो अंश कबीरके आहीं ॥ जग महँ उलटी भाव दिखाये। जो स्वामी सो दास कहाये॥ करता आद कबीर भये दासा । राम कृष्णकी महिमा प्रकाशा ॥ सबमो राम सो रमिंहं कबोरा । जैसे घृत व्यापक हैं क्षीरा ॥ बराबर पोखे । पाप नाचि तबै पुण्य कर चोखे ॥ नवर ना कोइ पाप जिवधातसमाना । साधुसेवासम पुण्य न आना ॥ गुरुके भक्तसमान नहिं दूजा । पातित्रता जिमि प्रियपद पूजा ।। सद्भुरु पिव सो जीवके आहीं । पतिव्रताते गुरु भक्त श्रेष्ठ आहीं॥ तिन स्वामीके भक्त सुरलोका ।गुरु प्रिय भक्त सो जीव निसोका।।

कवीरकृष्णगीता. (3 ? ?) मंजार देंह घर सोई । गुरु साधुको निन्देउ सोई ।। नाम कबीरको गावे। तासु हृद्य कबीर समावे॥ तजे अभक्ष सुभक्ष सो पावे । मीन मास मदपर रत नहिं भावे॥ दोहा--मधुर मम पाय कमतुरी, माक्षी घोंघी चुन । मत्स्स मास मद त्यागे, पहुँचे पुरुष सनीप ।। पान परवाना पावे, समरे सत्य कबीर । कहें कबीर घर पहुँचे, बहुर न धरे शरीर ॥ भवानी । लक्ष्मी गायत्रि सकुचानी ॥ विष्णु महेश व्रह्मा हम सब गुरु विन केहि पंथ जायब । ना जानो केहि खान समायबा।

(३१२) कर्षाक्षकारमाद्वा. हमरे स्वामी तेहि सिर दीन्हा ।हम तीनो निल केहि पग लीन्हा।। । लक्ष्मीवचन । लक्षी कहें सुनो ब्रह्माणी। सुन सेवह कवीरमुखवाणी॥ क्वीरके दीक्षा लीजे । सत्यक्वीर चरण चित दीजे ।। कह रुझी नम पति सिरदारा । थौ मम पितके सहरु सारा ।। यह कह लझ्मी विष्णु पहुँ आई । सीस नाय चरण चित लाई ॥ करिये त्वामी मोरा । तव गुरु करों कवीर वंदिछोरा ॥ । विष्णुवचन । हंसके विष्णु तव आयसु दीन्हा । हन जो चहत सोई तुम कीन्हा॥

कवीरकृष्णगीता. दोहा—धन्य भाग तेहि नारको, विष्णव जाको स्वामी । बहुर भाग तेहि पुरुषको, जेहि घर विष्णव वामी। कहें कृष्ण नरिअर कर लेडू । सीस निछावर नरियर देहू ॥ दोहा-पान मिष्टान निर्यर, पुंगी फल पुष्प श्वेत । श्वेत वस्त्र सिंहासन, साजहु थार समेत ॥ जोत प्रकाशा । हीरा माणिक अत्र सुवासा ॥ पीछे निज नारी । चले भक्त राघे झझकारी ।। शिवको सिधाई । कबीरके चरण परस सब आई ॥ पुन सुन सत्यकबीरं । दीजे शरण नार त्रिय धीरं ॥





क्वीरकृष्णगीता. (३१६) सात दंडवत कीन्ह खसम कंहैं । तीन दंडवत संत तनपाति कंहैं ॥ कहा कृष्ण अब हम गति पावा । घर साकट वैष्णव करवावा ।। केते पुरुष आय गुरु शिष्या । नारी साकट घर प्रेंत परेखा ।। दोहा-भित करे जो स्त्री, तो वसिये घर माहि। साकट स्त्री मुंभनी, नहिं जैये तेहि पाहिं ॥ स्त्री बेटी बेटा भानजी। मात पितु बंधु परिजन काजी॥ ये सब सरगुण भ्रम पसारा । मोर मोर कर मरे संसारा ॥ मोर मोर का करहु रे आई। मोर आप पगु देख तवाई।। सब गुण शूद तासु धराई। भक्ति विना कछु काम न आई।।

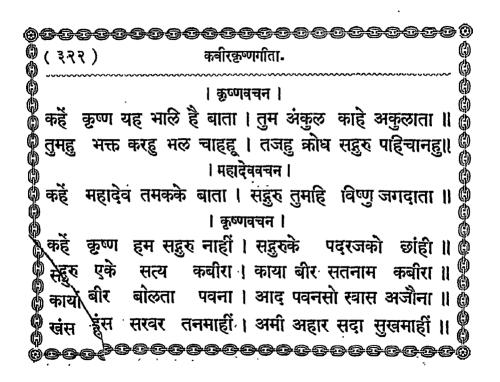
कवीरक्रणगीता. अपने मन सब भक्त कराहीं । सार भक्त विन नरक भोगाहीं ॥ सार भक्त सतनाम कबीरा । भजै कबीर न धरै शरीरा ॥ चौथा पद सद्गुरु स्थाना। सद्गुरु सत्य कबीर निरवाना॥ निरगुण भक्त पतिव्रत शरीरा । एक खसम सो सत्य कबीरा ॥ त्रिगुण भक्त सो आवा जाहीं । चौरासी महँ भटका खाहीं ॥ दोहा-सतग्रण रजग्रण तमग्रण, तिनके तीन सुभाव ॥ कौन सिरजे कौन पोखे, कोइ संहार कराव । रजगुण तमकी उतपत जाना । सतगुण पोबत जन्म सिराना ॥ रुद्र काल संहारे । त्रिगुण निरंजन भसम कर डारे ॥

कबीरकृष्णगीता. (३१८) बांचे विष्णु सत्गुण सत ठाई । सत्यके मूल सत्य कबीर सतसोई ॥ जेहि जस रुचे तैसो गुरु कीजे । विन गुरु जीव काल बस दीजे॥ दोहा-सावित्री औ गौरा, मगन भये हिर बैन । कहें हमहू एरु करों, सत्य कवीर सुख चैन ॥ कहें कृष्ण कबीरसे वाणी। शिष्य होन चाहें त्रिय दोय प्राणी। । कबीरवचन । कबीर स्त्रीबस स्वामी । पति कंहँ पूंछ नाम भज नामी ॥ । गायत्रीगौरावचन । गायत्री गौरा बहोरी। सबके स्वामी तुम बंदिछोरी॥

कवीरकृष्णगीता. दुतिया माहि कोइ हित नाहीं । दिन दश कच्चा सुख जगमाहीं॥ अंतकाल जब काल गरासे । तब गुरु विन नहिं कोइ निकासे।। अघा अष्टंगी तेहमें तानी।लक्ष्मी तुव शरण हम काल अधीनी।। सत्यकबीर तुम गुरु पितु माता । तुम्हरी दया बने सब बाता ॥ हम चीन्हा तुम साहेब आहू । सब बनजिया तुमही गुरु साहू ॥ तुम जोहि चितवहु सो तर जाई । तुम विन जियरा नरक भोगाई॥ गौरा कहें विहसिके वाणी। हमहू लखा कबीर सहिदानी॥ जबहिं विष्णु हरिनाकुरा मारा । शिव गुणयुत छिन असुरहिं मारा॥ हमहू शिवगण आई हां। बैठे हरिनाकुश सिरमाहा॥

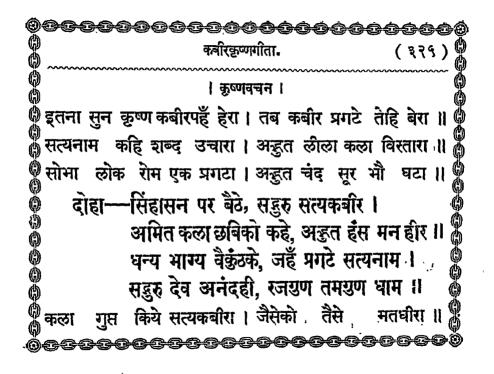
(३२०) कवीरकृष्णगीता. विष्णुके माथे। तब देखा मैं शिवके साथे॥ । कशीरवचन । कबीर सही तुम कहा । होहू शिष्य कापेलमानि पहा ॥ दीहा—कपिला गऊ कपिल मुनि, हो सहरू हो तास **।** तास शिष्य मम पुत्री, तुम्हरे होय निवाह ॥ । कृष्णवचन । कहा कृष्ण गौरा सावात्रिहिं। एके वृक्ष डार भै त्रिवधिहिं।। कबीर निरंजन डारा। साखा त्रिगुण पत्र संसारा ॥ पांचपचीस जीव संग परऊ । हंस चाल तज बक मग गहहू ॥

कवीरकृष्णगीता. हंस सोई जिन सद्गुरु चीन्हा । सद्गुरु सत्यकबीर चित दीन्हा ।। दोहा-सावत्री औ गौरा, भई कपिलमुनि शिष्य । विष्णु आदिक कवीर प्रमोधा, भयो सबन मन हर्ष ॥ तेहि छिन मात्र रुद्र अज आये । देश मुल्क सुध हरहिं सुनाये ॥ पूंछा विष्णु मृत्यलोक कहानी । चतुरानन शिव कहा बखानी ॥ । ब्रह्माशिववचन । महा आनंद होत सब ठाऊं। भौ मृत्युलोक वैकुंठ सुभाऊं॥ विष्णव भया सक्ल जग जाई । सत्यकबीर जपे दुनियाई ॥ राम कबीर करे पंथ जागा । जग सब भक्त भयउ मद त्यागा ॥ ्विष्णव होय सो गिने नकाहू। कहें के को तुम अज शिव आहू।।



कवीरकृष्णगीता. अंस सतनामा । सोहंग करता पुरुष बखाना ॥ एक कबीरते छोटा । सबसे बडे सोहंग नृप मोटा ॥ स्वास एकहि नाऊ । अनंत नाम स्वासके भाऊ ॥ दोहा-अनंत नाम एक स्वासके, स्वासा सबके माहिं। निरंजन अद्या अज हरि हर, जत स्वास विना कोइ नाहिं॥ सो स्वासा स्वासा बिस्थारहि । आद स्वासा सो भौ सोहंग छाही॥ स्वास सोहंग सो ओंकार भो तीनी। सबके रचना कबीरजी कीन्ही॥ दोहा--राम कवीरके अंश हैं, कबीर रामके अंश । राम कवीरके वंश है, कवीर रामके वंश ॥

378) कवीरकृष्णगीता. सत्य सो पिता पुत्र होय घाया । तबहिं पुत्र पिता कहलाया ॥ सत्यकबीरको अंसा । देंह निरंजन घट पर संसा ॥ । ब्रह्माशिववचन । सुनि ब्रह्मा शिव अचरज भयऊ । तबहीं शिव अस बोले लियऊ ॥ सही कबीर बडे हैं भाई। मोह कहा भूतको राई॥ जासे हम तुम सब मिल हारा । एक बेर नहिं कैयो बारा ॥ कबीर करता हम तबहीं चीन्हा । खरा जबाब जब हम कह दीन्हा ब्रह्मा कहें कबीर करतारा | कबीर कला सो अपरम्पारा || निरंजन जाके डर भौ माना । कबीरके त्राससो काल डेराना ॥

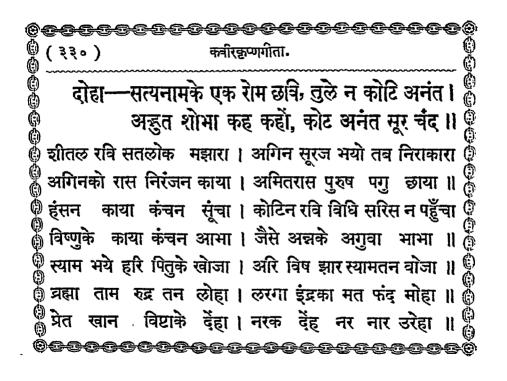


(३२६) कवीरक्रणगीता. पग लागे । परसत चरण सकल भ्रम भागे ॥ देव थरहर । अजहरवचन । अजहर सबे कहे हरसेती। सबे शरण गहो यही सुमेती॥ दोहा-नह्या विष्णु महेश्वर, सबन कृष्ण समुझाय । फिर यह अवसर कहां मिले, गहो कबीरके पांव ॥ हर्षत अजहर लीन्हो पाना । नारि पुरुष एक मत निरवाना ॥ चरणामृत सबहिन कहँ दीन्हा । सबन माग प्रीतसो लीन्हा ॥ । कवीरवचन । सुनो त्रियदेवा। आपन अंस रचहु जग भेवा॥

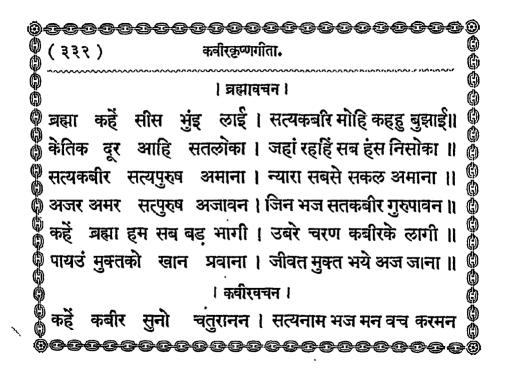
कवीरक्रणगीता. ठीका पुरे तुम लोक सिधावो । पितुके सेवा अंस बैठावो ॥ सद्भुरु भक्ति हृदय महँ राखहु । मात पिता सेवा सत भाषहु ॥ माता पिता सबे भल होई । सहुरु सेय तरे कुल दोई ।। काम कोघ आपा घट काढव । सेवा साध सखा घर बाढव ॥ कहें कबीर सत्यकी चाली। तरे शिष्य लागे गुरु नाली।। सत्य कहे होय कारज जिवके । सत्य गहे मिलिहै निज पियके ॥ दोहा-सत्य ताहि कंहँ कहिये, रती न मिध्या जाहि । कहें कवीर कृष्णगीता, विष्णु व्यास चित चाह ॥ कहें कबीर सुनो सब कोई। भाषों काया प्रचे सोई।।

(३२४) कवीरकृष्णगीता. काया सो जो अमर ना रहई । जिवरा योनी नहिं औतरई ।। षोडश शशिसोहंसन भाला । चिकत चंद है कलाग्रिममाला ॥ मनिमाली कंठ माल विराजे । कोटिन रवि शशि नख छबि छाजे छत्र सिंहासन जगमग जोती । हंस खान शशि तिहुँ पुर पोती ॥ अमरलोक सो अम्मर हंसा। अमृतफल भोजन निहसंसा।। अमर चीर तन विमल विराजे । देंह सुवास घाणमें छाजे ॥ श्वेत भंवर पंकज विन नाला । अमी सिंधुतट कुंज रिसाला ॥ 🖔 कमोदनि विमल श्वेत उजियारी । मन पृथ्वी तन फल फुलवारी ॥ विमल सुगंध विटप फलपाता । पक्षी केलिकरें रंग राता ।।

कवीरक्रणगीता. (३२९) त्रिष्टि विहंगम मय कर जूहा । चंद्र उद्दै फल फूल विहसहिं हंस महा रस खानी । दसनपांति मन जगमग वाणी ॥ काया अमर सुगंघ अंजोरा । योजन शत सुवास घनघोरा ।। हंस काया अस अम्मरलोका । परस पुरुष पद हंस निसोका ॥ यह शोभा संक्षेप बखाना । अद्भुत शोभा अकह अंमाना ॥ लेय परवाना । निराकारका मर्दन माना सो पावे यह काया भाई। कर्हे कबीर जिन मौहि छौलाई।। कोट सूर्य छवि हंसन काया। बहुत अंजोर संक्षेप सुनाया॥



कवीरकृष्णगीता. चौरासी लक्ष योनी खानी । नरककी नार सो अंकुर जानी ॥ कोइ एक हंस अंकुरी होई। अंकुर पावहिं अमिष न जोई॥ अंक्री जो मजे सतनामा | तो सब सुधरे वाको कामा ॥ सत्यनाम कबीर बखाना। कहें जनार्दन वचन प्रवाना॥ । विष्णुवचन । कहें विष्णु सुन नारद व्यासा । नाम कबीर भजो सुखरासा ॥ दोहा--सकल जीव गायत्री, वांध निरंजन राय । सत्यक्बीर सो रक्षक, कहें कृष्ण समुझाय ॥



कवीरकृष्णगीता. एक आस सत्यनामकी करिये । और आस सकलो परिहरिये ॥ सत्यनामते अधिक न कोई। सत्यनाम भज अविचल होई॥ अब तुम सुनहू लोक जत दूरी । गुरु ज्ञानीको हाल हजूरी ॥ मुखसे बाहर । सत्यलोक अमरपुर ठाहर ॥ सात तबक नभ सात पताला । चौदह यम बिच जीव बिहाला ॥ चौद्ह तबक चौद्ह यम ईशा । यमकी सेना रोम तन दीसा ॥ सतनाम कबीरा । गज रथ यम सैना घर चीरा ॥ पृथ्वी उर्घ योजन लक्ष मेघा। तासु षुन नभतर विषेघा॥ रिव उर्घ लक्ष योजन है चंदा । चंद उर्घ तन नखत अनंदा ॥

(३३४) कवीरकृष्णगीता. तेइस लक्ष योजन उर्घ अपक्षरा । तेहि तत उर्ध सुरासन ठहरा ॥ सूर आस तत उर्ध यम साला । तेहि तत उर्ध निरंजन काला ॥ दोहा-ताके आगे तत दूरी, महाक्षेत्र सो नारि । तेहि तत मानसरोवर जंहँ, कामनी रचि धमारि ॥ ताके आगे सहज सो दीपा। योगजीतके दीप सनीपा॥ सबे दीप अग्र महकाई। घांण सुगंध सकल रह छाई।। पुरुषलोक जाय सो हंसा। ताको तरे इकोतर बंसा । ब्रह्मावचन । पगु धारा । कर जोरे भाभी स्तुति सारा ॥

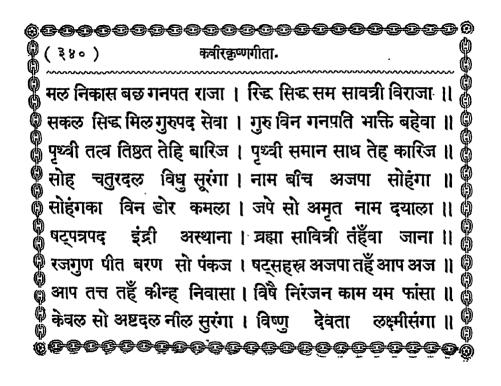
कवीरकृष्णगीता. कहें ब्रह्मा धन्य कृष्ण व्यासा । जिन कियो प्रगट कबीर प्रकाशा कहें अज सत्यकबीर संवादी। हम सब शिशु कीतम लघुवादी॥ अन चीन्हे हम बाद बहु कीन्हा । बख्सहु सत्यकबीर प्रवीना ॥ अब तो श्वरण तुम्हारी आये। मम अवगुण क्षमा प्रभु लाये॥ । कवीरवचन । कहें कबीर सुनो अज वाणी। मात पिता शिशु घट नहिं मानी जो हम क्रोध करो तुव सबपर । को तोहि राख सके अज हरिहर 🗣 तुन तीनोंके पितु महकाला। निराकार सब करे विहाला॥ हम तुम सबको प्रथम चेतावा । गहो शरण होय जिव मुक्तावा ॥

कवीरकृष्णगीता. (३३६) तब तुम गर्भवासमहँ भूले । ताते फिर २ योनी झूले ।। जब सिर टेकेड ऋषिदेव कारा । तब कबीरके शरण पवेरा ॥ कबीरके नाम शरण प्रतापा। उल्रटिहें जाय कालिहें चांपा।। कहें कबीर सुनह तुम चित दे । हृदय कबीर नाम जप हितके ॥ जो जेहि नाम सुमरे चितलाई । हृदय कबीर नाम लौलाई ॥ दोहा-निशि दिन सुमरहु नाम मम, यमते रहहु निसंक। शब्द निरख पंथ गवनहु, ग्ररु पितु जेहि न कलंका। चरण चृम अज सीस चढाये । तत्क्षण रुद्र जो गमन लाये ॥ महादेव विनय बहूता। कहहु कबीर योग सतमता।।

कवीरकृष्णगीता. केतिक स्वास चले दिन राती । किम घर बरे तेल विन वाती ॥ केते हांथ धरती आकाशा । कौन देवको कहां निवासा ॥ केतिक नदी केतिक गिरवरतन । कौन सिंधुको गाय कहावन ॥ कौन अमावस कौन परीवा । कौन पुन्नवा कौन ग्रह धरिवा ॥ केतिक रुधिर कायामहँ आही । गगन ओंकार फेर कित आही ॥ पांच तत्तहें काहे नामा । और पचीस नाम पंच बामा ॥ काया माहिं के अंस हैं ताता । सोकहु के अंस आहिं तन माता॥ कौन तत्त केहि जोनी साजा । योग भलाके भोगे राजा ॥ मरे जरे तन क्षारा । परम पुरुष होय तनते न्यारा ॥

('३३८)' कवीरकृष्णगीता. कौन देंह धरि नरक भागाई। को है सेवक लेय मिलाई।। चौदह भुवनं कायामहँ काही । कहिये तन प्रचे मोहि पांही ।। पांच सत्तका रंग कौन है। विन मांदिरका है सो कौन है।। कौन योगीको सिंगी बजावे । कौन आसन कौन विभूत रमावे।। काहेका डिन्बी काहेका ढकना । कौन बेगाना को है अपना ॥ कौनसो चावल कौनसो दाली । कौनसी अगिन जात किह घाली॥ कौन कापेल को देवता आही । केतिक अजपा कहां जपाही ॥ विनंती कर शिव पूछाईं भेऊ । कहें कबीर सुनहु सब कोऊ ॥ 🤻 योग यज्ञ तप तीर्थ कर्म काटा । यह मत चिल जिव बारह बाटा ॥

कवीरकृष्णगीता. सार भक्त बिन तरे न कोई। चहुं युग भक्ति श्रेष्ठ गुरु सोई॥ कहें कबीर सुन प्रेतके ईशा । गहहु देव पथ तारहु सीसा ॥ तुम सब छीन्हं पान परवाना । भक्ति चावल चित तज मम कामा एक २ अंश देंहते काढहु । तेहि पितु सेव राख पितु बाढहु ।। दोहा-अपनी अकित दुतिअन, सिरजा तीनो देव। बनिजा तीनो सहुरु मिले, क्रीतम देव पितु सेव ॥ छै सौ बीस सहस्र इकईसा । येतिक स्वास दिवस निशि ईसा ॥ मन पवनाको धाधियो तारी । विना तेल औ दीपक वारी ॥ साढे तिन कर क्षीनी जंहँ हांथा । आंगुर चार अकाशको माथा ॥



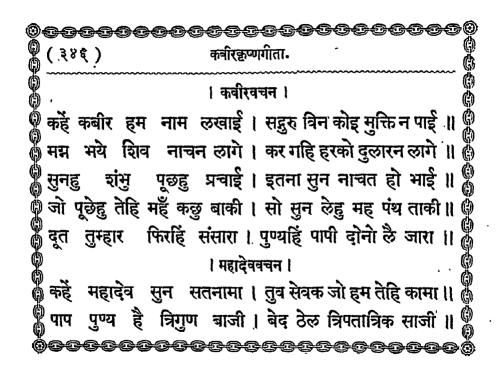
क्वीरक्रणगीता. सब गुण षट् सहस्र अजपा जप । सत्यनाम सम नहिं कोइ तप ॥ वाय तत्त तहँ गांठ बंधानी । नाभचक्र पवना घर जानी ॥ कीतम घर तन पवन सोहंगा । आद अमर घर सद्गुरु संगा जाके बस सोहंग है भाई। सोई सत्यकबीर गोसांई दोहा-अाद पवन सोहंग है, कीतम वायु तत पांच । जहांते सोहंग ऊपजा, कहें कबीर सो सांच ॥ शिव शारदा दस हियकमला । स्फाटिक वर्ण अति सोहे पदअमला तत्त वडवानल चितंगी । हृदय दरश गुरु सहुरु संगी ॥ अजपा तहँ होई । शिव सक्ती गुरु शिष्य घर सोई ॥

कवीरकृष्णगीता. 382) द्वादसदल पंकज कंठ अधर । तत्त अकाश त्रिगुण मनस धर ।। अत्र परम शिव दस द्वादसी ।स्वांतकी लक्ष्मी महाविष्णु संगवसी एक सहस्र अजपा तहँ होई । संब्ज रंग बरते पद सोई ॥ सब्ज स्थाम जेठ लघु भाई । सब्ज रिस्वाम लखि जाई ॥ कंठ केवल दल षोडश पूरा । तहां वस्तु जिव सकल रंग सूरा ॥ अजपा छै सो नाम विहंगा। सुरत निरत सो सद्गुरु संगा।। भंवर गुफा दोय दल पद सोहा । परनहंस बसें नृप निरमोहा ॥ एक निरमोह सुरत सतनामा । दुतिय निरमोह कबीर शिष्य रामा स्याम लालमी रंग सोहाई। अजपा सहस कबीर लखाई॥

कवीरकृष्णगीता. सहस कमलदल झिलमिल झलके। मन पवना झिर मानसरोवरसै । सुरत कमलपर सद्भुर वासा । एक सहस अजपा प्रकाशा ॥ गुप्त गुहिंज निरगुण सरबादी । शब्दसरूप सुरत संग स्वादी ॥ बत्तिस पद्म पत्र गुण गाना । मुखा कंवल गुरु दरशपयाना ॥ दल असंख्यको करबलसो भूला । जेहि २ विन शून्य २ अस्थूला ॥ असंख्य दल कंत्रलके देखहु आगे। सतसाहेब दसमे बडभागे ॥ सतसाहेब सतनाम कबीरा । कहें कबीर हम सकल शरीरा ॥ हंस हमार सकल मत ताते । जीवघातके निकट न जाते ॥ 🕲 कहें कबीर सुनो वृषवासन । काया लखहु देवन जहँ आसन ॥

388) कवीरकृष्णगीता. अट्ट कोट पर्वत तंहँहाडा । नौ सौ नदी समानी जेहि भांडा।। ज्ञानहीन जिव रात अमावस ।पूनम चांद गृह जगत गुरु आवस।। गुरु सद्गुरु कबीर मिल तरना । कल्हा सवांरहु रतन सुबरणा ॥ सवा हांथ नभको गगन घर । बरणहु एक २ सुन संकर ॥ पृथ्वी आप तेज वायु अकाशा । यही नाम पंच तत्व प्रकाशा ॥ और सुनहु पांचहुके भ्राजा । ताते जीवन पोत दो मरजा ॥ पृथ्वीतत्वकी सुनहु प्रकृती। गुरु प्रताप कहुँ संतन जीती॥ असत मेद नारि तुच रोमा । बंधु पंच यह पृथ्वी तत भोमा ॥ 🦉 लाल प्रसेव सुकल सोम मुत्रं । पंच बंधु वह आपकी धुत्रं ॥

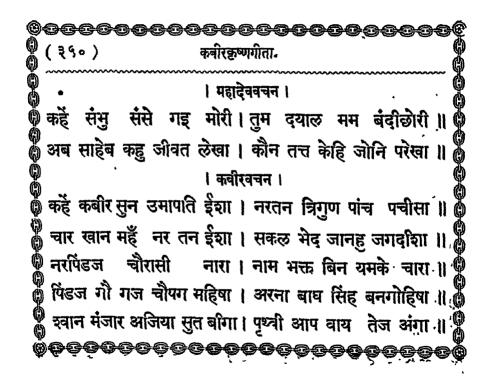
कवीरकृष्णगीता. वायु तत्तकी भारजा बोली। लिये पवन फिरे उडन खटोली।। गावन धावन बोलन अगोचर । अटवा नतसी प्राणन दूसर ॥ क्रीतम वायु पंचतत्त संग तेहि बंधू। तेहि मुख बैन बोले भज नंदू ॥ नासिका वाट आवे जाई। रमता राम स्थिर न रहाई ॥ रिथर पुरुष सत्यनाम कबीरा । मरे न जरे न धरे शारीरा ।। तेज तत्तकी बंघु कहाई। तृषा क्षुघा आलस जमुहाई॥ निद्रा मिल पांचो तजे दासी । नाम भक्त विन यमकी फांसी ॥ लुउजा शंका हर्ष शोक मोहा । यह अकाश बंधु संदोहा ।। कहें कबीर सांचा मोहि भावे । सांचा सो जो सहुरु गुण गावे ॥



कवीरक्रणगीता. पाप पुण्य है यमके खेती। दया सत्त प्रमारथ सुनेती॥ हमहु चले कुपंथ डर ताता । तापर प्रबल अष्टंगीमाता ॥ अपने पुत्रहिं जो धर खाई। आनहिं कस छोडे भाई॥ पितु आज्ञा हम बहु जित्र चांपा । परे आन हमरे सिरपापा ॥ ताते शरण तुम्हारी आये। काल पिताते आप बचाये।। । कवारेवचन । कहें कबीर भल होय सब केरा। जरा मरण सतनाम निवेरा॥ अब तुम जात मातु तन बूझहु । तन स्वासा स्वासा गम सुझहु ॥ एकको लोहु एककों पानी । दोय मिल सिरजा विदेहानिसानी

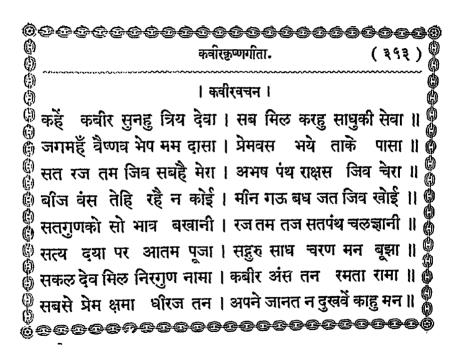
(३४८) कवीरक्रणगीता. निहअक्षर निहतत्त्रसो निर्गुण । अमी नीर विन कुंभक सर्गुण ॥ सद्भुरु शब्दसे लागी धरनी। उधे सुरत सोहंग परवनी॥ पितुके बुंदसो हाड़ औ गूदा । मांस रक्त औ मेंद ओज़दा ॥ पुन पितु अंस रुधिर तन तबलों । तबलहि तन श्रोनित जिव जबलों चार अंस तनमहँ पितुकेरा। पांच अंस माता बन घेरा।। एक अधिक माता गुण भयऊ । चित देखो षन सतगुण कियऊ ॥ पौन आगे परा चल पाछे। घरियामाहि तन कछनी कांछे।। पिता पौन ले सांचहि ढारी। तब जिव परा परातम नारी।। आतम परमातम जिव संगा । नांद बिंदु मिलना मत रंगा ॥

कवीरक्रणगीता. अब जो अंस सुनहु शिव आही । जे जननी सो जो इन होय खाही जेहि जननी तन पांच प्रकृती । रोम चाम नख दंत भगोती ॥ जत द्वार तन तत भग जानी । आद लिंग सोहंग बखानी ॥ आठो पहर करे रित सोई । आवागवन महा दुख होई ॥ जबलग अमरलोक नहिं पहुँचे । आवागौन भग भोगिविगूचे ॥ भक्त करे तो बारहि नीकी। भक्त बिहून सकल जग फीकी। क्रीतम निरंजन पित् मम आहीं । तनके मात पिता यह साही ॥ जीव सब सत्यनामके आहीं । सत्यकबीर सतनाम लखाहीं ॥

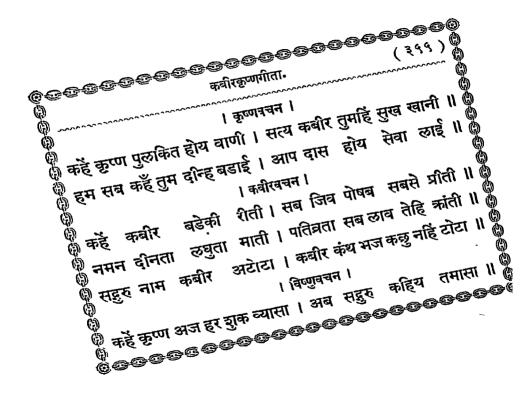


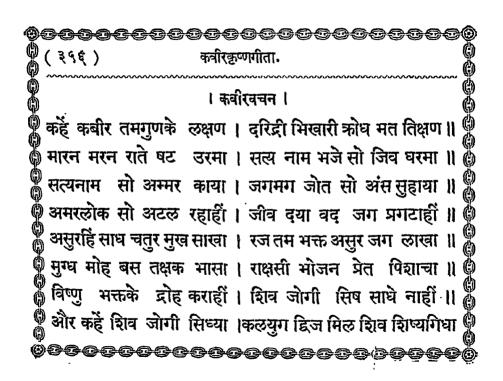
कवीरक्रणगीता. त्रिगुण मेराय सकल जिव दीन्हा । सत्गुण रज तम भासे चीन्हां ॥ रजगुण बहु छल क्षूद्र पखंडा । रोग वियोग भोग यमदंडा ॥ मिध्या बोल सोग संतापा। छुतिहं छूत जिव छूतिहं थापा॥ वैष्ण वसे नहिं नवहिं अभागे । वैष्णनव असंखहि दिज नागे ॥ तिनहु मागह वड वैष्णो बखाना । जीव दया कथि जग पतियाना ॥ बहुर युद्ध महाभारथ करावा । तब करता हरि घका दियावा ॥ कृष्ण सीस जब वसे कबीरा । तबलग राम कृष्ण मत धीरा ॥ अधा परवेसा। तब मे कृष्ण कालकर भेसा॥

कवीरकृष्णगीता. (३५२) —जबलग जाकर नाम लिय, तव लहि तेह यह सोय। कहें कवीर मोहि सुमेर एकमत सब सुख लोय।। पांच तीनकी काया कांची। अमरपुरी अमर तन सांची॥ सत्गुण सत्यकबीरके आसा । निरंजन अद्या रज तम फांसा ॥ जैसे तुलसी मांमे राई। औं गुर राम तुलसी सार लाई॥ रज तम गुंमा भांग बखाना । भांग महादेव अज गुमा जाना ॥ तुलसी विष्णु अंस विनाशी । औ अविनाशी कबीर सुखराशी ॥ दोहा-कहें महादेव विष्णु अज, सुन सतनाम कवीर । निराकारके डहनसे, राख लेडू ग्रह पीर ॥



398) कवीरकृष्णगीता. कौनह जीव जंतु न दुखावें । समदृष्टी निज सबपर भावे ॥ काहूके तन मांस न खाई | मीन मास मद निकट न जाई ॥ घृत मिष्टान्न पान फुळवारी । यह सब सात्वकी भक्ष विचारी ॥ अभ्यागत आवे कोइ बरणा । सबकर पोषन सब मिल करना ॥ सात्वकी चाल मुक्त नर नारी । रज तम भौ सब भ्रम संसारी ॥ भक्षित भाव गलतान लिय नामा। परनारी द्रव्य अपंथ कर कामा ॥ कच्छ मच्छ सकलो जिवजंता । सब जिव परा क्षमा शुभ संता ॥ तीर्थ वत तप त्रिगुण जोगा । बनोवास अधर्म तज भोगा ॥ भोग सात्वकी भजन सतनामा । इच्छा दशा समर्थ निहकामा ॥

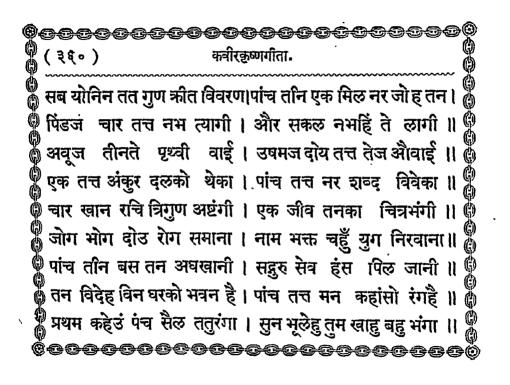




क्वीरकृष्णगीता. मीन मास मद भष गिन्द रवाना । मीन मास मद है अघ खाना ॥ चोरी और करींहं बटपारी। झूठा लंपट चुगल जुवारी ॥ षट उर मास रसके संगी । रज तम शिष कुपंथ अमंगी ॥ छीन सत्गुण रज तम बहुताई । यहि जीवको डर विचल न जाई ॥ नहिं विचलहिं सतगुरुजेहि माहीं। सत्त चीन्ह रज तम मिन डाही ॥ सत्तिहिं दिन २ बाढ सवाई । गुरु साध विमुख यम खाई ॥ दिना चार किल श्रेष्ठ मलेच्छा । झष भखिंहं गौ भखिंहं अभक्षा ॥ जंहें लग अवगुण रज तम जानो। सतगुण रज तम चाल बखानो ॥ रज तम अधार ते वैष्णव नाहीं । वैष्णव सतकबीर सतोगुणमाहीं ।।

(३५८) कवीरकृष्णगीता. हमरे दासिहं जो कोइ मिनहै । तेहि सुख होय यम निहं दहिहै ॥ एक २ रोम वैष्णव सतोगुण । रज तम देवी पंथहे दुर्जन ॥ यह सब तन वैष्णव तन द्जा। रज तम देवी पंथ अरूझा॥ जो नहिं संतिह माने भाई । झूठिहं थाप नरकमें जाई ॥ जन्मे मरे सो कीतम झूठा । अजर स्वास जिव संतन दूठा ॥ सत्यकबरि अजर अविनाशी। सत्यकबीर जो करे हुलासी॥ दुलह कबीर अमर सुखरासी । दुलहिन जीव अमरघरवासी ॥ देंह धरे भौ जिव चकलागा । खसम विसार जार मन बागा ॥ धगरा मनमत त्रिगुण निरंजन । खसम कबीर काल सिरभंजन ॥

कवीरकृष्णगीता. (३९९) जै जै स्वामी सत्य कबीरं। स्तुति करें त्रिय देव सो धीरं॥ तीनो कहे हम तरे तुव दाया । मुक्त परवाना कबीर सिरवाया ॥ अगले हंसन वाट चिन्हाई । सर्व शास्त्र दाया फरमाई ॥ । कृष्णवचन । कहें कृष्ण यह निश्चय जानी । मुक्ति कबीर चरण लपटानी ॥ । कवीरवचन । कहें कबीर सुनो सब कोई। सांची भक्ति विना गत खोई॥ सांच भक्ति गुरु साघ विस्वासा । भैरो भूत देवी यमफांसा ॥ कहें कबीर सुन वृषभ सवारी । पूछेहु प्रथम सो लेहु निरवारी ॥



कवीरकृष्णगीता. योगी सोहंग तन सिंगी वजावे । सहज आसन तन बिभूत रमावे ॥ दृदताई डिन्त्री अमीगत ढपना । सबे बिगाना सद्गुरु अपना ॥ चावल प्रीत चेतन दिल दाला । ब्रह्म अगिन कमल परजाला ॥ निरगुण नाम निमक सो सब रस । तेज पात विश्वास सो अदरख ॥ प्रेम सुचित सो घीय जीवन । काया क्षीर मथे कोइ गुरुजन ॥ पारस पान प्रसाद चढाये । अमी नीर कबीर पियाये ।। द्या दही गऊ घृत सुच दूधा । खोवा काम कोघ घर सोधा ॥ परस प्रसाद विरान सुरत सेवक । शुभ आशिष देहिं गुरुदेवक ॥ अजर अमर घर वर मिल आशिष। पिया रूप रस जगमें अतिसुख ॥

(३६२) क्वीरक्रणगीता. पिय हिय पैठि सेवककेरा । जन्म मरनका करे भया निवेरा सो कस हूवा । पांच पचीस त्रिगुन तन जूवा ।। अजर अमर अविचल सो काया। अमर लोक सबे सुख पाया॥ कहें कबीर छूटेउ सब संसा । तरे इकोतर पिछले वंसा ॥ सद्भुर शरण हाथिगत पुरुषा । खसम कबीरहिं छखेन न मुखी ॥ कहें कबीर तन भुवन चतुंर्दश । चौदह संग चालक जीव सरबस ॥ चौदह संग जब बाहर होई। सत कहे सद्गुरु शरण समोई॥ अजरलोक पगु अधर ब़खाना । निज पगु अरध बितल परजाना ॥ तीन लोक उरध तेह ताको । लोक तलातल जंघ अस्थापो ॥

कवीरक्रणगीता. लोक माहि तल इंदुकी वारी । मलस्थान रसातल खारी कटि पताललोक विस्तारा । सात दीप नभ अधर उचारा ॥ इंद्र सप्त दीप भुवलोक नाभी स्थानी। नाभके वाम दिहने भै जानी ॥ स्वर्गलोक हृद्य अस्थापी । अमर लोक तन दोउ मुज दापी॥ कंठ स्थान आहि जनलोका । है पतलोक लिलाट विसोका ॥ कीतम सत्यलोक नर माथा । आद सतलोक अमरपुर ताका ॥ कुह्म अंगुष्ठ घुट्टी पगु पाही । नाडि सकल सेस परवाही ॥ निज मुख देखहु तीनो लोका । रसना उर्घ सरम पंथ मोका ॥ रसना मृत्युलोक कोई थिर नाहीं ।जिंदा जग प्रगट रहा कोइ न माही

कवीरकृष्णगीता. (३३६) रसना अरघ पतालके सो साता । अष्ट घात पिंजरा जिवराता ॥ प्रबल मंजारा । सत्यनाम विन तेहि दे भारा ॥ निराकार मंजारी खोटी । तीन लोक जिव खायासे घोटी॥ अष्ट्रंगी कहें कबीर जिन सुमरो मोही । यम सिर भंजन बचायेउ वोही॥ चौदह यम तन जीवहिं घेरा। चौदह यमका करों निवेरा ॥ प्रथमिंहं धर्म करे यम घाता । धर्मराय यम इस मन माता ॥ दुतिय काम त्रितय यम कोघा । चौथे लोभ पंचये भ्रम सोघा ॥ छठयें यम लक्ष बुध विकारा । सतयें परधन हर सत हारा !। अठयें अहंकार नौमे मोहा। दसयें दस इंद्री सुख जोहा॥

कवीरकृष्णगीता. आप तन पोषा। अभ्यागत तज खाय न मोषा।। द्वादसपै लेय विदवास घाती । त्रियदस तृष्णा लोम जमाती ॥ चतुर्दश चिंता तन वन आगी । चिंतहि डाह कोई बैरागी ॥ चिंता सोइ जो सद्गुरु सेवा। सद्गुरु रेसब देवनकर देवा॥ । कृष्णवचंन । निरने निरवारा । सत्यकबीर भौ हम सब मगन कबीरके पाछे । हमार निबाह कबीरकृत आ चारों युग कबीर मोहि राखा। कहें कृष्ण व्यास सन 🖗 पूछिहं तारा अकाश घर स्वासी । कहें सहुरु

